मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 58 | अंक : 8 | फरवरी, 2018 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

प्रयास–2018 परीक्षा परिणाम उन्नयन विशेषांक

निदेशालय परिसर में 67वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 58 | अंक : 8 | फाल्गुन २०७४ | फरवरी, 2018

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

वरिष्ठ सम्पादक
जयपाल सिंह राठी

सम्पादक
गोमाराम जीनगर
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

अपनों से अपनी बात

- राष्ट्रधर्म का भाव विकसित करें 4

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- परीक्षा : जीवन की तैयारी 5

आलेख

- प्रयास-2018 बोर्ड परीक्षा परिणाम में गुणात्मक सुधार हेतु एक पुरजोर पहल **सुभाष माचरा** 7
- निर्देशाँक ज्यामिति : **जयसिंह चौहान** 9
- आधार-लम्ब-कर्ण : **राकेश कुमार** 10
- रसायन विज्ञान : **विनीत ढाका** 11
- त्रिकोणमिति : **दिनेश कुलहरी** 12
- Clause : **डॉ. रामगोपाल शर्मा** 13
- आरेखों के माध्यम से प्रश्नोत्तर एवं व्याख्या : **अमित कुमार मिश्रा** 15
- कुछ पादपों/फलों के वैज्ञानिक नाम याद रखने की ट्रिक्स : **रोहिताश भड़िया** 16
- मानव नेत्र के दोष (निकट व दूर दृष्टि दोष) **दिनेश कुलहरी** 16
- Golden Rays : Poetry **विनोद कुमार जांदू** 17
- त्रुटि निवारण : **महेन्द्र कुमार शर्मा** 17
- महर्षि दयानन्द सरस्वती **सत्यनारायण सोनी** 18
- 69वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह **मदन मोहन मोदी** 19
- महान् शिक्षाविद्-डॉ. जाकिर हुसैन **कमल नारायण पारीक** 20
- एकात्म मानववाद : **अमित शर्मा** 21
- प्राचीन भारत और विज्ञान **दीपक जोशी** 22
- स्काउटिंग : सेवा से राष्ट्र साधना **विकास चन्द्र 'भारू'** 30
- ग्राहक शिकायत हेतु राष्ट्रीय आवास बैंक का शिकायत निवारण तंत्र **विशाल गोयल** 34
- कक्षा-XII अंग्रेजी विषय तैयारी **रमेशचन्द्र दाधीच** 35
- बालपन के संस्कारों का महत्त्व **राजेश कुमार गोयल** 37
- How To Identify Tenses From Verb Phrases : **J.C. Paliwal** 38
- शिक्षा को रंगों से रुचिपूर्ण बनाती है-शिक्षिका रेहाना चिश्ती **दिनेश विजयवर्गीय** 39
- मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2017 : **मकान सिंह चौहान** 40

मासिक गीत

- भारत माँ को विश्व गुरु के.... (साभार-'एकं सत्' स्मारिका) 33

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र 25
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 29
- शिविरा पञ्चाङ्ग (फरवरी, 2018) 29
- शाला प्रांगण से 45
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 24

पुस्तक समीक्षा 42-44

- शब्द कभी बांझ नहीं होते
  कवि : फारूक आफरीदी
  समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
- जल और समाज
  लेखक : डॉ. ब्रजरतन जोशी
  समीक्षक : **डॉ. नितिन गोयल**
- सुनो मुक्तिबोध एवं अन्य कविताएँ
  लेखक : नवनीत पाण्डे
  समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**

मुख्य आवरण :

नारायणदास जीनगर, बीकानेर, मो. 9414142641

सत्यमेव जयते

वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

अपनों से अपनी बात

राष्ट्रधर्म का भाव विकसित करें

भगवान भास्कर के उत्तरायण प्रवेश के बाद शीत का प्रकोप शनैः शनैः कम हो गया। विद्या की अधिष्ठात्री देवी माता सरस्वती की आराधना का पर्व 22 जनवरी 'बसन्त पंचमी' के अवसर पर हम सभी ने विद्यालयों में उत्सव मनाया और विद्यार्थियों के सुखद भविष्य के लिए कामना करते हुए विद्या के उत्कृष्ट स्वरूप को प्राप्त करने का संकल्प लिया।

माता सरस्वती की कृपा से राजस्थान में निरन्तर अभिवृद्ध होते परीक्षा परिणाम में और प्रगति हो तथा इस वर्ष यह शत-प्रतिशत रहे, यह हम सभी का सामूहिक प्रयास हो। फरवरी माह अवधि की दृष्टि से भले ही छोटा हो मगर खेतों में लहलहाती फसलें, खिलखिलाती सरसों तथा पतझड़ के बाद अंकुरित होती कोंपलें हमारे मन मस्तिष्क में नई ऊर्जा भरे, जिससे हम नवसृजन के संकल्प के साथ आगे बढ़ें और राजस्थान के शैक्षिक विकास में हमारा बेहतर अवदान दे सकें।

आप सभी को विदित है मार्च माह में बोर्ड की परीक्षाएँ शुरू हो रही हैं। सम्पूर्ण शिक्षा विभाग के प्रत्यक्ष मूल्यांकन का मुख्य आधार सामान्यतः बोर्ड परीक्षा परिणाम ही रहता है। इसलिए फरवरी माह में हम अतिरिक्त कक्षाएँ लगाकर विद्यार्थियों को अधिक लाभान्वित करें। उन्हें परीक्षा उपयोगी सामग्री का अधिकतम सदुपयोग करना सिखाएँ। उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा चूरू द्वारा इस संदर्भ में 'मिशन 100 शेखावाटी' नाम से विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम उन्नयन के लिए जो कार्यक्रम चलाया गया वह सम्पूर्ण राजस्थान में शुरू होने से विद्यार्थियों को वास्तविक लाभ प्राप्त हो सकेगा और आज की गई मेहनत हमें जीवनभर सुकून प्रदान करेगी।

इसी माह भगवान शिव की आराधना का महाशिवरात्रि पर्व है, संयम, एकाग्रता और तपस्या की त्रिवेणी में स्नान करते हुए हम समस्त शक्तियों को आत्मसात करें तथा परीक्षा रूपी रण में विजय हासिल करें।

भारतीय स्वाभिमान के आदर्श स्वामी दयानन्द सरस्वती की जयन्ती 10 फरवरी को है। स्वशिक्षा, स्वसंस्कृति, स्वधर्म और स्वराष्ट्र के उद्घोष का शंखनाद करने वाले पुण्य आत्मा को शत-शत नमन करते हुए उनके पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लें।

19 फरवरी को 'हिन्दवा सूरज' छत्रपति शिवाजी की जयन्ती है। समस्त शिक्षक वृन्द समर्थ गुरु रामदास से प्रेरणा प्राप्त कर विद्यार्थियों में वीर शिवा तैयार करें और समस्त माताएँ जीजाबाई की तरह विद्यार्थियों में राष्ट्रधर्म का भाव विकसित करें।

समग्र एकात्मवाद के जनक पं. दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर हम संकल्पित हों कि मानव मात्र की भलाई के लिए कार्य करें।

इस सत्र की अन्तिम 'अभिभावक शिक्षक बैठक' 15 फरवरी को है। समस्त अभिभावकों से आग्रह है कि अपने बच्चों की समेकित प्रगति का अवलोकन शिक्षकों के पास बैठकर प्राप्त करें, भविष्य की योजनाओं का निर्माण करें तथा राज्य सरकार के शिक्षा के उन्नयन के प्रयासों को सफल बनावें।

एक बार पुनः आग्रह है कि पढ़ाई का महत्त्वपूर्ण समय है अतः धीर गम्भीर वातावरण में परीक्षोपयोगी तथा परिणामोन्मुखी अध्ययन करवावें।

धन्यवाद।

(प्रो. वासुदेव देवनानी)
शिक्षामंत्री

"मार्च माह में बोर्ड की परीक्षाएँ शुरू हो रही हैं। सम्पूर्ण शिक्षा विभाग के प्रत्यक्ष मूल्यांकन का मुख्य आधार सामान्यतः बोर्ड परीक्षा परिणाम ही रहता है। इसलिए फरवरी माह में हम अतिरिक्त कक्षाएँ लगाकर विद्यार्थियों को अधिक लाभान्वित करें। उन्हें परीक्षा उपयोगी सामग्री का अधिकतम सदुपयोग करना सिखाएँ।"

सत्यमेव जयते

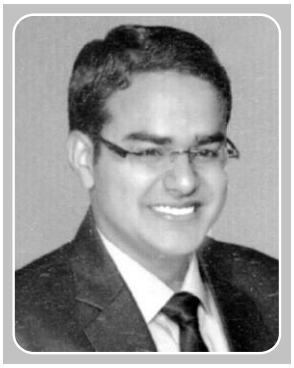

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

परीक्षा : जीवन की तैयारी

सत्रपर्यन्त अपने ज्ञान और कौशल से विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में प्रयासरत शिक्षकों के कठिन परिश्रम का सार्थक परिणाम आने का समय आ गया है। मार्च माह में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक कक्षाओं की बोर्ड परीक्षा है। परीक्षा शब्द में ही चुनौती समाहित होती है। विद्यार्थी के साथ शिक्षक और शाला परिवार पूर्ण समर्पित होकर कार्य करते हैं तब परीक्षा रूपी चुनौती में से श्रेष्ठतम परिणाम प्राप्त होते हैं।

राजकीय विद्यालयों के गत सत्र के परीक्षा परिणाम इस सत्र 2017-18 के लिए प्रेरक हैं। सत्र के आरम्भ से ही राजकीय विद्यालयों में विषय अध्यापकों के पदस्थापन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण से उत्कृष्ट परिणामों की आशा बनी है। जहाँ-जहाँ सुधार की आवश्यकता है वहाँ संस्थाप्रधान एक 'कोर टीम' बना कर उपचारात्मक शिक्षण, काठिन्य निवारण और अतिरिक्त कक्षाओं जैसे विशेष प्रयास करें। उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने की दिशा में उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा, चूरू द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं, अन्य भी इनसे प्रेरणा लें।

गत सत्र में 'प्रयास-2017' कक्षा 10 के परीक्षा परिणाम उन्नयन के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक सुधार हेतु विभागीय संकल्प का परिचायक रहा। वर्तमान सत्र में भी प्रयास-2018 के माध्यम से कक्षा 10 के कठिन माने जाने वाले विषय गणित, विज्ञान और अंग्रेजी को सरल तरीके से विद्यार्थियों तक पहुँचाना, बिना रटे, समझते हुए उच्चतम अंक लाने में सहयोग करना है।

पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) विद्यालयों में प्रभावी पर्यवेक्षण और समन्वयन से संस्थाप्रधानों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ श्रेष्ठ परिणामों की प्राप्ति में संबलन प्रदान करें।

विद्यालयों में अभिभावक शिक्षक परिषद् (PTA) की सत्र 2017-18 की पूर्णता में अंतिम अभिभावक शिक्षक बैठक (PTM) 15 फरवरी को आयोज्य है। इस बैठक में सामुदायिक सहभागिता के साथ विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास और विद्यालय हित के कार्यों के लिए पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ दृढ़ संकल्पित होकर कार्य किया जाए।

'मेरा विद्यालय-मेरा विद्यार्थी' की भावना सही अर्थों में विद्यालय को विद्या के आदर्श मंदिर के रूप में स्थापित करेगी। मेरे विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी उत्कृष्ट शैक्षिक वातावरण में सकारात्मकता के साथ श्रेष्ठतम उपलब्धि हासिल करे। प्रत्येक माता-पिता, अभिभावक और सच्चे शिक्षक का यही भाव रहता है। वर्तमान प्रतियोगी युग में परीक्षा भय और दबाव नहीं, जीवन की तैयारी है। सीखने और सिखाने की प्रक्रिया सतत चलती रहे। सर्वश्रेष्ठ परिणामों की शुभकामनाओं के साथ....।

(नथमल डिडेल)

"'मेरा विद्यालय-मेरा विद्यार्थी' की भावना सही अर्थों में विद्यालय को विद्या के आदर्श मंदिर के रूप में स्थापित करेगी। मेरे विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी उत्कृष्ट शैक्षिक वातावरण में सकारात्मकता के साथ श्रेष्ठतम उपलब्धि हासिल करे। प्रत्येक माता-पिता, अभिभावक और सच्चे शिक्षक का यही भाव रहता है। वर्तमान प्रतियोगी युग में परीक्षा भय और दबाव नहीं, जीवन की तैयारी है। सीखने और सिखाने की प्रक्रिया सतत चलती रहे।"

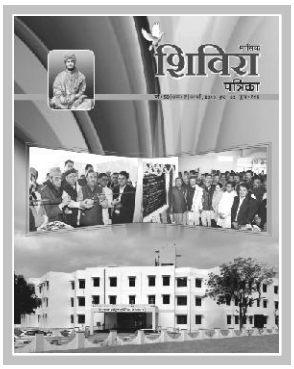

▼ चिन्तन

परोऽपि हितवान्बन्धुर्बन्धुरप्यहितः परः।
अहितो देहजो व्याधिर्हितमारण्यमौषधम्।।

भावार्थ–हित चाहने वाला पराया भी अपना है और अहित करने वाला अपना भी पराया है। रोग अपनी देह में पैदा होकर भी हानि पहुँचाता है और औषधि वन में पैदा होकर भी हमारा लाभ ही करती है।

- जनवरी, 2018 का 'शिविरा' पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ। इस माह में अनेक महापुरुषों की जयंतियाँ और उत्सव/पर्व आते हैं, वहीं युगपुरुषों की पुण्य तिथियाँ भी। स्वामी विवेकानंद एक महान कर्मयोगी, चिंतक और समाज सुधारक युवाशक्ति के लिए सदैव प्रेरणा स्रोत रहेंगे। नेताजी का आह्वान-''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' से आज भी देशभक्त का खून खौल जाता है। भारतरत्न भगवान दास का मत 'प्राचीन से वर्तमान की समस्याओं का हल निकल सकता है,' शाश्वत है। मकर संक्रान्ति महापर्व परिवर्तन का द्योतक, बसंत पंचमी का पर्व जीवन में एक नई ऊर्जा और सरसता लाता है। 'राजस्थान प्रशासनिक सेवा परीक्षा' लेख भावी जीवन और निर्देशन के लिए आवश्यक है। 'यस सर नहीं जय भारत' लेख मूल्य आधारित शिक्षा की ओर हमें आकृष्ट करता है जो आज के परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता है।

–महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद

- 'शिविरा' जनवरी, 2018 के अंक में प्रकाशित सुधा तैलंग का आलेख 'स्वामी विवेकानन्द युवा शक्ति के प्रणेता' को बार-बार पढ़ा। आलेख के माध्यम से लेखक ने सम्पूर्ण युवाओं को विशेष प्रेरणा दी है एवं युवा शक्ति में विचारों का संचार किया है, जो पाश्चात्य संस्कृति की ओर झुक रही युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के महत्त्व से अवगत कराने के लिए आवश्यक है। आलेख पठनीय एवं संग्रहणीय है। स्तरीय रचनाओं के लिए साधुवाद।

–शान्तिलाल सेठ, बांसवाड़ा

- माह जनवरी 2018 का अंक हाथ में आते ही आवरण पृष्ठ पर चित्रित वर्षों से आवश्यकता महसूस की जा रही नए निदेशालय के भवन के उद्घाटन समारोह की तस्वीरों ने मन को एक सुकून का अहसास कराया तथा मन में यह आशा भी प्रस्फुटित हुई कि अब निदेशालय स्तर से शैक्षिक मोनेटरिंग और अधिक प्रभावी होगी जिसका प्रत्यक्ष लाभ अंतिम छोर पर बैठे ग्रामीण एवं निर्धन छात्रों को प्राप्त हो सकेगा। अंक के 'दिशाकल्पः मेरा पृष्ठ' में निदेशक महोदय द्वारा बालिका शिक्षा प्रोत्साहन और महिला सशक्तीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता में होना बताया गया तथा साथ में ही यह भी बताया गया कि 'गार्गी पुरस्कार' प्राप्त करने वाली बालिकाओं की संख्या में तीन गुना वृद्धि हुई है, इस बात से मन-मस्तिष्क में उज्ज्वल नारी भविष्य का सुन्दर रेखाचित्र खिंच गया। जयपाल सिंह राठी का 'राजस्थान प्रशासनिक सेवाः प्रारम्भिक परीक्षा' नवयुवकों के समक्ष इस क्षेत्र में तैयारी करने के लिए एक सारगर्भित आलेख है जो उन्हें इस हेतु मार्गदर्शित करता है कि क्या और कैसे पढ़ना है। अंक शिक्षा जगत के लिए उपयोगी बन पड़ा है। अतः शिविरा टीम को साधुवाद।

–सरोज, राजसमन्द

- शिविरा पत्रिका का जनवरी 2018 का नववर्ष अंक आकर्षक लगा। माध्यमिक शिक्षा विभाग का प्रशासनिक भवन का लोकार्पण समारोह व भवन का शानदार चित्र मुख्याकर्षण रहा। बहुत लम्बे समय से भवन की आवश्यकता थी। श्रीमान निदेशक महोदय के सार्थक प्रयासों को साधुवाद। 'अपनों से अपनी बात' में माननीय शिक्षा मंत्रीजी ने इस वर्ष भी गुरुजनों व विद्यार्थियों से श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम की उम्मीद से निश्चित रूप से गुरुजनों को सार्थक प्रयास करने की प्रेरणा दी है। 'दिशाकल्प' में निदेशक जी द्वारा दी गई राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस पर राष्ट्र निर्माण में युवाओं की अहम तथा बालिका शिक्षा प्रोत्साहन व गार्गी पुरस्कार आदि विषयों पर सारगर्भित जानकारी उपयोगी रही। निदेशालय परिसर में मुख्य प्रशासनिक भवन के लोकार्पण की विस्तृत रिपोर्ट लोकार्पण कार्यक्रम को सजीव बना देती है। लोकार्पण कर्त्ताओं के विचार शिक्षा विभाग को नई दिशा देने वाले लगे। शिविरा टीम की रिपोर्टिंग पर बधाई। गणतंत्र दिवस पर प्रकाशित विशेष आलेख में भारतीय संविधान के संरचनात्मक ढांचे व सर्वहितकारी तथा लोककल्याणकारी स्वरूप पर सन्तोष होता है। विभिन्न महापुरुषों के चित्रों से आलेख अधिक स्तरीय बन पाया है। अन्य सभी स्थायी स्तंभ स्तरीय व पाठकोपयोगी है। सधन्यवाद।

–रामजीलाल घोड़ेला, लूणकरणसर

- शिविरा जन. 2018 अंक में शैक्षिक रचनाओं के लेखकों ने शिक्षकों से अपेक्षा करते हुए नव-विचार दिए हैं, इससे शिविरा का शैक्षिक उद्देश्य पूरा हो रहा है। संदीप जोशी का 'मूल्य आधारित शिक्षा' को साकार करने हेतु 'यस सर नहीं-जय भारत' सम्बोधन करने का सुझाव सराहनीय है। शिक्षकों को छात्र उपस्थिति, परस्पर वार्तालाप प्रारंभ करते समय, चलभाष पर 'हेलो' के स्थान पर जय भारत, वन्दे मातरम, जय हिन्द बोलने की आदत डाल कर पाश्चात्य संस्कृति की थोपी गई हजूरी की भाषा यस सर से मुक्ति मिल सकती है। महावीर सिंह राठौड़ का 'सूर्य उपासना का पर्व मकर संक्रांति' के सभी पक्षों एवं महत्त्व दर्शा कर पर्व की श्रेष्ठता सिद्ध की है। सुधा तैलंग ने इस माह के देश ही नहीं विदेशों में ज्ञान का परचम फहराने वाले 'स्वामी विवेकानन्द युवाशक्ति के प्रणेता' में युवा शक्ति के लिए प्रेरक विचार संजोए है। बहुत-बहुत साधुवाद।

–बजरंग प्रसाद मजेजी, सांपला, अजमेर

प्रयास-2018

बोर्ड परीक्षा परिणाम में गुणात्मक सुधार हेतु एक पुरजोर पहल

❒ सुभाष माचरा

विगत सत्र में राज्य स्तर पर पढ़ाई के परिष्कार की प्रवृत्ति का पथ ढूंढ़ने के प्रथम प्रयास के रूप में एक शैक्षिक नवाचार प्रयास-2017 के रूप में सामने आया था। इसका विशिष्ट लक्ष्य था, कक्षा 10 के अपेक्षाकृत कठिन माने जाने वाले विषयों गणित, विज्ञान एवं अंग्रेजी को सरल तरीके से विद्यार्थियों तक पहुँचाना, जिससे रटने की प्रवृत्ति से मुक्त होकर विद्यार्थी जटिल लगने वाली विषयवस्तु को आसानी से समझ सके और यह ज्ञान स्थाई हो सके। इसके लिए गत परीक्षाओं में गुणात्मक रूप से उत्कृष्ट परिणाम देने वाले शिक्षकों को यह गुरुत्तर दायित्व प्रदान किया गया। उत्प्रेरण हेतु जिला/मण्डल स्तर पर विषयवार कार्यशालाएँ आयोजित कर विचारोत्तेजक सत्र (ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन) चलाए गए। उनके द्वारा इन विषयों की परम्परागत शिक्षण विधि को त्यागकर नवीन विधियों का सहारा लिया गया, जो न केवल आंचलिकता का पुट लिए हुई थी, वरन आनंददायी भी थी, इसलिए आसानी से मस्तिष्क पटल पर स्थाई होने का सामर्थ्य भी रख सकी। तीनों विषयों के पाठ्यक्रम को प्रकरणवार बाँटा जाकर चयनित विशेषज्ञों के प्रकरणवार समूह बनाए गए और हर प्रकरण पर किए जाने वाले नवाचारों को संग्रहित किया गया, जिन्हें राज्य स्तर पर सभी विद्यालयों में बाँटा गया। उक्तानुसार परीक्षा परिणाम के परिष्कार हेतु सम्पादित नवाचार के प्रतिफल में विगत वर्ष माध्यमिक परीक्षा के बोर्ड परीक्षा परिणाम में समग्र रूप से तीन फीसदी से भी अधिक सुधार के सुखद परिणाम ने मन में कुछ यूं सुकून का अहसास करवाया :-

रख हौंसला वो मंज़र भी आएगा,
प्यासे के पास समन्दर भी आएगा।
थक कर ना बैठ मंज़िल के मुसाफिर,
मंज़िल भी मिलेगी और आनन्द भी आएगा।

विगत वर्षों की तुलना में राजकीय विद्यालयों में कक्षा 10 के बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से उत्तरोत्तर सुधार के बावजूद विभागीय समीक्षा में यह तथ्य उभरकर सामने आया कि प्रदेश के कुल 13551 राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से तकरीबन दस फीसदी (1354) विद्यालयों की कक्षा 10 का बोर्ड परीक्षा परिणाम निर्धारित मानदण्डों (50%) से भी न्यून है। विभाग द्वारा राजकीय विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा परिणाम को संख्यात्मक रूप से अपेक्षानुरूप स्तर तक लाने के लिए इन 1354 विद्यालयों पर 'फोकस' किया गया तथा सत्रारम्भ में ही उक्त समस्त विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा परिणाम के उन्नयन हेतु विशिष्ट कार्य योजना निर्मित की गई। माननीय निदेशक श्री नथमल डिडेल ने निर्देश पत्र दिनांक: 13.07.2017 द्वारा उक्त समस्त 1354 विद्यालयों की जिले वार सूची सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारियों को उपलब्ध करवाते हुए सम्पूर्ण वर्ष इन विद्यालयों पर विशेष ध्यान देते हुए परीक्षा परिणाम उन्नयन की सुनिश्चितता के लिए आवश्यक कदम उठाने हेतु विशिष्ट निर्देश प्रदान किए। उक्तानुरूप समस्त जि.शि.अ. द्वारा अपने जिले के न्यून परिणाम वाले समस्त विद्यालयों को चिह्नित किया जाकर स्वयं के कार्यालय सहित RMSA में पदस्थापित शिक्षाधिकारियों को चिह्नित विद्यालयों के परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु प्रभारी अधिकारी नामित किया गया है। उक्त समस्त प्रभारी अधिकारी आंवटित विद्यालयों का सत्रपर्यन्त परिवीक्षण करते हुए न्यून परीक्षा परिणाम के कारणों का निदानात्मक उपचार सुनिश्चित करेंगे तथा इस हेतु संस्थाप्रधान तथा स्टाफ को सतत सम्बलन एवं मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। कार्यालय के शैक्षिक प्रकोष्ठ द्वारा उक्त कार्य योजना की प्रभावी क्रियान्विति हेतु पत्रावली संधारित की जाएगी, जिसका स्वयं जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा नियमित अवलोकन एवं सतत प्रगति समीक्षा उपरान्त आवश्यक निर्देश प्रदान किए जाएँगे। मण्डलाधिकारी को मण्डल क्षेत्राधिकार में उक्त विशिष्ट कार्ययोजना के व्यावहारिक क्रियान्वयन एवं सार्थक पालना हेतु दायित्वबद्ध किया गया है, जिसके अन्तर्गत मण्डल उप निदेशक द्वारा चिह्नित विद्यालयों के माध्यमिक परीक्षा-2018 के परीक्षा परिणामों की विगत वर्ष से तुलना उपरान्त परिणाम उन्नयन हेतु किए गए प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय स्टाफ एवं संस्थाप्रधान के साथ ही नामित प्रभारी अधिकारी का उत्तरदायित्व भी निर्धारित किया जाएगा। उक्तानुसार प्रभारी अधिकारी के पर्यवेक्षण में समस्त विषयों के पाठ्यक्रम की पूर्णता, अधिगम स्तर के अनुरूप कठिनाई निवारण, पुनरावृत्ति एवं यूनिट टैस्ट जैसे उपागमों के सहयोग तथा संस्थाप्रधान के प्रेरक नेतृत्व के साथ ही सम्बन्धित विषयाध्यापकों की परिणाम उन्नयन हेतु रुचि व लगन के सम्मिश्रण से समस्त निर्दिष्ट विद्यालयों के परीक्षा परिणाम उन्नयन द्वारा प्रदेश में माध्यमिक परीक्षा परिणाम के संख्यात्मक सुधार का अपेक्षित लक्ष्य संधान अभियान कुछ इन भावों के साथ प्रगतिरत है :-

माना कि अंधेरा बहुत घना है,
पर दिया जलाना कहाँ मना है।
रोशनी कहीं तो ज़रूर होगी,
पास नहीं तो कुछ दूर होगी।

परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक सुधार की सुनिश्चितता उपरान्त अगला लक्ष्य गुणात्मक सुधार है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय में अधिकाधिक अंक (More and More Marks) एवं उत्तम श्रेणी की प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित करना है। उक्तानुरूप तृतीय श्रेणी में सम्भावित छात्र द्वितीय श्रेणी, द्वितीय श्रेणी वाला प्रथम श्रेणी, प्रथम श्रेणी वाला विशेष योग्यता, विशेष योग्यता वाला 90% तथा विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियों का मेरिट की दिशा में कदम (Steps Towards Merit) उठ सके, इस उद्देश्य से माध्यमिक परीक्षा-2018 में भी राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्रदर्शन में उत्तरोत्तर सुधार हेतु विभागीय स्तर पर कार्य योजना प्रयास-2018 तैयार की गई है। इस हेतु निदेशालय स्तर पर किए गए अध्ययन में सम्पूर्ण राज्य में तीनों लक्षित विषयों (गणित, अंग्रेजी व विज्ञान) में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राजकीय विद्यालयों में कार्यरत विषयाध्यापकों को चिह्नित

किया गया तथा उन्हें सम्बन्धित विषय में मार्गदर्शक शिक्षक (Mentor Teacher) माना जाकर समस्त राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु अकादमिक सम्बलन प्रदान करने का दायित्व दिए जाने का निर्णय किया गया। उक्त बाबत् प्रारम्भिक चरण में दिनांक : 17 जनवरी-2018 को राज्य के समस्त 9 मण्डल मुख्यालयों तथा बारां व झालावाड़ जिला मुख्यालयों पर स्थित D.L.S.R. में निदेशालय द्वारा प्रदेश के समस्त मण्डल उप निदेशकों तथा जिला शिक्षा अधिकारियों की बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित कर पारस्परिक सम्वाद का दौर चलाया गया । उक्त वी.सी. में चुनिन्दा Mentor Teacher को भी आमंत्रित किया गया था एवं इस प्रकार निदेशालय के अकादमिक अधिकारियों, मण्डल एवं जिलाधिकारियों तथा Mentor Teachers के पारस्परिक सम्वाद पश्चात् तीनों लक्षित विषयों के लिए राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजन हेतु विषयवार नोडल तथा सहायक नोडल अधिकारियों एवं अकादमिक सहयोगकर्त्ता संस्थाओं के चयन तथा कार्यशाला आयोजन की तिथियों को अंतिम रूप दिया गया।

राज्य स्तरीय कार्य शालाओं के आयोजन से पूर्व जिला/मण्डल स्तर पर विषयवार कार्य शालाएँ आयोजित कर इस सत्र से कक्षा 10 में लागू किए गए नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप परीक्षोपयोगी विशिष्ट शैक्षिक/अध्ययन सामग्री का निर्माण करवाया गया। तत्पश्चात् इस शैक्षिक सामग्री का जीवन्त प्रस्तुतीकरण सम्बन्धित शिक्षकों द्वारा विषयवार आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशालाओं में किया गया। राज्य स्तरीय कार्यशालाओं में उपस्थित विषय विशेषज्ञों एवं निदेशालय स्तर से नियुक्त पर्यवेक्षकगण द्वारा गहन विश्लेषणोपरान्त परीक्षोपयोगी अध्ययन सामग्री को अंतिम रूप दिया गया, जो बोर्ड प्रश्न पत्र के Blue Print (नील पत्र) तथा बोर्ड पैटर्न के आधार पर तैयार किए जाने के कारण प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। इन कार्यशालाओं में Mentor Teacher के उत्प्रेरण हेतु वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में विचारोत्तेजक (ब्रेन स्टोर्मिंग) सेशन चलाए गए, जिसमें कई अछूते नवाचार उभरकर सामने आए, जिन्हें संग्रहित कर निर्मित शैक्षिक सामग्री के साथ प्रत्येक विद्यालय तथा प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचाए जाने का उद्देश्य प्रयास-2018 में अन्तर्निहित है। इस दौरान तीनों विषयों में अपेक्षाकृत मुश्किल समझे जाने वाले सम्प्रत्ययों (Concepts)को समझने तथा याददाश्त हेतु चिरस्थाई (Permanent Memorizing) Short Cut वाली तरकीबें (Tricks) तथा तरीके (Methods) कार्यशाला में संभागी शिक्षकों द्वारा सुझाए गए,जिन्हें देख-सुनकर ये पंक्तियाँ बरबस स्मरण हो आती है :-

मैं भी वही हूँ, मेरी वफाएँ भी वही
बदली तेरी नज़र कि नज़ारे बदल गए
किश्तियों ने मोड़ा रुख,
तो किनारे बदल गए।

कार्यशालाओं में संभागी शिक्षकों के समक्ष यह उद्देश्य रखा गया कि इन तीनों कठिन माने जाने वाले विषयों की विषयवस्तु से सम्बन्धित सामग्री सरलतम तरीके से विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाना, जिससे कि अर्जित ज्ञान विद्यार्थी के मस्तिष्क में स्थाई रूप से अंकित हो जाए। इन कार्यशालाओं में निर्मित अध्ययन सामग्री का आधार विभाग में वर्तमान में प्राथमिक स्तर पर शिक्षण अधिगम गुणवत्ता अभिवृद्धि के उद्देश्य से संचालित S.I.Q.E. कार्यक्रम के मूल उपागमों 'बाल केन्द्रित शिक्षण विधा' (C.C.P.- Child Centred Pedagogy) तथा 'गतिविधि आधारित शिक्षण' (A.B.L.-Activity Based Learning) में निहित है, जिसमें परम्परागत शिक्षण विधियों के स्थान पर नवीन आनन्ददायी शिक्षण विधियों का सहारा लिया जाता है, जो आसानी से विद्यार्थी के मष्तिष्क पटल पर स्थाई हो जाती है।

उपर्युक्तानुसार तीनों विषयों (अंग्रेजी, गणित व विज्ञान) से सम्बन्धित अध्ययन/शैक्षिक सामग्री विभाग की आधिकारिक वेब-साईट पर उपलब्ध करवाई गई है, जिसका आगाज गणतंत्र दिवस (26 जनवरी-2018) के शुभावसर पर निदेशक महोदय द्वारा समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों को सम्बोधित भाव-प्रवण अर्धशासकीय पत्र के साथ अंग्रेजी विषय की शैक्षिक/अध्ययन सामग्री प्रेषण की औपचारिक घोषणा द्वारा हुआ। शाला दर्पण के माध्यम से प्रत्येक राजकीय विद्यालय तक इसकी पहुँच सुनिश्चित की जा चुकी है। हालांकि यह शैक्षिक सामग्री समस्त स्तर के विद्यार्थियों के लिए बहूपयोगी है, परन्तु न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों तथा कमजोर अधिगम स्तर वाले विद्यार्थियों के लिए तो रामबाण नुस्खा है। कार्य योजना प्रयास-2018 को परिणामोन्मुखी (Result Oriented) बनाए जाने हेतु माह फरवरी के अंत में समस्त विद्यालयों में कक्षा-10 के विद्यार्थियों हेतु बोर्ड-पैटर्न पर प्री-बोर्ड परीक्षा के आयोजन का प्रावधान रखा गया है। उक्त परीक्षा में विद्यार्थियों के प्रदर्शन के मूल्यांकन पश्चात् सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थियों से व्यक्तिश: बातचीत कर उसके काठिन्य (Weak Point) के आधार पर उन्हें माह मार्च के प्रथम पखवाड़े के दौरान (परीक्षा तैयारी अवकाश अवधि में) विद्यालय में बुलाकर सुपरवाइज्ड स्टडी (सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थी को सम्मुख बैठाकर) करवाई जाएगी, जो विद्यार्थियों की विशिष्ट कठिनाइयों का निराकरण करने में अवश्य सफल सिद्ध होगी।

उक्त कार्य योजना में बोर्ड परीक्षा हेतु विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन के दृष्टिकोण से निर्णायक समयावधि (माह फरवरी तथा मार्च-2018) के दौरान विद्यालय में नियमित उपस्थित रहते हुए निर्मित अध्ययन/शैक्षिक सामग्री के उपयोग की सुनिश्चितता हेतु 26 जनवरी तथा 15 फरवरी - 2018 को विद्यालय स्तर पर आयोज्य दो महत्त्वपूर्ण समारोह/बैठक (क्रमश: गणतंत्र दिवस समारोह तथा अभिभावक-अध्यापक परिषद की बैठक) के दौरान अधिकाधिक अभिभावकों तथा स्थानीय जन-समुदाय को अवगत करवाते हुए उनकी सहभागिता द्वारा कार्य योजना के उद्देश्यों तथा परिणामों को कारगर बनाए जाने की अपेक्षा प्रकट की गई है।

राज्य के राजकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम को सम्पूर्ण देश के लिए अनुकरणीय बुलन्दियों तक पहुँचाने के लिए समस्त संस्थाप्रधानों, शिक्षकवृन्द तथा शिक्षा अधिकारीगण को इस प्रयास को एक जुनून के रूप में लेना होगा, कुछ इस तरह के भाव तथा संकल्प के साथ :-

कुछ लोग थे जो वक्त के सांचे में ढल गए।
कुछ लोग थे जो वक्त के सांचे बदल गए।।

शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर
मो: 9414000470

परिशिष्ट

प्रयास
प्रयास
प्रयास

प्रयास-2018 की पूर्ण सफलता हेतु संस्थाप्रधानों, शिक्षकों व शिक्षा अधिकारियों ने व्यवस्थित प्रकार से योजनाएँ बनाई ही हैं। इसी की निरंतरता में शिक्षण को बोधगम्य व प्रभावी बनाने हेतु विषय विशेषज्ञों द्वारा अपेक्षाकृत कठिन समझे जाने वाले विषयों यथा अंग्रेजी, विज्ञान (भौतिक, जीव, रसायन) एवं गणित विषय के विषयवस्तु/प्रकरणवार कतिपय सूत्र तैयार कर प्रस्तुत किये गये हैं। उक्त सूत्र कक्षा 10 के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम उन्नयन एवं शिक्षकों हेतु बहूपयोगी व कारगर प्रतीत होने के कारण उनका संकलन कर यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

शिक्षकवृन्द से अपेक्षा है कि उक्त सूत्रों का अभ्यास कराकर बोर्ड परीक्षा-2018 हेतु विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उन्हें तैयार करें ताकि बोर्ड परीक्षा-2018 का उत्कृष्ट परिणाम विद्यार्थी हासिल कर सकें।

संस्थाप्रधानों से अपेक्षा है कि प्रयास-2018 के जारी दिशा-निर्देशानुसार अपने-अपने विद्यालयों में प्री बोर्ड परीक्षा एवं उपचारात्मक शिक्षण/अभ्यास की कार्ययोजना बनाकर उसकी क्रियान्विती सुनिश्चित करें।

अन्य शिक्षाधिकारियों से अपने कार्य क्षेत्र के विद्यालयों के सघन पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण के माध्यम से बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सक्रिय भागीदारी निभाने का आग्रह है।

इसी विश्वास के साथ विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार पाठ सर्वोपयोगार्थ प्रस्तुत हैं।

-वरिष्ठ संपादक

प्रयास-2018

निर्देशाँक ज्यामिति

❐ जयसिंह चौहान

कार्तीय निर्देशाँकः-

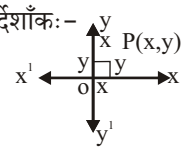

x अक्ष पर स्थित प्रत्येक बिंदु का y=0

y अक्ष पर स्थित प्रत्येक बिंदु का x=0

किसी बिंदु P का X निर्देशाँक = Y अक्ष से दूरी

किसी बिंदु P का Y निर्देशाँक = X अक्ष से दूरी

निर्देशाँकों के चिह्नः-

* मूल बिंदु के निर्देशाँक (0, 0)

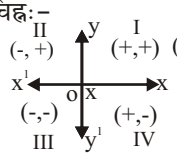

(,) में पहले X निर्देशाँक व बाद में Y निर्देशाँक लिखा जाता है।

X निर्देशाँक को भुज भी कहते हैं, इसी प्रकार Y निर्देशाँक को कोटि भी कहते हैं।

दो बिन्दुओं के बीच की दूरीः- किसी समतल में स्थित बिंदु $A(x_1,y_1)(x_2,y_2)$ के बीच की दूरीः $\sqrt{(X \text{ निर्देशाँकों का अन्तर})^2+(Y \text{ निर्देशाँकों का अंतर})^2}$

दो बिन्दुओं के मध्य दूरी का अन्तः विभाजनः-

A ——— K : 1 ——— B
(x_1,y_1) P (x_2,y_2)

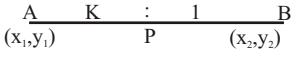

बिंदु P, AB को K:1 में बाँटता है

P के निर्देशाँक होंगे $X=\frac{Kx_2+x_1}{K+1}$; $Y=\frac{Ky_2+y_1}{K+1}$

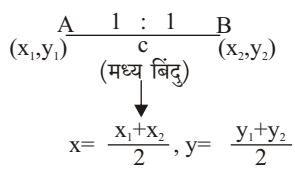

मध्य बिंदु के निर्देशाँक A ——— 1 : 1 ——— B
(x_1,y_1) c (x_2,y_2)
(मध्य बिंदु)

$x=\frac{x_1+x_2}{2}$, $y=\frac{y_1+y_2}{2}$

⇒ तीन बिंदुओं $(x_1,y_1)\,(x_2,y_2)\,(x_3,y_3)$ से बनने वाले त्रिभुज का क्षेत्रफल $=\pm\frac{1}{2}[x_1(y_2-y_3)+x_2(y_3-y_1)+x_3(y_1-y_2)]$

क्षेत्रफल को कभी ऋणात्मक नहीं लिया जाता है।

तीन बिंदुओं को संरेख सिद्ध करने के लिए उनसे बनने वाले △ का क्षेत्रफल ज्ञात कर शून्य प्राप्त कर भी सिद्ध किया जा सकता है।

उपर्युक्त पाठ पर आधारित अभ्यास प्रश्नः

प्रः1 बिंदु (4,1) ; (2,3) के बीच की दूरी

उत्तरः $\sqrt{(4-2)^2+(1-3)^2} = \sqrt{(2)^2+(-2)^2} = \sqrt{4+4} = \sqrt{8}$
$\sqrt{4\times2} = 2\sqrt{2}$ ई.

प्रः 2 X अक्ष पर वह बिंदु ज्ञात कीजिए जो (2, -5) और (-2, 9) से समदूरस्थ है।

उत्तरः X अक्ष पर किसी भी बिंदु के लिए y=0 होता है ∴ माना बिंदु (x,0) है।

(X,0) और (2, −5) के बीच की दूरी = (X,0) और (−2,9) के बीच की दूरी

$$\sqrt{(X-2)^2+(0+5)^2} = \sqrt{(X+2)^2+(0-9)^2}$$

दोनों तरफ वर्ग करने पर

$$(X-2)^2+(5)^2 = (X+2)^2+(0-9)^2$$

$X^2-4X+4+25 = X^2+4X+4+81 \Rightarrow -8X=56$

$X=\frac{-56}{8} = -7$ ∴ अक्ष पर स्थित बिंदु (−7, 0) है

प्र: 3 एक समचतुर्भुज का क्षेत्रफल ज्ञात कीजिए जिसके शीर्ष इसी क्रम में लेने पर (3,0), (4,5), (−1,4) और (−2, −1) है

हल:

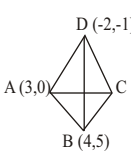

विकर्ण $AC=\sqrt{(3+1)^2+(0-4)^2}=\sqrt{4^2+(-4)^2}=\sqrt{16+16}$

$AC=\sqrt{2\times16} = 4\sqrt{2}$

$BD=\sqrt{(4+2)^2+(5+1)^2}=\sqrt{6^2+6^2}=\sqrt{36+36}$

$BD=\sqrt{2\times36} = 6\sqrt{2}$

समचतुर्भुज का क्षेत्रफल $= \frac{1}{2}\times AC\times BD$

$= \frac{1}{2} \times 4\sqrt{2} \times \sqrt{2}.6 = \frac{1}{2}\times4\times6\times2 = 24$ वर्ग ई.

प्र: 4 उस त्रिभुज का क्षेत्रफल ज्ञात करें जिसके शीर्ष (2,3) ; (−1,0), (2,4)

Δ का क्षेत्रफल $= \pm \frac{1}{2}[x_1(y_2-y_3)+x_2(y_3-y_1)+x_3(y_1-y_2)]$

$= \pm \frac{1}{2}[2(0+4)-1(-4-3)+2(3-0)] = \pm \frac{1}{2}[8-1x-7+6]$

$= \pm \frac{1}{2}[8+7+6] = \pm \frac{1}{2} x21 = \frac{21}{2}$ ई.

⇒ चतुर्भुज के चारों शीर्ष दिए हों तब उसका एक विकर्ण खींचकर दो त्रिभुजों में बाँटा जा सकता है दोनों त्रिभुजों का अलग−अलग क्षेत्रफल ज्ञात कर योग कर लेते हैं।

प्र: 5 K का मान ज्ञात करें (7, −2), (5,1), (3, K) जबकि ये तीनों बिंदु सरेखी हैं

बनने वाले Δ का क्षेत्रफल = 0

$\frac{1}{2}[x_1(y_2-y_3)+x_2(y_3-y_1)+x_3(y_1-y_2)]=0$

$\frac{1}{2}[7(1-k)+5(k+2)+3(-2-1)]=0$

$7-7k+5k+10-9=0x2=0$

$-7k+5k+8=0$

$-2k=-8 \Rightarrow k = \frac{-8}{-2} = 4$

प्र:6 यदि k (5,4) रेखाखंड PQ का मध्य बिंदु है तथा Q के निर्देशाँक (2,3) है तो P के निर्देशाँक ज्ञात करो?

P (x,y) — M (5,4) — Q (2,3)

मध्य बिंदु $5=\frac{x+2}{2} \Rightarrow 10 = x+2 \Rightarrow x = 10-2=8$

$4=\frac{y+3}{2} \Rightarrow 8 = y+3 \Rightarrow y=8-3=5$

अतः बिंदु P के निर्देशाँक (8,5) है।

प्र:7 यदि A (6,1) और B (8,2), C(9,4) और D(x,y) इसी क्रम में एक समानान्तर चतुर्भुज के शीर्ष है तो बिंदु D(x,y) ज्ञात करो।

उत्तर:

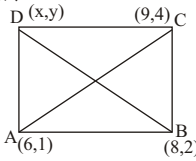

समान्तर चतुर्भज के विकर्ण परस्पर समद्विभाजित करते हैं।

विकर्ण AC का मध्य बिंदु = विकर्ण BD का मध्य बिंदु

$\left[\frac{6+9}{2}, \frac{1+4}{2}\right] = \left[\frac{8+X}{2}, \frac{2+y}{2}\right]$

$\left[\frac{15}{2}, \frac{5}{2}\right] = \left[\frac{8+X}{2}, \frac{2+y}{2}\right]$

$\frac{15}{2}=\frac{8+x}{2}$; $\frac{5}{2}=\frac{2+y}{2} \Rightarrow 5=2+y$

$5=-2=y$

$3=y$

$15=8+x$;

$15-8=x$

$7=x$ ∴ D (7, 3)

व.अ.
रा.मा.वि. चूली की ढाणी, झुंझुनूं
मो. 9929449772

आधार-लम्ब-कर्ण

❐ राकेश कुमार

$\frac{LAL}{KKA}$

L - लम्ब
A - आधार
K - कर्ण

से सभी त्रिकोणमितीय अनुपात के सूत्र लिख सकते हैं।

$\sin\theta = \frac{L}{K} = \frac{\text{लम्ब}}{\text{कर्ण}}$		$\operatorname{cosec}\theta = \frac{K}{L}$	
$\cos\theta = \frac{A}{K} = \frac{\text{आधार}}{\text{कर्ण}}$		$\sec\theta = \frac{K}{A}$	
$\tan\theta = \frac{L}{A} = \frac{\text{लम्ब}}{\text{आधार}}$		$\cot\theta = \frac{A}{L}$	

पूरक कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपातों के सूत्र

यदि Co जुड़ा हुआ है तो हटा देते हैं तथा Co नहीं जुड़ा हुआ है तो जोड़ देते हैं।

जैसे $\sin(90-\theta) = \cos\theta$ $\quad \cos(90-\theta) = \sin\theta$

$\tan(90-\theta) = \cot\theta$ $\quad \cot(90-\theta) = \tan\theta$

$\sec(90-\theta) = \operatorname{cosec}\theta$ $\quad \operatorname{cosec}(90-\theta) = \sec\theta$

बहुलक $= l+\left(\frac{F_1-F_0}{2F_1-F_0-F_2}\right)xh$ याद रखने के लिए $\frac{10}{10_2}$ की सहायता से याद रखा जा सकता है।

$0, \frac{1}{4}, \frac{1}{2}, \frac{3}{4}, 1$ का क्रम से वर्गमूल लेने से $\sin\theta$ के सभी विशेष कोणों के मान प्राप्त हो जाते हैं तथा इसका उल्टा करने पर $\cos\theta$ के मान प्राप्त हो जाते हैं $\sin\theta$ में $\cos\theta$ का भाग देने पर $\tan\theta$ के मान प्राप्त हो जाते हैं।

	0^0	30^0	45^0	60^0	90^0
$\sin\theta$	0	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{\sqrt{2}}$	$\frac{\sqrt{3}}{2}$	1
$\cos\theta$	1	$\frac{\sqrt{3}}{2}$	$\frac{1}{\sqrt{2}}$	$\frac{1}{2}$	0
$\tan\theta$	0	$\frac{1}{\sqrt{3}}$	1	$\sqrt{3}$	∞

रा.आ.उ.मा. विद्यालय,
बिरानियां (सीकर)
मो. 9799083256

प्रयास-2018

रसायन विज्ञान

❒ विनीत ढाका

रसायन विज्ञान को सरल भाषा में याद करने के तरीके आवश्यक हैं जिससे विद्यार्थी रसायन विज्ञान के कुछ प्रश्नों को सरल रूप से याद रख सकते हैं तथा कक्षा 10 के बोर्ड छात्र-छात्राओं के लिए परीक्षा में अंक अर्जित करने में आसानी हो सकेगी। रसायन विज्ञान में कुछ प्रश्नों के भागों को आसानी से समझने के तरीके निम्नांकित हैं।

1. मैण्डेलीफ की आवर्त सारिणी में असंगत युग्म–

Ar, K	आमिर खान	अधिक परमाणु भार वाले तत्त्व को पहले रखा गया है जबकि नियमानुसार अधिक परमाणु भार वाला तत्व बाद में आना चाहिए।
Co, Ni	क्यों नहीं	
Te, I	तेरी इच्छा	
Th, Pa	ठण्डा पेप्सी पीने की।	

2. धातु, अधातु को अलग करने वाली सीढ़ी पर स्थित तत्त्व (उपधातु)

	B	Si	As,	Te	At
	बोरोन	सिलिकन	आर्सेनिक	टेल्यूरियम	एस्टैटीन
Trick	ब	सी	ऐसी	तेरी	आत्मा

3. समान विद्युतऋणता वाले तत्त्वों के युग्म

	H	P	N	Cl	C	S	I
	हाइड्रोजन	फॉस्फोरस	नाइट्रोजन	क्लोरीन	कार्बन	सल्फर	आयोडीन
Trick	हिन्दुस्तान	पेट्रोलियम	नकल		कसाई		

4. क्षारीय धातु व क्षारीय मृदा धातु तत्त्व (धन विद्युती तत्त्व)

क्षारीय मृदा धातु	Be	Mg	Ca	Sr	Ba	Ra	
	बेरीलियम	मैग्नीशियम	कैल्शियम	स्ट्राँशियम	बेरीयम	रेडियम	
	बेटा	मांगे	कन्या	सुंदर	बाप	राजी	
क्षारीय धातु	H	Li	Na	K	Rb	Cs	Fr
	हाइड्रोजन	लीथियम	सोडियम	पोटेशियम	रुबीडियम	सीजियम	फ्रॉसियम
Trick	ह	ली	ना	ने कहा	रुबी	सज	फिर से

हलीना ने कहा रुबी सज फिर से।

5. चाल्कोजन तत्त्वों या 16 वें वर्ग के तत्त्व–

	O	S	Se	Te	Po
	ऑक्सीजन	सल्फर	सेलेनियम	टेल्यूरियम	पॉलोनियम
Trick	ओ	सल्लू	सिलेंगे	तेरी	पॉकेट

6. ऑक्सीकरण, अपचयन को याद करने का तरीका

ऑक्सीकरण– ओजु हट e^- निकल

तू तो

ऑक्सीजन — इलेक्ट्रॉन निकलना

जुड़ना — हाइड्रोजन हटना

अर्थात– (1) ऑक्सीजन जुड़ना (2) हाइड्रोजन का हटना (3) e^- निकलना (निष्कासन अपचयन, ऑक्सीकरण का उल्टा होता है।)

ऑक्सीजन तू तो हट, हाइड्रोजन व इलेक्ट्रॉन आप दोनों जुड़ जाओ।

7. निम्न त्रिज्याओं को घटते हुए क्रम में लिखने का तरीका

	वान्डरवाल्स	धात्विक	सहसंयोजक त्रिज्या
	(Vandervalls)	(Metalic)	(Covalent Radious)
Trick	V	M	C
ट्रिक	वॉलीबॉल	मैच	कोनी (अंग्रेजी वर्णमाला का क्रम)

8. सक्रियता श्रेणी को सरल रूप में याद करने का तरीका

लिथियम	Li	लि	
पोटेशियम	K	ख	
बेरियम	Ba	बा	
कैल्शियम	Ca	का	
सोडियम	Na	नया	
मैग्नीशियम	mg	मजा	अधिक क्रियाशील धातु
ऐल्यूमिनियम	Al	आया	
मैग्नीज	Mn	मन	
ज़िंक	Zn	जाने कि	
क्रोमियम	Cr	करें	
आयरन	Fe	फिर	
कैडमियम	Cd	करीना	
कोबाल्ट	Co	को	
निकल	Ni	नहीं	
टिन	Sn	सोनू से	
लेड	Pb	प्यार	
हाइड्रोजन	H	हाइड्रोजन	
कॉपर	Cu	C	छापा (Chapa) — कम क्रियाशील धातु
मर्करी	Hg	H	
सिल्वर	Ag	A	
प्लेटिनम	Pt	P	
गोल्ड	Au	A	

अधिक क्रियाशील धातु, कम क्रियाशील धातु को हटा देती है।

अर्थात– ऊपर वाली धातु नीचे वाली को हटा देती है। जैसेः–

$Zn_{(s)} + CuSo_4 \longrightarrow Znso_4 + Cu_{(s)}$

9. IUPAC नामकरण का सरल तरीका

प्रतिस्थापी को स्थिति के साथ अंग्रेजी वर्णमाला के क्रम में। + साइक्लो + मुख्य शृंखला + प्राथमिक अनुलग्न की स्थिति + प्राथमिक अनुलग्न

समान प्रतिस्थापी 2 = डाई

3 = ट्राई

4 = टेट्रा

$-CH_3$ = मेथिल

$-CH_2CH_3$ = ऐथिल

$-NO_2$ = नाइट्रो

-F = फ्लोरो

-Cl = क्लोरो

-Br = ब्रोमो

-I = आयोडो

1c= मेथ

2c=ऐथ

3c=प्रोप

4c=ब्यूट

5c=पेंट

6c= हेक्स

7c= हेप्ट

8c= ऑक्ट

9c=नॉन

10c=डेक

द्विबंध → = एकलबंध → ऐन

त्रिबंध → ≡ द्विबंध → ईन

त्रिबंध → आईन

प्रायिकता का क्रम = क्रियात्मक समूह > प्रतिस्थापी (द्विबंध, त्रिबंध)

जैसेः– $\overset{1}{CH_2}=\overset{2}{CH}---\overset{3}{CH_2}---Cl$

प्रतिस्थापी

3-क्लोरो प्रोप-1-ईन

व्याख्याता

रा.उ.मा. विद्यालय, गुहाला, (सीकर)

मो: 9588012532

प्रयास-2018

त्रिकोणमिति

❒ दिनेश कुलहरी

छात्रों को त्रिकोणमिति के सूत्र याद रखने एवं सम्प्रत्य समझने में अत्यधिक कठिनाई होती है। इसे ध्यान में रखते हुए त्रिकोणमितिय सूत्रों को सरलतम तरीके से याद करने के कुछ नियम व ट्रिक तैयार किए गए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ट्रिक छात्रों में सम्प्रत्य विकास में सहायक सिद्ध होगी।

त्रिकोणमिति:– गणित की वह शाखा जिसमें समकोण त्रिभुज की भुजाओं की मापों के अनुपातों के मान विभिन्न त्रिकोणमितिय फलनों के रूप में होते हैं।

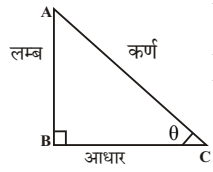

थीटा कोण हमेशा आधार व कर्ण के मध्य बनता है। थीटा कोण के सामने की भुजा लम्ब होती है तथा समकोण के सामने की भुजा कर्ण होती है। (थीटा θ), (आ.क.) में आ. आधार है तथा क. कर्ण हैं।

त्रिकोणमितिय अनुपातों को याद रखने के लिए निम्न पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है।

sinθ cosθ tanθ P-perpendicular, (लम्ब)
B-Base, (आधार)
H-Hypertaneous (कर्ण)

<u>पंडित बद्री प्रसाद</u>

हर हर बोले शेष त्रिकोणमितिय अनुपात निम्न प्रकार ज्ञात किए जा सकते हैं

$\frac{P}{H}$ $\frac{B}{H}$ $\frac{P}{B}$ $1/\sin\theta = \text{cosec}\,\theta$, $1/\cos\theta = \sec\theta$, $1/\tan\theta = \cot\theta$

समकोण त्रिभुज के लिए $H^2=P^2+B^2$ इस समीकरण में H^2का भाग देने पर–

$(P/H)^2 + (B/H)^2 = 1$ मान रखने पर

$\sin^2\theta + \cos^2\theta = 1$ (प्रथम सर्वसमिका है।).....(1)

समीकरण (1) में $\cos^2\theta$ का भाग देने पर $1+\tan^2\theta = \sec^2\theta$ (दूसरी सर्वसमिका है।).....(2) समीकरण (1) में $\sin^2\theta$ का भाग देने पर $1+\cot^2\theta = \text{cosec}^2\theta$ (तीसरी सर्वसमिका है।).....(3)

<u>थीटा व फाई के रुप में त्रिकोणमितिय फलन</u>

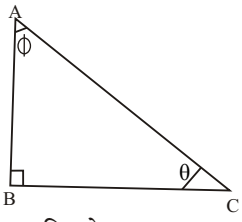

माना कि कोण BAC = ϕ

तथा कोण = BCA = θ

अतः $\cos\theta = B/H = BC/AC$--------(1)

$\sin\theta = P/H = BC/AC$ ----------(2)

समीकरण 1 व 2 का दक्षिण पक्ष समान है। अतः

$\cos\theta = \sin\phi$, $\phi = 90 - \theta$

$\cos\theta = \sin(90-\theta)$

$\cos\phi = \sin(90-\theta)$ CS चिमन सिंह के तीन पुत्र

$\sin\phi = \cos(90-\theta)$ SC सतीश चन्द्र

$\tan\phi = \cot(90-\theta)$ TC तारा चन्द्र

$\cot\phi = \tan(90-\theta)$ CT चतराराम

त्रिकोणमितिय कोणों की सारिणी याद रखना

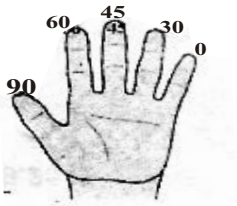

Sin के मान के लिए घड़ी की सूई की दिशा

cos के मानों के लिए घड़ी की सूई की विपरीत दिशा

मान ज्ञात करने के लिए दिशा का ध्यान रखते हुए शेष अंगुलियों की संख्या को गिनें व प्राप्त संख्या का वर्गमूल लेते हुए दो से भाग देदें। कोण का अभीष्ट मान प्राप्त हो जाएगा। उदाहरण–

$\text{Sin}\,30^0 = \sqrt{1}/2 = 1/2$ (30^0 के दायीं ओर एक ही अंगुली है)

$\cos 30^0 = \sqrt{3}/2$ (30^0 की अंगुली के बांयी ओर तीन अंगुलियाँ और है)

$\tan\theta$ के मान प्राप्त करने के लिए Sin के मानों में Cos का भाग देदें।

मेन्सुरेशन

गणित को कठिन विषय के रूप में पढ़ाया और माना जाता रहा है परन्तु गणितीय सूत्रों की दुनियाँ को यदि सरल व सरस तरीकों से याद रखा जाए तो ठोस ज्यामिति में काफी सहायता प्राप्त होती है। वृत्त की परिधि, क्षेत्रफल, चाप की लम्बाई

के सूत्र–

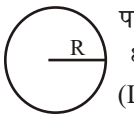

परिधि= $2\pi R$ इकाई

क्षेत्रफल = πR^2 इकाई

(L) चाप= $\widehat{ACB} = 2\pi r\frac{\theta}{360}$ इकाई

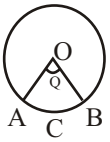

वृत्तखंड का क्षेत्रफल

$A = \pi r^2 \frac{\theta}{360}$ वर्ग इकाई

$\frac{A}{L} = \frac{r}{2}$ या $A = Lr/2$

सभी सूत्र निम्न प्रकार से याद रखे जा सकते हैं।

दो पाई राख ← θ/360 (चाप)

पाई का राजा राम ← θ/360 (वृत्तखंड का क्षेत्रफल)

आलू = $\frac{\text{लालूराम}}{2}$ इनमें सभी पाँच सूत्र समाहित हैं।

<u>बेलन</u>

बेलन का स. पृ. का क्षेत्रफल, बेलन का वक्र पृष्ठ बेलन का आयतन आदि के सूत्र

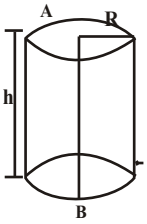

स. पृ. का क्षेत्रफल

$2\pi R^2 + 2\pi Rh$ = वर्ग इकाई

बेलन का आयतन

$\pi R^2 h$ = घन इकाई

वृत्ताकार पृष्ठ :– दो पाई का राजा राम और दो पाई राख हमेशा (1)

पाई राखै रेख हमेशा (2)

(1) बेलन के सम्पूर्ण पृष्ठ के क्षेत्रफल को प्रदर्शित करता है।

(2) बेलन के आयतन को प्रदर्शित करता है।

<u>शंकु</u>:– शंकु की आकृति की जानकारी के लिए जोकर की टोपी, कुल्फी का कोन के बारे में चर्चा करना उचित है।

शंकु के सम्पूर्ण पृष्ठ का क्षेत्र. $=\pi r^2+\pi rl$ वर्ग इकाई

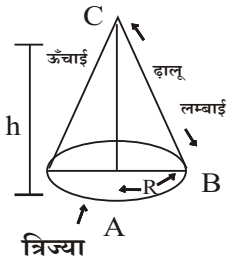

त्रिज्या

शंकु का वक्र पृष्ठ = π rl वर्ग इकाई

शंकु का आयतन = $\frac{\pi r^2 h}{3}$ घन इकाई

ढालू भाग की $(ल.)^2=(R^2+h^2)$ इकाई

ट्रिक

पाई राजा राम और पाई राखै लश्कर $(\pi\times R\times R+\pi\times R\times L)$

पाई राखै लश्कर (π RL)

शंकु राखै बेलन को तीसरो भाग (πR^2 h/3)

शंकु का आयतन = $\frac{\text{(बेलन का आयतन)}}{3}$

(पाई राखै रेख हमेशा) / 3 (πR^2 h/3)

गोला एवं अर्धगोला का स. पृ. व आयतन–

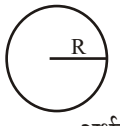

गोला का स.पृ. का क्षेत्रफल $=4\pi R^2$ वर्ग इकाई

अर्धगोले का स.पृ. $= 3\pi R^2$ वर्ग इकाई

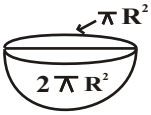

गोले का आयतन $=\frac{4}{3}\pi R^3$ घन इकाई

अर्धगोले का आयतन $=\frac{2}{3}\pi R^3$ घन इकाई

Trick (पाई राजा राम रखेगा) 4 / 3 = $(\pi\times R\times R\times R)\frac{4}{3}$

(पाई राजा राम रखेगा) 2 / 3 = $(\pi\times R\times R\times R)\frac{2}{3}$

4 पाई राजा राम नहीं तो $= 4\pi\times R\times R$

3 पाई राजा राम $= 2\times\pi\times R\times R$

ट्रिक में केवल अंग्रेजी के प्रथम अक्षर ही लिखने हैं।

प्राध्यापक(भौतिक)
रा.आ.उ.मा.वि., जेजूसर, झुंझुनूं
मो. 9414743265

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

प्रयास-2018

Clause

❒ डॉ. रामगोपाल शर्मा

Phrase
- a group of words
- having sense but not complete
- part of the sentence
  e.g. in the morning, for good, go for a walk

Clause
- a group of words
- having sense but not complete
- part of the sentence
- having one finite verb

Clauses can be classified in two categories

1. Dependent/subordinate
- Noun Clause
- Adjective Clause/ Relative Clause
- Adverb Clause

2. Independent/coordinate/main/ principal

Sentence
1. Simple sentence (one clause- one finite verb)
   He is playing.
2. Compound Sentence- (Independent + Independent Clause)
   He went to market and bought a book.
3. Complex Sentence – (Independent +Dependent Clause)
   If you invite me, I will come.
4. Mixed Sentence – More than two clauses having one Independent Clause

Conjunctions

Coordinating Conjunctions (compound Sentences) And, but, yet, so, or, still, as well as, therefore, Either …or, Neither .. nor, Not only … but also, Both … and .....

Subordinating Conjunctions (Complex sentence) Because (since/as/for), after, before, if, unless, until, in case, as .. as, so …as, so that, so …. That, such ..that, although … yet, No sooner …than, Hardly…when, that , WH words, lest … should

Noun clause

Noun clause is used in place of Noun/pronoun

It can be Subject, Object, Complement or Prepositional Phrase (Prep+NP)

What you say is correct.
He told me that he was coming.
Listen to what she says.
Life is what one makes it.
When he comes is not known.(s)
He asked me when I would come.(0)
Listen to what I say.
The news that he was arrested is true.

Adjective Clause/Relative clause

Adjective Clause tells something about Noun/Pronoun

Noun/Pron + Who, whom, whose, which, that, where….

This is the boy who lives here.
The boy who lives here is a player.
He married the girl I suggested.
The boy who lives here is my cousin.
The boy whom I helped is my cousin.
The boy whose car I borrowed is my cousin.
This is the house that Jack built.
Who/which.....that

'that' is used with 'Only, any, it is, this is, all, those, superlatives'

He is the only man that can do it.
Any man that listens to you is a fool.
It is the same watch that was stolen.
All that glitters is not gold.
This is the best that we can do.
He is one of my wisest relatives that live in Mumbai.
One of my students lives here.
It is I who am to do it.

Adverb Clause

Adverb Clause is used in place of Adverb and answers for 'when, why, where, how.'

1. Time- When he arrived, he saw them playing.
2. Place-You can play wherever you like.
3. Purpose-Work hard so that you may pass.
4. Reason- I was punished because I was late.
5. Condition-I won't go out if it rains.

6. Result- They were so frightened that they all ran away.
7. Degree- He worked hard as/so much as he could.
8. Manner- He played with the children as if he had been one of them.
9. Concession or Contrast- Although/Even though/though he was an old man (yet) he never felt like an old man.
   He asked me where he lived. (Noun Clause)
   He wants to go where no one can meet me. (Adverb Clause)
   The house where I live is very big. (Adjective Clause)

Underline the dependent clause and point out whether the clause is Noun Clause, Adjective Clause and Adverb Clause-

1. Where he dined is not known to me.
2. I don't know where he dined.
3. What he said is true.
4. My answer is that I don't know.
5. I don't know what he wants.
6. The rumour that he is dead is untrue.
7. The rumour that you told me is untrue.
8. The news=that he is selected is true.
9. The news that I heard is true.
10. I asked him if he could swim.
11. If you invite me, I will come.
12. I don't know whether he will come or not.
13. What pleased us most was his good behaviour.
14. I don't know why he cheated me.
15. Please listen to what the manager says.
16. He stood up thinking that the film was over.
17. Life is what we make it.
18. It is a fact that he is dishonest.
19. The boy, who is reciting the poem, is my brother.
20. They say that honesty is the best policy.
21. Do you know where he lives?
22. I want to live where no one can meet me.
23. This is the place where Gandhi was born.
24. Why he comes here is still a mystery.
25. My wife who lives in Delhi has come. (restrictive/ defining)
26. My wife, who lives in Delhi, has come. (non-restrictive/non-defining) Additional information
27. This is the same story that he told me last night.
28. All that glitters is not gold.
29. This is the place where he was born.
30. Why he participated in the debate is clear.
31. This is the book (that) I wanted.
32. Those whom God loves die young.
33. The telegram he sent us was about his success in I.A.S.
34. Do you like the coat Geeta is wearing?
35. I want to go where no one can meet me.
36. Where he lives is a mystery.
37. This is the hospital where my father works.
38. Go where you wish.
39. Ram could not go to school as he was unwell.
40. Work hard lest you should fail.
41. Unless you work hard, you cannot get good marks.
42. However hard you may try, you can't catch the train.
43. As far as I know, Geeta is a sincere lady.
44. While I was bathing, the door bell rang.
45. Speak loudly so that I may hear you.
46. He won the election because he was popular.
47. Geeta helps me whenever I ask her.
48. She asked me when I would reach.
49. When I would reach is not sure.
50. Since you say so, I must believe you.
51. Those who live in glass houses should not throw stones.
52. Where there is a will, there is a way.
53. If I make a promise, I keep it.
54. God helps those who help themselves.
55. Make hay while the sun shines.
56. No one knows why she came here?
57. The reason why she failed is obvious.
58. They never fail who die in a great cause.
59. Strike while the iron is hot.
60. This is the place where he was born.
61. She will certainly help you if she can.
62. He asked me if I was going with him.
63. He that is down needs fear no fall.
64. When he entered the room, he found her lying on the floor.
65. They want to live where the climate is good.
66. We know the place where the climate is good.
67. Do you know where the climate is good?
68. The reason why she failed is not known.
69. Mary had a little lamb whose fleece was white as snow.
70. I shall remain where I am.

Solution

1. Where he dined -NC
2. where he dined-NC
3. What he said - NC
4. that I don't know - NC
5. what he wants - NC
6. that he is dead - NC
7. that you told me Adj Cl
8. that he is selected - NC
9. that I heard – Adj Cl
10. if he could swim - NC
11. If you invite me – Adv Cl
12. whether he will come or not - NC
13. What pleased us most - NC
14. why he cheated me - NC
15. what the manager says - NC
16. that the film was over - NC
17. what we make it - NC
18. that he is dishonest- NC
19. who is reciting the poem – Adj Cl
20. that honesty is the best policy - NC
21. where he lives - NC
22. where no one can meet me – Adv Cl
23. where Gandhi was born – Adj Cl
24. Why he comes here - NC
25. who lives in Delhi – Adj Cl (restrictive/defining)
26. who lives in Delhi- Adj Cl (non-restrictive/non-defining) Additional information

27. that he told me last night – Adj Cl
28. that glitters – Adj Cl
29. where he was born – Adj Cl
30. Why he participated in the debate - NC
31. I wanted – Adj Cl
32. whom God loves – Adj Cl
33. he sent us – Adj Cl
34. Geeta is wearing – Adj Cl
35. where no one can meet me – Adv Cl
36. Where he lives - NC
37. where my father works – Adj Cl
38. where you wish – Adv Cl
39. as he was unwell – Adv Cl
40. lest you should fail – Adv Cl
41. Unless you work hard– Adv Cl
42. However hard you may try– Adv Cl
43. As far as I know– Adv Cl
44. While I was bathing– Adv Cl
45. so that I may hear you– Adv Cl
46. because he was popular– Adv Cl
47. whenever I ask her– Adv Cl
48. when I would reach - NC
49. When I would reach - NC
50. Since you say so– Adv Cl
51. who live in glass houses – Adj Cl
52. Where there is a will– Adv Cl
53. If I make a promise– Adv Cl
54. who help themselves¬ – Adj Cl
55. while the sun shines– Adv Cl
56. why she came here - NC
57. why she failed – Adj Cl
58. who die in a great cause – Adj Cl
59. while the iron is hot – Adv Cl
60. where he was born¬-Adj Cl
61. if she can– Adv Cl
62. if I was going with him¬-NC
63. that is down –Adj Cl
64. When he entered the room– Adv Cl
65. where the climate is good– Adv Cl
66. where the climate is good– Adv Cl
67. where the climate is good-– Adv Cl
68. why she failed – Adj Cl
69. whose fleece was white as snow – Adj Cl
70. where I am -– Adv Cl

Reader and Chief Resource Person in ELTI
Govt. IASE, Bikaner
Mo. 9460305331

प्रयास-2018

आरेखों के माध्यम से प्रश्नोत्तर एवं व्याख्या

❒ अमित कुमार मिश्रा

परीक्षा में Golden Rays पुस्तक के गद्य (Prose) एवं पद्य (Poetry) भाग के प्रश्नोत्तर एवं व्याख्या से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए जटिल वाक्य निर्माण में स्वयं को असहज पाने वाले औसत विद्यार्थियों को Diagrams के जरिये सरल Sentence Pattern सीखाकर Teachers सरलता से उत्तर देने के लिए तैयार कर सकते हैं।

यहाँ उदाहरण के तौर पर एक गद्य पाठ और एक कविता के केन्द्रीय भाव को Diagrams के जरिये समझाया गया है। इनका उपयोग विद्यार्थी आसन्न बोर्ड परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर और व्याख्या लिखने में कर सकते हैं। अन्य पाठों के भी इसी तरह आरेख बनाए जा सकते है।

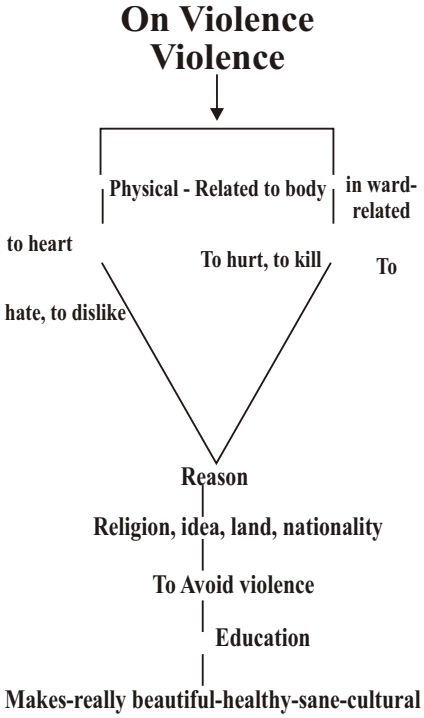

There are two kind of violence–1 Physical violence 2 inward violence

Physical violence is to hurt, to kill and inward violence is to hate, to dislike and criticize. This violence is due to religion, idea, land and nationality. To avoid violence Education is must. Education makes a men really Beautiful - healthy – sane – cultural.

1 What is physical violence?
2 What is inward violence ?
3 What is the reason of violence?
4 What does education do ?

Poem No.3 The Lotus –Toru Dutt

इस ग्राफ से Lily, Rose, Lotus की विशेषताएँ लिख सकते है तथा Lotus Queen of Flowers क्यों है का उत्तर दिया जा सकता है तथा Explanation के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

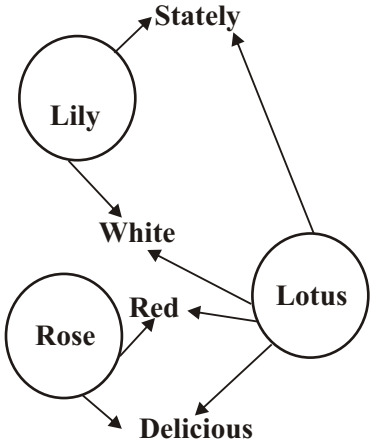

Quality of Lily, Rose, Lotus – Lily is white, lily is stately. Rose is red, Rose is delicious.

Lotus is white, lotus is red, lotus is delicious & Lotus is stately. So The lotus is the queen of Flower

Question :- What was the cause of quarrel between lily and the rose?

Ans. The cause of quarrel between lily and the rose was beauty contest. Both of them tried to get the status of the best flower for a long time.

Senior Teacher
GSSS Jaleu, Fatehpur (Sikar)
Mo. 9462654329

प्रयास-2018

कुछ पादपों/फलों के वैज्ञानिक नाम याद रखने की ट्रिक्स

❒ रोहिताश भड़िया

अध्याय 14 में कुछ पादपों के वैज्ञानिक नाम दिए हुए हैं जिनमें से परीक्षा में प्रश्न जरूर पूछा जाता है यहाँ इन नामों को दैनिक जीवन से जोड़कर इन्हें याद करने की ट्रिक बतायी गयी है। यहाँ ट्रिक कॉलम में गहरे किए गए शब्दों द्वारा वैज्ञानिक नाम याद रखा जा सकता है।

साधारण नाम	वैज्ञानिक नाम	याद रखने की ट्रिक
चावल	ओराइजा सेटाइवा	**ओ राईस** का दाना बाली में **सटा हुवा** है।
मक्का	जिआ मेज	मक्का खाकर **जिआ** (मन) **मोज** (खुश) हो जाता है।
गेहूँ	ट्रिटिकम एस्टाइवम	**ट्रिटि** (संधि) **कम** है **इसटाइम** (गेहूँ आयात कम है)
बाजरा	पेनिसिटम टाईफाइडिस	**पेने**(नुकीला) **सीटे** वाला जो **टाईफाइड** में खाते हैं बाजरा
चना	साइसर ऐराइटिनम	**सांड़ सर** को पुलिस ने **ऐरेस्ट** कर लिया चना चुराया था।
मटर	पाइसम सेटाइवम	इसके **पीस**(दाने)**सटे** हुए है फली में
सोयाबीन	ग्लाईसीन मैक्स	**ग्लुकोसमेक्सी** मम (अधिकतम ताकत प्रोटीन होती है।)
सर्पगंधा	रावल्फिया सर्पेन्टाइना	श्रीमती **राव पियासर्पा** न **टाइम** देते है।
आम	मैंगिफेरा इण्डिका	**मैंगो** (आम) **फेरा** (घूम घूम) कर **इण्डिया** में बेचा जाता है।
केला	म्युजा पेराडिसियेका	जैसे **मोजा** (छिलका) पहनकर **डिस्को** हो रखा है।
हल्दी	कुरकुमा लौंगा	हल्दी को देख छोटा बच्चा बोला **कुरकुरा लूँगा।**
कुनेन	सिलकोना आफिसिनेलिस	**सिनकोना** के पेड़ से **ऑफिस** के लिए **कुनेन** मिलता है।
ग्वारपाठा	एलोय वेरा	**ऐलो बीरा** (ये लो भाई खाओ) ग्वार पाठा
अफीम	पेपेवर सोम्निफेरम	शरबत **पी पी वर** ने **सौ मनी** (सौ से ज्यादा) **फेरा** ले लिए।
रोहिड़ा	टेकोमेला अन्डुलेटा	**रोहि** से स्कूल आने वाला **टेको मैला** है व **अन्डु लेट** है।
खेजड़ी	प्रोसोपिस सिनेरेरिया	**प्यारो सो पीस** है खेजड़ी
मानव	होमोसेपियन्स	जो **होम** पर **सेम्पियन** पीता है वह मानव है।

कार्बनिक अम्लों के स्रोत

कक्षा 10 के अम्ल, क्षार व लवण अध्याय में कुछ कार्बनिक अम्लों के स्रोत दिए हुए हैं जिनमें पाए जाने वाले अम्लों को निम्न ट्रिक द्वारा याद रखा जा सकता है।

नाम स्रोत	अम्ल का नाम	याद करने की ट्रिक
चींटी, नेटल	फार्मिक अम्ल	चींटी, नेटल फार्मर के सम्पर्क में ज्यादा आते है
दही, दूध	लेक्टिक अम्ल	दही, दूध खाकर लेटना पड़ता है
सेव	मैलिक अम्ल	सेव को काट कर छोड़ देने पर वह मैला हो जाता है
नींबू	सिट्रिक अम्ल	नींबू चूसने पर सि सि करना पड़ता है।
ईमली	टारटरिक अम्ल	ईमली को टाट (बकरी) बड़े चाव से खाती है
टमाटर	ऑक्जेलिक अम्ल	ऑक्सीजन लिए हुए होता है टमाटर

प्राध्यापक
राआउमावि, सोनासर, झुन्झुनूं
मो. 9461059510

मानव नेत्र के दोष (निकट व दूर दृष्टि दोष)

❒ दिनेश कुलहरी

बालकों को नेत्र के दोष समझने व याद रखने में समस्या को ध्यान में रखते हुए चित्र व ट्रिक के माध्यम से सम्प्रत्यात्मक विकास का प्रयास किया गया है।

1. निकट दृष्टि दोषः– निकट दृष्टि दोष से ग्रसित व्यक्ति को निकट की वस्तुएँ साफ दिखाई देती हैं परंतु दूर की वस्तुएँ साफ दिखाई नहीं देती हैं क्योंकि आँख के लैंस द्वारा निर्मित प्रतिबिंब रेटिना से पूर्व बन जाता है।

प्रकाश की किरण

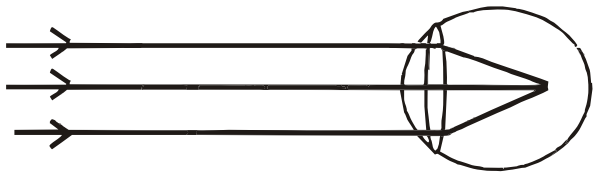

दोष निवारणः– इस दृष्टि दोष के निवारण के लिए अवतल लैंस लगाया जाता है जो दूर से आने वाली किरणों को थोड़ा अपसारित कर देता है जिस कारण प्रतिबिंब रेटिना पर बनता है।

अवतल लैंस

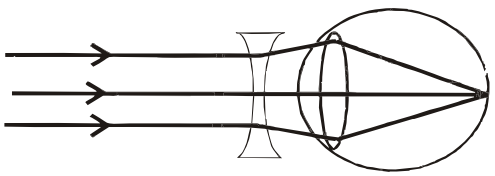

दूर दृष्टि दोषः– दोष से पीड़ित व्यक्ति को दूर की वस्तुएँ तो साफ दिखाई देती है परंतु निकट की वस्तु साफ दिखाई नहीं देती है क्योंकि नेत्र लैंस द्वारा बनने वाला प्रतिबिंब रेटिना के पीछे बनाता है।

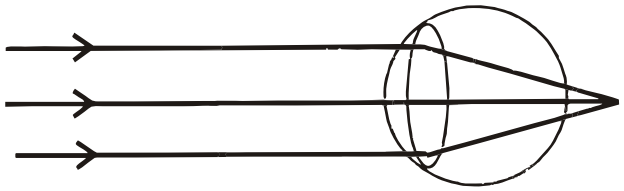

दोष निवारण:– इस दोष के निवारण के लिए उत्तल लैंस का प्रयोग किया जाता है जिससे प्रतिबिंब आँख के रेटिना पर बनता है निकट की वस्तुएँ साफ दिखाई देती हैं।

उत्तल लैंस

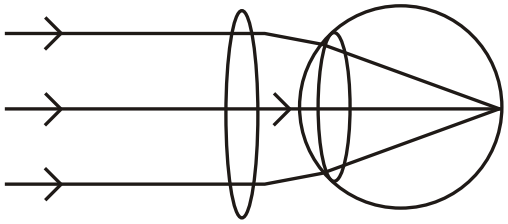

याद रखने की ट्रिक:– दोष–निकट राखै निकट, दूर ले जाय दूर। (किरणों के मिलाप की रेटिना से स्थिति के संबंध में)

दूर–उत्तल (दो अक्षर वाले दोष का निवारण तीन अक्षर वाले लेंस से)

निकट–अवतल (तीन अक्षर वाले दोष का निवारण चार अक्षर वाले लेन्स से)

(अक्षरों की संख्या के आधार पर याद रखा जा सकता है।)

प्राध्यापक,
रा.आ.उ.मा.वि. जेजुसर
(झुंझुनूं)
मो: 9414743265

Golden Rays : Poetry

❐ **विनोद कुमार जांदू**

माध्यमिक परीक्षा में अंग्रेजी विषय में Poetry में Explanation with reference to context का प्रश्न (प्रश्न संख्या–23) 4 अंक का पूछा जाता है। इसमें reference, context and explanation निम्नलिखित table और पंक्तियाँ याद करके इनका उपयोग कर प्रश्न को हल कर सकते हैं–

Reference:- These lines have been taken from the poem.....(poem का नाम) composed by the poet..... (Poet का नाम)

Context:- In these lines, the poet tells about.....(context)

Explanation:- These lines are good example of the poet..... (Poet का नाम)'s style. The poet has tried his/her best to justify the title. In these lines the poet.....(theme).

S. No.	Poem	Poet	Context	Theme
1	Risks	Janet Rand	risks	says that life is full of risks. It's necessary to take risk to succeed.
2	My Good Right Hand	C. Mackay	importance of hardwork	says that none is trustworthy in he world except hard work and God
3	The Lotus	Toru Dutt	supremacy of lotus overs lily and rose.	says that the lotus is supreme among all the flowers. Symbolically it is the victory of indian culture over the western world.
4	An Elegy on the Death of a Mad Dog	Oliver Goldsmith	a small incident satirically.	laments over the death of a mad dog..

Senior Teacher,
Govt. Sec. School, Ginnani Panwarsar, Bikaner
Mobile- 9414967760

त्रुटि निवारण

❐ **महेन्द्र कुमार शर्मा**

जब मैं शिक्षा स्नातक कर रहा था तब पाठ्ययोजना में प्रतिदिन 'द्वितीय सोपान' शब्द लिखना पड़ता था। मैं सुन्दर शब्दों में योजना लिखकर ले जाता था। हिन्दी के प्राध्यापक 'द्वितिय' शब्द पर गोला बना देते थे। यह गोला मेरे मस्तिष्क को झकझोर देता। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं गलती कहाँ कर रहा हूँ।

हमेशा की तरह मैं पाठ योजना की जाँच करवा रहा था, 'द्वितिय' शब्द पर फिर गोला लगा, आज मैंने अपने संकोच को तोड़कर प्राध्यापक महोदय से पूछ ही लिया ''गुरुजी, क्या मैं यह शब्द गलत लिखता हूँ?'' वे मेरी तरफ हँसते हुए बोले ''हाँ, यह शब्द तुम गलत लिखते हो,'' उन्होंने एक तरफ 'द्वितीय' शब्द लिखा और कहा–''इस शब्द की यह शुद्ध वर्तनी है।' ''मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं कहाँ गलती कर रहा हूँ।''

''मुझे मेरी अशुद्धि मालूम हुई, मैं द्वितीय शब्द में 'त' पर 'ई' की मात्रा के स्थान पर 'इ' की मात्रा लगाता था, मैं 'द्वितिय' शब्द को ही शुद्ध समझता था, मुझे अपने पर पूर्ण विश्वास था कि मैं इस शब्द को शुद्ध रूप में लिख रहा हूँ, इस घटना के पूर्व किसी ने मेरा इस अशुद्धि की ओर ध्यान आकर्षित नहीं किया, प्राध्यापक महोदय में मेरी पूर्ण श्रद्धा थी, मैंने मेरी त्रुटि स्वीकार की और इस शब्द को एक हजार बार लिखा।

आज भी 'द्वितीय' शब्द लिखता हूँ तब यह घटना याद आ जाती है, मेरे जैसे अनेक छात्र इस तरह की वर्तनी संबंधित अशुद्धियाँ करते हैं, समय पर अध्यापक इस तरह की अशुद्धियाँ दूर कर देते हैं तो दूर हो जाती है अन्यथा बनी रहती है, अध्यापक वह कुम्हार है जिसके द्वारा गीली मिट्टी से बर्तन बनाते समय दोष दूर हो जाते हैं तो दूर हो जाते हैं अन्यथा वे रह जाते हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
4167–68, खाटा ओली, नसीराबाद
(अजमेर)राजस्थान
मो. 8290421099

जयन्ती विशेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती

❒ सत्यनारायण सोनी

शताब्दियों की पराधीनता के कारण संसार की प्राचीनतम सभ्यता और संस्कृति का मूल केन्द्र आर्यावर्त अत्यन्त दीन, हीन तथा सोचनीय दशा को प्राप्त हो चुका था। यह देश धर्म, समाज तथा संस्कृति के क्षेत्र में अनेकानेक अन्धविश्वासों, कुरीतियों तथा रुढ़ियों के चक्र में फँस गया। नारियों पर अत्याचार सती-प्रथा, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, विधवा-उत्पीड़न और मूढ़ विश्वास विराट समाज की धर्म-भावनाओं को खोखला कर चुके थे। ऐसे ही अन्धकाराच्छान्न भारतीय क्षितिज पर दयानन्द सरस्वती नामक एक जाज्वल्यमान नक्षत्र का उदय हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म सन् 1824 ई. में गुजरात के सौराष्ट्र प्रदेश के मौरवी राज्यान्तर्गत टंकारा नामक गाँव में हुआ था। उनका बचपन का नाम मूलशंकर जो बाद में महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से यशस्वी हुए पिता का नाम करसन जी तिवारी एवं माता का नाम अमृत बाई था। उनके पिता शैव धर्म के कट्टर अनुयायी थे। जब दयानन्द की आयु 14 वर्ष की थी तो उनके पिताजी ने उन्हें शिवरात्री का व्रत रखने की आज्ञा दी एवं पूजा करने की विधि सिखायी तथा कहा कि ''तुमको पूर्ण रात्रि जागरण करना होगा।'' रात्रि में दयानन्द के अलावा अधिकांश को नींद आ गई दयानन्द जिज्ञासु थे उन्हें नींद नहीं आई वे शिव मन्दिर में शिवलिंग को देखते रहे तभी एक चूहे को शिवजी के मन्दिर में शिवलिंग पर उछल-कूद कर प्रसाद खाते देखा। इस घटना को देखकर उन्होंने सोचा कि जो भगवान चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर सकता, भला दूसरों की रक्षा क्या करेगा? तभी से वह मूर्ति-पूजा के विरोधी बन गए। मन्दिर का प्रसंग जब दयानन्द ने अपने पिता को बताया तब पिता ने कहा ''तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है।'' कुछ समय बाद दयानन्द की छोटी बहिन एवं चाचा की असामयिक मृत्यु हो गई। दयानन्द ने सोचा व्यक्ति मरने के बाद कहाँ जाता है'', उनमें इस प्रकार के कई वैराग्य पूर्ण प्रश्न पैदा होने लगे। पिता ने दयानन्द के वैराग्य पूर्ण व्यवहार को देख दयानन्द का विवाह करने की सारी तैयारियाँ 21 वर्ष की आयु में पूर्ण कर ली। उसी दौरान दयानन्द अपना घर छोड़कर सच्चे शिव की खोज में निकल गए। 24 वर्ष की

अवस्था में उनकी भेंट स्वामी पूर्णानन्द से हुई जिन्होंने उनको संन्यास देकर दण्ड ग्रहण कराया और उनका नाम मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती रख दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ईश्वर के सम्बन्ध में किसी भी संन्यासी या मठों के संचालकों से संतुष्ट नहीं हुए और सच्चे शिव की खोज में निरन्तर आगे बढ़ते गए। अनेक जंगलों, गुफाओं, पर्वतों, हिमालय के बर्फीले पहाड़ों अनेक साधु संन्यासियों से मिले लेकिन कहीं भी सच्चे शिव की प्राप्ति नहीं हुई। सन् 1861 में वे भ्रमण करते हुए मथुरा (उत्तर प्रदेश) में प्रज्ञाचक्षु संन्यासी विरजानन्द की कुटिया पर आए और कुटिया का दरवाजा खट-खटाया ''अन्दर से आवाज आई 'कौन'? तब स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कहा कि ''यहीं जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ?'' फिर दयानन्द सरस्वती ने स्वामी विरजानन्द से वैदिक शिक्षा प्राप्त की। स्वामी जी अपने गुरु की आज्ञा के बिना कोई कार्य नहीं करते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त उन्होंने अपने गुरु को गुरु दक्षिणा में लौंग भेंट किए तो स्वामी विरजानन्द ने दयानन्द से कहा ''मुझे गुरु दक्षिणा में लौंग नहीं तुम्हारा जीवन चाहिए।'' दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द को वचन दिया कि वह जीवनभर बिना किसी भेदभाव के वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर देश का उपकार करेंगे। उन्होंने अपने जीवन में अनेकानेक शास्त्रार्थ किए, हरिद्वार के कुम्भ मेले में पाखण्ड-खण्डनी पताका फहराई और आर्थिक उन्नति के लिए गोरक्षा को आवश्यक मानते हुए गोरक्षा के लिए आन्दोलन किए। स्वामी जी को कई बार उनके विरोधियों द्वारा विष दिया गया लेकिन उन्होंने 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' के आधार पर विषदाता को भी क्षमादान दिया। स्वामी जी व्यक्ति को कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र मानते थे। दयानन्द ने अपनी उत्कृष्ट ब्रह्मचर्य साधना के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि ब्रह्मचारी अपनी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास करने में समर्थ होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रारम्भ से ही समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं कुरीतियों के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने वर्ण-व्यवस्था, बाल-विवाह, बहुविवाह तथा मांसाहार का प्रबल विरोध किया। हिन्दू समाज अनेक मत-पंथों में बंट गया। वैदिक संस्कृति पतन की कगार पर थी ऐसी विषम परिस्थितियों में देश एवं संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने 10 अप्रैल 1875 के दिन मुम्बई शहर में प्रथम 'आर्यसमाज' की स्थापना की। उन्होंने कहा ''आर्य समाज का मतलब 'श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज' है। जिसका मुख्य उद्देश्य आर्यावर्त की वैदिक संस्कृति की रक्षा, वेदों का प्रचार करना, जाति-पाँति का उन्मूलन, मूर्तिपूजा का विरोध करना, स्त्रियों का उत्थान और शिक्षा पर बल देना है। बाल-विवाह का विरोध, विधवा-विवाह का प्रचार-प्रसार, दुःखी-दरिद्रों की सहायता, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग, जनतंत्र पद्धति का विकास, राष्ट्रीय संस्कृति, हिन्दी भाषा एवं गोरक्षा का प्रसार, पाखण्डों, अंधविश्वासों का भण्डाफोड़ एवं सम्पूर्ण मानव जाति को अंधकार से प्रकाश की ओर लाने के लिए 'आर्य समाज के दस नियम' दिए जो अपने आप में प्रामाणिक सत्य है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के लिए भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं शिक्षाविद् डॉ. शंकरदयाल

शर्मा ने कहा कि ''स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने एक स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज की स्थापना के उद्देश्य से ही आर्य समाज की स्थापना की थी। उन्होंने अपने समय के समाज में प्रचलित कर्मकाण्डों, आडम्बरों, अंधविश्वासों तथा रुढ़ीगत परम्पराओं का पूरे साहस के साथ विरोध किया। दयानन्द सरस्वती ने जिस आर्य समाज की स्थापना की थी उसका हमारे देश में शिक्षा के विकास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दयानन्द सरस्वती ने लड़कियों के लिए शिक्षा की बात कहकर अपने समय के समाज में हलचल पैदा की थी।''

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के बारे में मिथ्या धारणाओं को दूर करने की दृष्टि से वेदों के नवीन भाष्य किए जिनमें 'बहुदेववाद' की खण्डना की गई। स्वामी जी ने वेदों को ही समस्त ज्ञान का मूल माना एवं एक ईश्वर की उपासना पद्धति बताई। उनकी मान्यता है कि ''वेद ही ईश्वर के वचन का, सत्य का भण्डार है। जिसमें सम्पूर्ण मानवता का विकास है।'' स्वामी जी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अपने उपदेशों एवं ग्रन्थों का माध्यम हिन्दी भाषा को ही बनाया। स्वामी जी राष्ट्रीयता के जन्मदाता एवं स्वराज्य में स्वदेशी के प्रथम उद्घोषक रहे। उन्होंने उपदेशों में स्वधर्म, स्वभाषा तथा स्वदेशी भावनाओं को जन्म दिया। उन्होंने अपने स्वलिखित अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है कि ''विदेशियों का राज्य सुखदायी नहीं होता, भारत भारतवासियों के लिए है।'' देश की आजादी में महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी विचारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वामी जी का मानना था कि यदि राजाओं को उपदेश दिया जाए तो प्रजा स्वतः अनुसरण कर लेती है क्योंकि 'यथा राजा तथा प्रजा'। उन्होंने उदयपुर के महाराणा, जोधपुर के महाराजा एवं शाहपुरा के महाराजा सहित अनेक राजाओं को वैदिक उपदेश दिए। महाराणा सज्जनसिंह जी की अध्यक्षता में उन्होंने परोपकारिणी सभा का गठन किया जिसका मुख्यालय वर्तमान में अजमेर में है। शाहपुरा से ही स्वामी जी जोधपुर महाराजा के निमंत्रण पर 31 मई 1883 को जोधपुर पहुँचे, वहाँ मियाँ फैजुल्ला बाग में स्वामी को ठहराया गया। स्वामी जी क्षत्रियों और विशेषतः राजाओं के कुपथगामी होने, मदिरा-शिकार के व्यसनों में शक्ति तथा समय का अपव्यय करने के अत्यधिक विरोधी थे। यह यहाँ के वासिन्दों को पचा नहीं। उन्होंने स्वामी जी के पाचक (रसोईये) को प्रलोभन देकर संखिया दे दिया जिससे उनका शरीर क्षीण होने लगा। उन्हें जोधपुर से चिकित्सा के लिए माउंटआबू लाया गया जहाँ कोई इलाज नहीं हो सका। जहर फैलता गया रोग बढ़ता गया। अन्त में स्वामी जी अजमेर आए। कार्तिक अमावस्या दीपावली 30 अक्टूबर, 1883 मंगलवार को अपने अंतिम शब्दों में ''हे प्रभो! तेरी यही इच्छा थी, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा, तूने कैसी लीला की।'' इस प्रकार परमात्मा से अभिमुख होकर महान आस्तिक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी भौतिक लीला संवरण की।

वरिष्ठ सहायक
राजकीय पायलट माध्यमिक विद्यालय
केकड़ी, अजमेर- 305404
मो: 9414556999

रपट

69वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह

❑ मदन मोहन मोदी

26 जनवरी,2018 को निदेशालय माध्यमिक शिक्षा परिसर में 69 वें गणतन्त्र दिवस समारोह का ध्वजारोहण नवीन मुख्य प्रशासनिक भवन के समक्ष माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल द्वारा किया गया । श्री डिडेल ने अपने उद्बोधन में भारतीय संविधान के सबसे बड़ा व लिखित होने को इंगित करते हुए बताया कि पूरे विश्व में भारत सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इसी अवसर प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री पी.सी. किशन ने संविधान के इतिहास के बारे में जानकारी दी तथा सम्मानित कार्मिक को बधाई दी।

निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा में कार्यरत निम्नांकित कार्मिकों को राजकीय सेवा में उत्कृष्ट कार्य करने के फलस्वरूप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा एवं निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा के करकमलों द्वारा प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित कार्मिकों की सूची :-

क्र. स.	नाम व पद	अनुभाग
1.	श्री झंवरलाल मारू, सहायक कर्मचारी	निजी अनुभाग (निदेशक)
2.	श्री मोडाराम गुर्जर, वरिष्ठ सहायक	सामान्य प्रशासन
3.	विजय कुमार शर्मा, सहायक कर्मचारी	निजी अनुभाग (अति.निदेशक)
4.	दुधेश्वर पालीवाल, कनिष्ठ सहायक	आदर्श विद्यालय प्रकोष्ठ
5.	दीपक कुमार खत्री, वरिष्ठ सहायक	पेंशन स्थिरीकरण अनुभाग
6.	जगदीश प्रसाद जोईया, सहायक प्रशासनिक अधिकारी	छात्रवृत्ति प्रकोष्ठ
7.	देवराज जोशी, सहायक कर्मचारी	बजट अनुभाग
8.	संजय पुरोहित, सहा.सांख्यिकी अधिकारी	सांख्यिकी अनुभाग
9.	वन्दना स्वामी,सूचना सहायक	बजट अनुभाग
10.	जयप्रकाश राणा, सूचना सहायक	शिविरा प्रकाशन
11.	श्रीकांत व्यास, सूचना सहायक	सुगम प्रकोष्ठ
12.	कविता गहलोत, सूचना सहायक	रोकड़ अनुभाग
13.	आनन्द सिंह, सहायक कर्मचारी	रोकड़ अनुभाग
14.	गोविन्द सिंह, वरिष्ठ सहायक	शाला दर्पण
15.	अनिल कुमार, कनिष्ठ सहायक	शाला दर्पण

वरिष्ठ सहायक
निदेशालय मा.शि.राज.बीकानेर
मो. 9414425757

जयंती विशेष

महान् शिक्षाविद्-डॉ. जाकिर हुसैन

❒ कमल नारायण पारीक

डॉ. जाकिर हुसैन का जन्म 8 फरवरी सन् 1897 ई. को दक्षिण के हैदराबाद नगर में हुआ था। उनकी बाल्यकाल की शिक्षा फरूखाबाद जिले के इटावा इस्लामिया हाईस्कूल में हुई थी। हाईस्कूल पास करने के बाद उच्च शिक्षा पाने के लिए अलीगढ़ विश्वविद्यालय गए।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय से एम.ए.की परीक्षा पास की। कॉलेज से अपनी शिक्षा पूरी करके युवा जाकिर हुसैन के लिए राष्ट्रीय चेतना के विकास का उपयुक्त माध्यम शिक्षा थी। अपने सपनों को साकार रूप देने के लिए जाकिर साहब ने जामिया-मिलिया को अपना कर्मक्षेत्र चुना।

जाकिर साहब जामिया-मिलिया में अपना अध्यापन का कार्य करने लगे। जामिया-मिलिया में आने के बाद जाकिर हुसैन ने अर्थशास्त्र में अपना- अनुसंधान कार्य आगे बढ़ाना चाहा। अर्थशास्त्र में अनुसंधान करने के लिए वे बर्लिन चले गए।

बर्लिन में इन्होंने अर्थशास्त्र के विद्वान वर्नर सोम्बति के मार्ग निर्देशन में अपना-अनुसंधान कार्य पूर्ण कर 'डि.फिल' की उपाधि प्राप्त की। वर्नर सोम्बाति के सम्पर्क में आने पर जाकिर साहब ने भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने पर बल दिया। अंग्रेजी के व्यवहार के बदले वे फारसी लिपि में अपना अभिभाषण हिन्दी में तैयार कर लेते थे और विधानमंडल तथा संसद में हिन्दी में ही बोलते थे।

जामिया मिलिया के प्रति उनका अगाध प्रेम था। एक बार जामिया-मिलिया के प्रबन्धकों ने इसे बन्द करने का विचार किया तो जाकिर साहब ने कहा कि ''हम हिन्दुस्तान लौटें तब तक जामिया-मिलिया को जिन्दा रखिए।''

अपने वतन लौटकर जाकिर साहब 29 वर्ष की अल्पायु में ही जामिया-मिलिया के उपकुलपति बन गए। 1926 ई. से 1948 ई. तक वे उपकुलपति रहे। जाकिर साहब की विशेषता थी कि वे प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाना अधिक पसन्द करते थे।

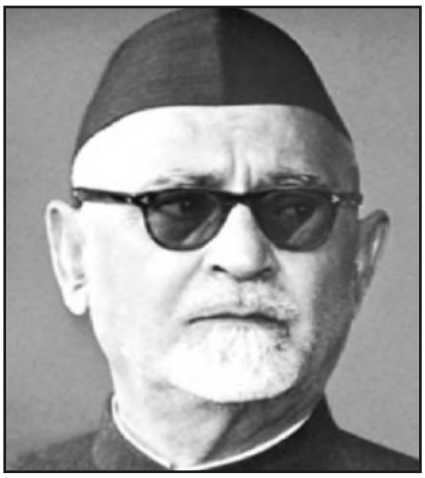

सन् 1938 ई. में गाँधीजी ने 'हिन्दुस्तानी तालीम संघ' की सेवा ग्राम में स्थापना की, उस समय से लेकर 1959 ई. तक इनका इससे घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। सन् 1948 ई. से 1956 ई. तक वे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। सन् 1956 ई. से 1958 ई. तक इन्होंने युनेस्को की कार्य समिति में सदस्य के रूप में कार्य किया। जाकिर साहब के अनुसार गणतंत्र भारत के प्रत्येक नागरिक को शिक्षित करना आवश्यक है अन्यथा गणतंत्र विफल हो जाएगा। हमारे धर्म निरपेक्ष देश के लिए शिक्षा ही 'जीवन वायु' है।

सन् 1948 ई. में वे राज्यसभा के सदस्य चुने गए तथा 1957 ई. तक वे राज्य सभा के सदस्य रहे। 1954 ई. में भारत सरकार ने उनकी शिक्षा सेवाओं के लिए 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1957 ई. में इन्हें बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया गया। सन् 1962 ई. में जाकिर हुसैन भारत के उपराष्ट्रपति चुने गए। सन् 1963 ई. में भारत सरकार ने उन्हें 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया। तदन्तर सन् 1967 ई. में जाकिर हुसैन भारत के तीसरे राष्ट्रपति के रूप में इस सर्वोच्च पद पर पदासीन हुए।

डॉ. जाकिर हुसैन की अनेक पुस्तकें हिन्दी भाषा में लिखी हुई है जो कि शिक्षा से संबंधित हैं। इन्होंने विदेशी भाषा की अनेक पुस्तकों का हिन्दी और उर्दू में अनुवाद किया।

3 मई 1969 ई. को 72 वर्षीय डॉ. जाकिर हुसैन का हृदयाघात के कारण निधन हो गया। डॉ. जाकिर हुसैन बहुत सरल स्वभाव के थे। उन्हें बड़प्पन का अभिमान तनिक भी नहीं छू पाया था। डॉ. जाकिर हुसैन महान् शिक्षाविद् थे। जाकिर साहब की बुनियादी तालीम के प्रति बहुत निष्ठा थी। डॉ. साहब सच्चे अर्थ में शिक्षक थे। वे अपने विद्यार्थियों से बहुत प्यार करते थे उनकी पूरी खोज खबर रखते थे। उनका हृदय बहुत कोमल था, वे बड़े रहम दिल इन्सान थे।

एक बार की बात है, जब वे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे, उस समय यूनिवर्सिटी का सत्र शुरू ही हुआ था। दाखिले की भीड़भाड़ के कारण छात्रावास भर चुका था। ऐसी स्थिति में गरीब देहाती बच्चों को छात्रावास में जगह नहीं मिली तो वे सब डरते-काँपते जाकिर साहब के पास गए और उन्हें अपनी स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने डॉक्टर साहब को बताया कि हमारी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है, हम शहर के खर्चों को नहीं झेल सकते। लगता है सर हमारे भाग्य में पढ़ाई नहीं है। जाकिर साहब सिर झुकाए सुनते रहे और फिर बोले जब तुम जैसे नेक दिल छात्रों के लिए जगह नहीं है तब फिर मुझे एक बड़े भवन में रहने का क्या हक है? तुम्हें जरूर जगह मिलेगी। अगले दिन ही उन्होंने उन छात्रों को छात्रावास में जगह दिलवा दी।

ऐसे थे हमारे महान् शिक्षक, लेखक और राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन। डॉ. जाकिर हुसैन का व्यक्तित्व महान् और गरिमामय था। धार्मिक सहिष्णुता उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी।

एक बार उन्होंने कहा था- ''दूसरा माने न माने, मैं इन्सान को हिन्दू, मुसलमान या ईसाई की दीवार से ऊँचा मानता हूँ।''

सेवानिवृत्त अध्यापक
1/131 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी
हनुमानगढ़ जं.-335512
मो. 94144-74636

पुण्यतिथि

एकात्म मानववाद

❒ अमित शर्मा

एकात्म मानववाद के प्रणेता पण्डित दीनदयाल उपाध्याय एक लेखक, साहित्यकार, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, राष्ट्रवादी इतिहासकार, समाजशास्त्री तथा भारतीय विचारक थे। इनका जन्म 25 सितम्बर 1916 धानक्या नामक छोटे से गाँव में हुआ था। लोकतंत्र के समर्थक होने के बावजूद भी इन्होंने पश्चिम की धर्मनिरपेक्ष अवधारणा और पश्चिमी लोकतांत्रिक विचारधारा का विरोध किया था। इनके द्वारा दिया गया एकात्म मानववाद का सिद्धान्त भारत की सनातन विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। इनके अनुसार प्रगति का सम्बन्ध मानव सुख से जुड़ा है लेकिन यह विकास वर्तमान स्थापित समाज व भविष्य की पीढ़ियों के लिए बाधक नहीं बने यह सुनिश्चित करना जरूरी है। सनातन विचारधारा में इस संसार को सन्तुलित, स्वस्थ व सुन्दर बनाए रखने के गुण हैं।

भौतिक सुख-सुविधाओं के अत्यधिक उपयोग ने प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन को बढ़ावा दिया है। पश्चिमी राष्ट्र प्रगति की दौड़ में आने वाली पीढ़ियों को प्रकृति के अमूल्य वरदानों से वंचित कर रहे हैं। इन संसाधनों पर किसी एक राष्ट्र का ही अधिकार नहीं होना चाहिए जो कि अपनी वैज्ञानिक प्रगति के कारण इनका दोहन करना स्वयं का अधिकार मान बैठा है। संसाधनों का सीमित उपयोग और आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करना मानवता के अनुकूल है। एकात्म मानववाद इसका समर्थक है। यह सिद्धान्त शरीर, मन, बुद्धि व प्रकृति का समन्वय करता है। इनके अनुसार दार्शनिक भी एक वैज्ञानिक ही होता है।

दार्शनिक व्यक्ति सत्य की खोज समाज की प्रयोगशाला में व्यक्तियों के विचारों और उनके दृष्टिकोण को प्रकृति अनुकूल व मानवता को ध्यान में रखते हुए करता है। इन्होंने भारतीय संस्कृति को अपने जीवनदर्शन का आधार बनाया। संस्कृति से अभिप्राय किसी समाज के जीवन जीने की शैली तथा पद्धति है जो उनके मन, रुचि, आचार-विचार, भाषा, स्वागत-सत्कार से झलकती है। लोकतंत्र व राष्ट्रवाद पश्चिमी उपहार नहीं होकर भारतीय संस्कृति से जुड़ी धारणा है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान, जीने का अधिकार तथा विचारों की

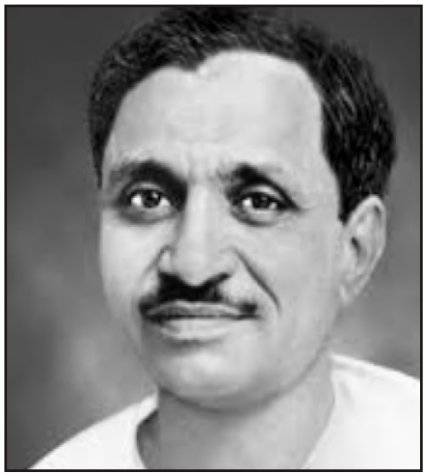

स्वतंत्रता पूर्व से ही निहित है। उनका मानना यह है कि भारत के विकास का आधार पश्चिम के साम्यवादी व पूंजीवादी विचारधारा नहीं हो सकता। देश का कौशल पश्चिम की अवधारणाओं में दब जाएगा और विकास की राह से भटक जाएगा। अत: हमें भारतीय अवधारणाओं के अनुकूल ही देश की आर्थिक नीतियों का निर्धारण करना चाहिए। राष्ट्रीयता को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा था कि ''हमारी राष्ट्रीयता का आधार 'भारत माता' है, केवल भारत नहीं। माता शब्द हटा दीजिए तो केवल जमीन का एक टुकड़ा मात्र रह जाएगा। इस भूमि का और हमारा ममत्व तब आता है, जब माता वाला संबंध जुड़ता है, कोई भी भूमि तब तक देश नहीं कहला सकती, जब तक उसमें किसी समाज का मातृक ममत्व न हो यानि ऐसा ममत्व जैसा पुत्र का माता के प्रति होता है। यही 'देशभक्ति' है।'' उनका मन निर्मल व संवेदनशील था। एक घटना इस प्रकार प्रस्तुत है-

''अरे नाना, भूल हो गयी।'' बाजार से घर लौटते समय अचानक ठिठक कर पं. दीनदयाल उपाध्याय ने श्री नानाजी देशमुख से कहा-''मेरी जेब में चार पैसे थे, जिनमें एक पैसा खोटा था। दो पैसे शाक-भाजीवाली उस बूढ़ी माँ को देने के बाद अब जो दो पैसे बचे हैं वे दोनो खरे हैं। निश्चय ही खोटा पैसा शाक-भाजीवाली बूढ़ी के पास चला गया है। चलो, वापस जाकर उसे अच्छा पैसा दे आयें।''

यह घटना सन् 1940 की है जब दीनदयाल जी.एम.ए. पढ़ने और नानाजी देशमुख समाज सेवा करने आगरा गए थे और साथ-साथ रहते थे। उनके मुख पर अपराधी का भाव था। शाकवाली को जब उन्होंने बात बतायी तो उसने कहा-''अरे, अब कौन तुम्हारे खोटे पैसे को खोजने बैठेगा? जाओ, जाओ, जो दिया है वही ठीक है।'' पर दीनदयाल जी कहाँ मानने वाले थे। उन्होंने उस वृद्धा के पैसों के ढेर में से खोज-खोज कर अपना खोटा पैसा ढूँढ़ ही निकाला। उसके बदले उस को एक खरा पैसा देने के बाद उनके मुख पर तृप्ति का भाव झलक उठा। बूढ़ी अम्मा भी प्रसन्न हो गयीं, बोली- ''भगवान तेरा भला करे।'' संतुष्टि ईमानदारी का सबसे बड़ा ईनाम है।

उपाध्याय जी ने 'सम्राट चन्द्रगुप्त', 'जगद्गुरु शंकराचार्य' और 'एकात्म मानववाद' सहित अन्य पुस्तकें लिखी थी। उनका निधन 11 फरवरी 1968 को मुगल सराय रेलवे स्टेशन पर हुआ।

शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा)
अजमेर मण्डल, अजमेर
मो: 9251037377

वीरता

''वीरता से आगे बढ़ो। एक दिन या एक साल में सिद्धि की आशा न रखो। उच्चतम आदर्श पर दृढ़ रहो, स्थिर रहो। स्वार्थपरता और ईर्ष्या से बचो। आज्ञा पालन करो। सत्य, मनुष्यता और अपने देश के पक्ष पर सदा के लिए अटल रहो। याद रखो, व्यक्ति और उसका जीवन ही शक्ति का स्रोत है, इसके सिवाय अन्य कुछ भी नहीं।''

-स्वामी विवेकानन्द

विज्ञान दिवस

प्राचीन भारत और विज्ञान

❒ दीपक जोशी

आधुनिक युग में विज्ञान ने कई नए आविष्कारों एवं सिद्धांतों को जन्म दिया है। परन्तु उन सभी का उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रंथों, पुराणों तथा वेदों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पहले से ही मौजूद हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में निहित विज्ञान के गूढ़ रहस्य असीमित एवं आश्चर्यजनक है।

देश में स्वाभिमान जगाने हेतु प्रख्यात वैज्ञानिक/आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय का मद्रास में हिन्दू रसायन शास्त्र पर सन् 1918 में दिया एक भाषण विचारणीय है, जिसमें उन्होंने अपने देश के अवदान के बारे में गौरव अवबोध का आह्वान किया था। उनके शब्द थे- ''We are not ashamed of our ancient contribution to the science of chemistry. I am equally proud of and not ashamed for all the branches of science that grew in ancient India.''

प्राचीन भारत के ऋषि-मुनियों ने अपने ग्रंथों में वर्तमान वैज्ञानिक सिद्धांतों एवं आविष्कारों की व्याख्या प्रमाण सहित कई हजार वर्षों पूर्व ही कर दी थी। अतः उन्हें मात्र दार्शनिक विचारों की संज्ञा देना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। उनमें से कुछ उदाहरण आपके सम्मुख प्रस्तुत हैः-

परमाणु सिद्धांतः जोन डॉल्टन

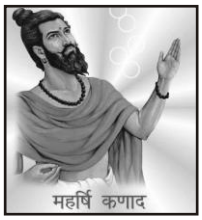
महर्षि कणाद

(1766-1844) जो कि एक ब्रिटिश रसायन तथा भौतिक वैज्ञानिक थे, को परमाणु सिद्धांत का जनक माना जाता है। जबकि डॉल्टन से लगभग 2500 वर्ष पूर्व ही एक भारतीय ऋषि तथा दार्शनिक जिनका नाम महर्षि कणाद था, ने परमाणु सिद्धांत की आधारशिला रख दी थी। महर्षि कणाद ने अपने वैशेषिक सूत्रों में यह बताया कि प्रत्येक पदार्थ छोटे-छोटे कणों (परमाणु-परम अणु) से बना होता है। जो कि एक अविभाज्य कण होता है। महर्षि कणाद का वास्तविक नाम महर्षि कश्यप था।

चिकित्सा विज्ञान : भारत की विश्व को

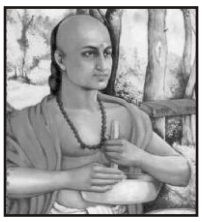

सबसे बड़ी देन आयुर्वेद एवं योग है। अथर्ववेद में आयुर्वेद के कई सूत्र मिल जाएँगे, जिनके आधार पर महर्षि धन्वन्तरी, चरक, च्यवन और सुश्रुत ने विश्व को पेड़-पौधों और वनस्पतियों पर आधारित चिकित्सा शास्त्र दिया। चरक संहिता में स्वस्थ मनुष्य की दी गई परिभाषा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र से अधिक व्यापक तथा उपयुक्त है।

समदोषः समाग्निश्च समधातुमूलक्रियः।
प्रसन्नातमेन्द्रियमनाः स्वस्थो इत्यमिधीयते।।
(चरक संहिता)

अर्थात् जिसका त्रिदोष (वात, पित, कफ), सप्तधातु, मूल प्रवृत्ति आदि क्रियाएँ संतुलित अवस्था में हो, साथ ही आत्मा, इन्द्रियाँ एवं मन प्रसन्न स्थिति में हो, वही स्वस्थ मनुष्य कहलाता है। महर्षि चरक (400-200 ईसा पूर्व) के आयुर्वेद के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'चरक संहिता' में आचार्य चरक ने शरीर शास्त्र, गर्भशास्त्र, रक्ताभिसरण शास्त्र, औषधि शास्त्र आदि विषयों में गंभीर शोधों का उल्लेख किया तथा मधुमेह, वातरोग, क्षयरोग, हृदय रोग आदि अनेक रोगों के निदान एवं औषधोपचार विषयक अमूल्य ज्ञान को बताया। जिसने आधुनिक एलोपेथी चिकित्सा पद्धति की आधारशिला रखी।

चरक संहिता में औषधि की दृष्टि से 341 वनस्पतिजन्य, 177 प्राणिजन्य, 64 खनिज द्रव्यों का उल्लेख है। इसी प्रकार सुश्रुत संहिता में 385 वनस्पतिजन्य, 57 प्राणिजन्य तथा 64 खनिज द्रव्यों से औषधीय प्रयोग व विधियों का वर्णन है। इनसे चूर्ण, आसव, काढ़ा, अवलेह आदि अनेक रूपों में औषधियाँ तैयार होती थी।

चरक संहिता में सोना, चाँदी, लोहा, पारा आदि धातुओं के शुद्धीकरण तथा उनसे निर्मित भस्मों की निर्माण विधि एवं उनके उपयोग की विधि बताई गई है अर्थात् प्राचीन भारत भी धातुकर्म की विभिन्न विधियों से पूर्णतः परिचित था। आठवीं शताब्दी में चरक संहिता का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ और यह शास्त्र पश्चिमी देशों तक पहुँचा। महर्षि चरक तथा च्यवन के ज्ञान पर आधारित ही युनानी चिकित्सा पद्धति का विकास हुआ।

शल्य चिकित्सा विज्ञान एवं प्लास्टिक सर्जरी : भारत में महर्षि सुश्रुत को पहला शल्य

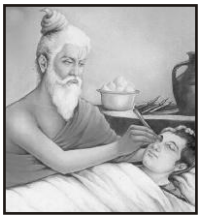

चिकित्सक माना जाता है, जिनकी रचना 'सुश्रुत संहिता' प्रसिद्ध है। महर्षि सुश्रुत ने लगभग 600 ईसा पूर्व अपने समय के स्वास्थ्य वैज्ञानिकों के साथ प्रसव, मोतियाबिंद, कृत्रिम अंग लगाना, हड्डी जोड़ना, पथरी का ईलाज, राइनोप्लास्टी, मस्तिष्क शल्य क्रिया और प्लास्टिक सर्जरी जैसी कई तरह की जटिल शल्य चिकित्सा के सिद्धांत प्रतिपादित किए थे, हालांकि कुछ लोग सुश्रुत का काल 800 ईसा पूर्व का मानते हैं।

महर्षि सुश्रुत ने अपने साथियों के साथ 3000 से भी ज्यादा शल्य क्रियाएँ की थी। उन्हें 125 स्वनिर्मित चिकित्सकीय औजारों में सिद्धहस्त माना जाता था, जिन्हें वे उबालकर (निर्जमीकरण) उपयोग करते थे। ऐनेस्थीसिया का उपयोग भी प्राचीन भारत में भलीभाँति किया जाता था, जबकि आधुनिक विज्ञान केवल 400 वर्ष पूर्व ही शल्य क्रिया करने लगा है। सुश्रुत द्वारा वर्णित शल्य क्रियाओं के नाम इस प्रकार है- 1. छेद्य (छेदन हेतु), 2. भेद्य (भेदन हेतु) 3. लेख्य (अलग करने हेतु), 4. वेध्य (शरीर से हानिकारक द्रव्य निकालने हेतु), 5. ऐष्य (नाड़ी में घाव ढूँढ़ने के लिए), 6. अहार्य (हानिकारक उत्पत्तियों को निकालने के लिए), 7. विश्रव्य (द्रव निकालने के लिए), 8. सीण्य (घाव सीलने के लिए)।

योग विज्ञान : योग विज्ञान विश्व को

भारत की एक महत्त्वपूर्ण देन है। योग विज्ञान के

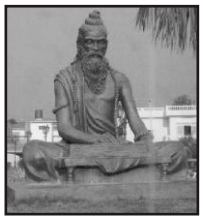

जनक महर्षि पतंजलि को माना जाता है। उनके द्वारा बताई गई 84 योग क्रियाएँ प्रभावी रूप से मानव शरीर के समस्त अंगों व तंत्रों की कार्य क्षमता बढ़ाने का कार्य करती है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की फिजियोथेरेपी चिकित्सा पूर्णतः प्राचीन योग चिकित्सा पर ही आधारित है।

खगोल विज्ञान : सम्पूर्ण विश्व को

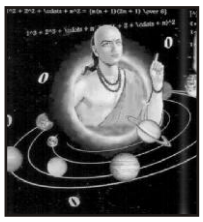

खगोल विज्ञान देने का श्रेय भारत को ही जाता है। वेद मानव सभ्यता के सबसे पुराने लिखित दस्तावेज है। ऋग्वेद में खगोल विज्ञान से संबंधित 30 श्लोक है, यजुर्वेद में 44 तथा अथर्ववेद में 162 श्लोक है। वैदिक काल में खगोल विज्ञान को ज्योतिष कहा जाता था। 'वेदांगा ज्योतिषा' में सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रों व सौरमंडल के ग्रहों और ग्रहण के विषय में जानकारी दी गई है। साथ ही संपूर्ण ब्रह्माण्ड की गति व स्थिरता का भी विवरण मिलता है।

आचार्य आर्यभट्ट प्राचीन भारत के एक महान खगोल विज्ञानी तथा गणितज्ञ थे। उन्होंने वेदों, उपनिषद् आदि का अध्ययन करके खगोल विज्ञान तथा खगोलीय गणना पर आधारित अपनी पुस्तक 'आर्यभट्टीयम' की रचना की। आर्यभट्ट पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने पृथ्वी, ग्रहों तथा अन्य खगोलीय पिण्डों की गति की गणना का सिद्धांत दिया। आर्यभट्ट ने सर्वप्रथम यह बताया कि पृथ्वी गोल है तथा सूर्य के चारों ओर अपने अक्ष पर घुमते हुए परिक्रमण करती रहती है। इसके 1000 वर्ष बाद कॉपरनिकस ने अपनी हेलियोसेंट्रिक थ्योरी में इन सबका उल्लेख किया।

सूर्योदय-सूर्यास्त-भूमि गोलाकार होने के कारण विविध नगरों में रेखांतर होने के फलस्वरूप अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग समय पर सूर्योदय व सूर्यास्त होते हैं, इसे आर्यभट्ट ने ज्ञात कर लिया था, वे लिखते हैं-

उदयो यो लंकायां सोस्तमयः
सवितुरेव सिद्धपुरे।
मध्याह्नो यवकोट्यां रोमक
विषये अर्द्धरात्रः स्यात्।। (आर्यभट्टीयम)

अर्थात् जब लंका में सूर्योदय होता है, तब सिद्धपुर में सूर्यास्त हो जाता है। तब यवकोटि में मध्याह्न तथा रोमक प्रदेश में अर्द्धरात्रि होती है।

चंद्र सूर्यग्रहण: आर्यभट्ट ने कहा कि राहुकेतु के कारण नहीं, अपितु पृथ्वी व चंद्र की छाया के कारण ग्रहण होता है।

छादयति शशी सूर्य शशिनं महती च भूच्छाया।।
(आर्यभट्टीयम)

अर्थात् पृथ्वी की बड़ी छाया जब चन्द्रमा पर पड़ती है तो चन्द्रग्रहण होता है। इसी प्रकार चन्द्र जब पृथ्वी और सूर्य के बीच आता है तो सूर्यग्रहण होता है।

विभिन्न ग्रहों की दूरी-आर्यभट्ट ने सूर्य से विविध ग्रहों की दूरी के बारे में बताया है। वह आजकल के माप से मिलता-जुलता है। आजकल पृथ्वी की सूर्य से दूरी (1.5×10^8 किमी=15 करोड़ किमी.) है। इसे एयू (खगोलीय इकाई- Astronomical Unit) कहा जाता है। इस अनुपात के आधार पर निम्न सूची बनती है-

ग्रह	आर्यभट्ट का मान	वर्तमान मान
बुध	0.375 एयू	0.387 एयू
शुक्र	0.725 एयू	0.723 एयू
मंगल	1.538 एयू	1.523 एयू
गुरु	5.16 एयू	5.20 एयू
शनि	9.41 एयू	9.54 एयू

महर्षि वराहमिहिर ने अपनी रचना 'पंच सिद्धांतिका' में यह उल्लेख किया कि चंद्रमा तथा ग्रह स्वयं के प्रकाश से नहीं बल्कि सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं।

गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत: भास्कराचार्य

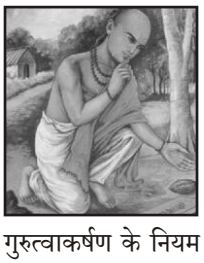

प्राचीन भारत के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री थे। आइजेक न्यूटन से 550 वर्ष पूर्व ही भास्कराचार्य ने गुरुत्वाकर्षण के नियम को जान लिया था और उन्होंने अपने ग्रंथ 'सिद्धांत शिरोमणि' में इसका उल्लेख भी किया।

मरुच्चलो भूरचला स्वभावतो यतो
विचित्रावतवस्तु शक्त्यः।
आकृष्टिशक्तिश्च महीतया यत् खस्थं
गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या
आकृष्यते तत्पततीव भाति
समेसमन्तात् क्व पतत्वियं खे।।
(सिद्धांत शिरोमणि)

अर्थात् पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है। पृथ्वी अपनी आकर्षण शक्ति से भारी पदार्थों को अपनी ओर खींचती है और आकर्षण के कारण वह जमीन पर गिरते हैं। पर जब आकाश में समान ताकत चारों ओर से लगे, तो कोई कैसे गिरे? अर्थात् आकाश में ग्रह निरवलम्ब रहते हैं, क्योंकि विविध ग्रहों की गुरुत्व शक्तियाँ संतुलन बनाए रखती है। भास्कराचार्य ने बताया कि वास्तव में पृथ्वी गोल है और हम विशाल पृथ्वी के गोले के छोटे भाग को ही देख पाते हैं, जो सपाट दिखाई पड़ता है।

विमान शास्त्र : आधुनिक विमान का

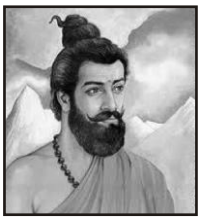

आविष्कार राइट बंधुओं ने 1903 में किया था। परन्तु उनसे हजारों वर्ष पूर्व महर्षि भारद्वाज द्वारा रचित ग्रंथ 'यंत्र सर्वस्व' के 'वैमानिक शास्त्र' में विमान की संरचना तथा निर्माण की विधि का वर्णन मिलता है। महर्षि भारद्वाज द्वारा लिखित 'वैमानिक शास्त्र' में उड़ने वाले यंत्र 'विमान' के कई प्रकारों का वर्णन किया गया तथा हवाई युद्ध के कई नियम व प्रकार बताए गए थे।

महर्षि भारद्वाज ने अपने 'वैमानिक शास्त्र' के जरिए वायुयान को गायब करने के असाधारण विचार से लेकर एक ग्रह से दूसरे ग्रह व एक दुनिया से दूसरी दुनिया में ले जाने के रहस्य उजागर किए। विमान शास्त्र में वर्णित तीन अद्भुत धातुएँ हैं- 1. तमोगर्भलौह 2. पंचलौह 3. आरर। जिनमें तमोगर्भलौह धातु विमान को अदृश्य करने के काम आती थी, इस पर प्रकाश छोड़ने से ये 75-80 प्रतिशत प्रकाश को सोख लेती थी।

रसायन शास्त्र : प्राचीन भारत में अनेक रसायनज्ञ हुए जिनकी कुछ कृतियाँ निम्नानुसार हैं-

वाग्भट्ट- रसरत्न समुच्चय

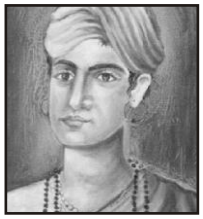

रसरत्न समुच्चय ग्रंथ में निम्न-रस रसायनों का उल्लेख किया गया है- 1. महारस, 2. उपरस, 3. सामान्यरस, 4. रत्न, 5. धातु, 6. विष, 7. क्षार, 8. अम्ल, 9. लवण, 10. लौह भस्म

नागार्जुन-रसरत्नाकर, कक्षपुततंत्र, आरोग्य मंजरी

गोविन्दाचार्य-रसार्णव

यशोधर-रस प्रकाश सुधाकर

रामचन्द्र- रसेन्द्र चिंतामणि

सोमदेव- रसेन्द्र चूड़ामणि

उक्त ग्रंथों में विभिन्न धातुओं, अधातुओं, उनके विभिन्न यौगिकों तथा भस्मों इत्यादि की स्पष्ट व्याख्या मिलती है। साथ ही विभिन्न धातुओं के धातुकर्म तथा भस्म निर्माण विधियों का विस्तृत उल्लेख है।

प्रयोगशाला-'रसरत्न समुच्चय' में

रसशाला यानि प्रयोगशाला का विस्तार से वर्णन है। इसमें 32 से अधिक यंत्रों का उपयोग किया जाता था, जिनमें मुख्य हैं- 1. दोलयंत्र, 2. स्वेदनी यंत्र, 3. पाटन यंत्र, 4. अधस्पंदन यंत्र, 5. ढेकी यंत्र, 6. बालुक यंत्र, 7. तिर्यक पाटन यंत्र, 8. विधाधर यंत्र, 9. धूप यंत्र, 10. कोष्ठि यंत्र, 11. कच्छप यंत्र, 12. डमरू यंत्र।

गति के नियम : डॉ. एन. जी. डोगरे ने अपनी पुस्तक 'The Physics' में वैशेषिक सूत्रों के ईसा की प्रथम शताब्दी में लिखे गए 'प्रशस्तपाद भाष्य' में उल्लिखित वेग संस्कार और न्यूटन द्वारा 1675 में खोजे गए गति के नियमों की तुलना की है। महर्षि कणाद के भाष्य को तीन भागों में विभाजित करें तो न्यूटन के गति संबंधी नियमों से इसकी समानता ध्यान आती है।

i. वेगः निमित्तविशेषात् कर्मणो जायते।
The Change of motion is due to impressed force (Principia)

ii. वेगः निमितापेक्षात् कर्मणो जायते नियत्दिक् क्रिया प्रबंध हेतुः।
The change of motion is proportional to the motive force impressed and is made in the direction of the right line in which the force is impressed (Principia)

iii. वेगः संयोगविशेषरोधी।
To every action there is always an equal and opposite reaction (Principia)

विद्युत का आविष्कार : विद्युत (बिजली) के

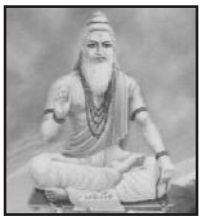

आविष्कार का श्रेय बैंजेमिन फ्रैंकलिन को दिया गया है। महर्षि अगस्त्य जिनकी गणना सप्तर्षियों में की जाती है ने 'अगस्त्य संहिता' नामक ग्रंथ की रचना की। आश्चर्यजनक रूप से इस ग्रंथ में विद्युत उत्पादन से संबंधित सूत्र मिलते हैं, जिसमें उन्होंने विद्युत बैटरी की संरचना व निर्माण विधि बतायी।

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्।
छादयेच्छिखिग्रीवेन चार्द्राभिः काष्ठपांसुभिः।।
दस्तालोष्टो निधातव्यः पारदाच्छादितस्ततः।
संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरुणसंज्ञितम्।।

(अगस्त्य संहिता)

अर्थात् मिट्टी का एक पात्र लें, उसमें ताम्र पट्टिका (Copper Sheet) डाले तथा शिखिग्रीवा (Copper sulphate) डालें, फिर बीच में गीली काष्ठ पांसु (Wet saw dust) लगाएँ, ऊपर पारा (Murcury) तथा दस्त लोष्ट (Zinc) डालें, फिर तारों को मिलाएँगे तो उससे मित्रावरुणशक्ति (Electricity) का उदय होगा। अगस्त्य संहिता में विद्युत का उपयोग इलेक्ट्राप्लेटिंग के लिए करने का विवरण मिलता है। उन्होंने बैटरी द्वारा तांबे या सोने या चांदी की पॉलिश चढ़ाने की विधि खोजी। अतः महर्षि अगस्त्य को कुभोद्भव (Battary Born) भी कहते हैं।

ये सब तो बस कुछ ही उदाहरण है, रहस्य तो असीमित है। खुद आदरणीय ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कई बार कहा था कि उन्हें प्राचीन भारतीय ग्रंथों से मिसाइल बनाने की प्रेरणा मिलती थी। महर्षि विश्वामित्र को प्राचीन भारत में प्रेक्षापास्त्र विज्ञान का जनक माना जाता है, उन्होंने तपोबल द्वारा भगवान शिव से अस्त्र विद्या अर्जित की थी। अल्बर्ट आइंस्टीन ने भी कई बार प्राचीन भारतीय ग्रंथों की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। हिटलर भी प्राचीन भारतीय ग्रंथों पर अध्ययन कर टाइम मशीन बनाना चाहते थे।

सही मायने में हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति व सभ्यता की महिमा की प्रशंसा जितनी की जाए उतनी कम है। ऐसे ही सदियों तक भारतवर्ष को 'विश्वगुरु' का दर्जा नहीं दिया गया। लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस भौतिकवादी युग में हमारा सम्बन्ध विच्छेद होता जा रहा है- अपनी संस्कृति एवं सभ्यताओं से, हमारे ग्रंथों, वेदों और पुराणों से।

पाश्चात्य संस्कृति की चमक हमें अंधा किए जा रही है। हमारे देश की प्रतिभा विदेशों में पलायन कर रही है। क्या यह हमारे लिए चिंता का विषय नहीं है? अगर है तो हम सभी भारतीयों का उत्तरदायित्व है कि अपनी भावी पीढ़ियों में 'राष्ट्रवाद' तथा 'राष्ट्रहित सर्वोपरि' की भावना जाग्रत करें। तभी भारतवर्ष पुनः विश्वगुरु के सिंहासन पर विराजमान हो सकेगा।

व.अ. विज्ञान
रा.मा.वि. श्रीरामसर, बीकानेर
मो: 9660727221

आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2018

1. राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एन.पी.एस.) से सम्बन्धित राज्य कर्मचारियों की बकाया लीगेसी राशि सीआरए/ट्रस्टी बैंक को स्थानान्तरित करने बाबत।
2. परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु अभिनव कार्य योजना (प्रयास-2018) में प्रदत्त निर्देशों की पालना के सम्बन्ध में।

1. राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एन.पी.एस.) से सम्बन्धित राज्य कर्मचारियों की बकाया लीगेसी राशि सी.आर.ए./ट्रस्टी बैंक को स्थानान्तरित करने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/पेंशन-अ/34925/पी-2/2012 दिनांकः 05.01.2018 ● उपनिदेशक, माध्यमिक (समस्त) जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक (समस्त) ● विषयः राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एन.पी.एस.) से सम्बन्धित राज्य कर्मचारियों की बकाया लीगेसी राशि सी.आर.ए./ट्रस्टी बैंक को स्थानान्तरित करने बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, राज.-जयपुर के पत्रांक P.149/NPS/लीगेसी राशि/2015-16/4972 दिनांक 11.12.2017 के क्रम में वित्त विभाग की अधिसूचना संख्या प.13(1)/वित्त/नियम/2013 दिनांक 02.08.2005 के द्वारा दिनांक 01.01.2004 अथवा उसके पश्चात् सीधी भर्ती से नव नियुक्त राज्य कर्मचारियों पर राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली लागू की गई है। राज्य सरकार के आदेश दिनांक 27.08.2009 के द्वारा पी.एफ.आर.डी.ए. आर्किटेक्चर के अन्तर्गत राज्य कर्मचारियों की एन.पी.एस. राशि सेन्ट्रल रिकॉर्ड कीपिंग एजेन्सी एवं ट्रस्टी बैंक को स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया गया है तथा राज्य सरकार द्वारा विभाग को निर्देशित किया गया है कि कर्मचारियों के बैलेन्स की सूचना एवं राशि शीघ्रातिशीघ्र सम्बन्धित एजेन्सी को स्थानान्तरित की जावे।

इसी क्रम में विभाग द्वारा 01.01.2004 से 31.10.2011 तक एन.पी.एस. अंशदाताओं की जमा एन.पी.एस. राशि (लीगेसी राशि) का सत्यापन कर मय ब्याज सी.आर.ए. को अपलोड करते हुए ट्रस्टी बैंक को राशि हस्तान्तरित करने की कार्यवाही की जा रही है परन्तु विभिन्न कारणों से सत्यापन के अभाव में अभी भी अनेक एन.पी.एस. अंशदाताओं की लीगेसी राशि को हस्तान्तरित किया जाना शेष है। जिसमें आपके विभाग से सम्बन्धित कार्मिकों की राशि भी सम्मिलित है। समय पर राशि हस्तान्तरित नहीं होने के कारण कार्मिकों को उनकी जमा राशि पर प्रतिफल प्राप्त नहीं हो रहा है। राज्य सरकार एवं प्रधान महालेखाकार राजस्थान द्वारा अवशेष लीगेसी राशि शीघ्र हस्तान्तरण करने के निर्देश दिए गए हैं।

इसी क्रम में निवेदन है कि लीगेसी राशि अपलोड करने के लिए प्रत्येक एन.पी.एस. अंशदाता की नियुक्ति दिनांक 01.01.2004 से दिनांक 31.10.2011 तक प्राप्त निजी एवं राजकीय अंशदान की राशि का पूर्ण सत्यापन कर मय ब्याज एक मुश्त राशि का कर्मचारी वार सी.आ.ए./ट्रस्टी बैंक को हस्तान्तरित किया जाना होता है। पूर्ण सत्यापन के अभाव में राशि का हस्तान्तरण संभव नहीं हो पाता है। राशि का सत्यापन नहीं होने के मुख्यतः निम्न कारण हैः-

1. आहरण एवं वितरण अधिकारियों से कर्मचारियों के वांछित एन.पी.एस. कटौती पत्रों का प्राप्त नहीं हो पाना।
2. एन.पी.एस. कटौती पत्रों में पीपीन नम्बर अंकित नहीं होना अथवा गलत अंकित होना।
3. एन.पी.एस. कटौती पत्रों में पीपीन नम्बर, प्रान नम्बर अथवा एम्पलोयी आई. डी. का मिलान ना होना आदि।

उक्त सूचनाएँ सम्बन्धित आहरण एवं वितरण अधिकारियों द्वारा ही उपलब्ध करवायी जाती है, जिसके लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। इस सम्बन्ध में विभागीय जिलाधिकारियों द्वारा भी सम्बन्धित आहरण एवं वितरण अधिकारियों से नियमित सम्पर्क किया जा रहा है, परन्तु वांछित सूचना/सहयोग प्राप्त नहीं होने से अवशेष लीगेसी राशि अपलोड किया जाना संभव नहीं हो पा रहा है।

अतः आपसे अनुरोध है कि आपके विभाग से सम्बन्धित कर्मचारियों की जिनकी लीगेसी राशि अपलोड होनी शेष है, के सम्बन्ध में वांछित अभिलेख एवं सूचना बीमा विभाग के जिला अधिकारी को तत्काल उपलब्ध करवाने हेतु आपके अधीनस्थ आहरण एवं वितरण अधिकारियों को निर्देश जारी करावें ताकि राज्य सरकार के निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जा सके। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि एन.पी.एस. की राशि सी.आर.ए./ट्रस्टी बैंक को स्थानान्तरित नही होने पर विलम्ब के लिए सम्बन्धित विभाग/अधिकारी उत्तरदायी होंगे।

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु अभिनव कार्ययोजना (प्रयास-2018) में प्रदत्त निर्देशों की पालना के सम्बन्ध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर क्रमांकः शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/प्रयास 2018/19 दिनांकः 18.01.2018 ● 1.समस्त मण्डल उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय ● विषयः- परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु अभिनव कार्य योजना (प्रयास-2018) में प्रदत्त निर्देशों की पालना के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर के तत्वावधान में माध्यमिक परीक्षा-2018 हेतु बोर्ड परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु निर्मित अभिनव कार्य योजना (प्रयास-2018) के तहत दिनांक 17.01.2018 को संबंधित मण्डल/जिला मुख्यालयों पर स्थित डी.एल.एस.आर. में आयोजित बैठक में पारस्परिक विमर्श पश्चात लिए गए निर्णय के क्रम में उक्त कार्य योजना की सम्पूर्ण रूप रेखा पत्र के संलग्न प्रेषित है। तदनुसार कार्ययोजना में प्रदत्त निर्देशों की क्षेत्राधिकार में समुचित

पालना/क्रियान्विति करवाई जानी सुनिश्चित करें।

● संलग्न: यथोपरि।

● **(नथमल डिडेल),** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रयास–2018 ● (कक्षा 10 के बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु अभिनव कार्य योजना)

प्रस्तावना –

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर के तत्वावधान में माध्यमिक परीक्षा–2017 में बोर्ड परीक्षा परिणामों में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु विगत वर्ष क्रियान्वित कार्य योजना–2017 के अच्छे परिणाम प्राप्त हुए थे। निदेशालय द्वारा माध्यमिक परीक्षा के परिणामों के विश्लेषण एवं समीक्षा उपरांत यह तथ्य उभर कर सामने आया कि राजकीय विद्यालयों में कक्षा 10 के परीक्षा परिणाम के संख्यात्मक व गुणात्मक रूप से न्यून रहने के मूल में गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों में विद्यार्थियों का कमजोर प्रदर्शन है। विगत वर्ष प्राप्त सुखद परिणाम के अनुवर्तन में माध्यमिक परीक्षा–2018 में भी विद्यार्थियों के प्रदर्शन में उत्तरोत्तर सुधार हेतु कार्ययोजना प्रयास–2018 निर्मित की गई है। इस योजना का भी मूल उद्देश्य राज्य के राजकीय विद्यालयों में कक्षा 10 के परीक्षा परिणाम का गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टि से उन्नयन करना है। इस हेतु निदेशालय स्तर पर किए गए अध्ययन में सम्पूर्ण राज्य में इन तीनों लक्षित विषयों (गणित, अंग्रेजी व विज्ञान) में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राजकीय विद्यालयों में कार्यरत विषयाध्यापकों को चिह्नित किया जाकर उन्हें सम्बन्धित विषय में MENTOR TEACHER (मार्गदर्शक शिक्षक) माना जाकर न्यून परिणाम देने वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु अकादमिक सम्बलन प्रदान करने का दायित्व दिए जाने का निर्णय किया गया है। उक्त योजना का विशिष्ट उद्देश्य अपेक्षाकृत कठिन पाए गए इन तीनों विषयों में विद्यार्थियों की वर्तमान समझ में अभिवृद्धि कर परीक्षा परिणामों की गुणवत्ता में सुधार लाना है। इस हेतु समस्त विद्यालयों में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को विशिष्ट शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करवाई जाएगी। MENTOR (मार्गदर्शक) शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त और अनुभूत नवाचारी शिक्षण विधा एवं उपागमों की जानकारी विभागीय माध्यम से समस्त विषयाध्यापकों को दी जाएगी, जिसका अनुप्रयोग परीक्षा प्रारम्भ होने की समयावधि तक अभियान स्तर पर किया जाना है।

2. अवधि–

इस कार्य योजना की अवधि माध्यमिक परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व 14 मार्च 2018 तक रहेगी।

3. दायित्व –

अ. निदेशालय स्तर–

प्रयास–2018 के प्रभावी प्रबोधन हेतु निदेशालय स्तर पर श्री अरुण शर्मा, सहायक निदेशक (माध्यमिक) सम्पूर्ण राज्य हेतु नोडल अधिकारी एवं श्री सुभाष माचरा, शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी , सह नोडल अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे। वे इस कार्य योजना के सम्पूर्ण राज्य में सुचारु संचालन हेतु सतत् पर्यवेक्षण एवं मोनिटरिंग करेंगे।

लक्षित विषयों के परीक्षा परिणाम के मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार के लिए तैयार की जाने वाली शैक्षिक सामग्री हेतु अग्रांकित मण्डल उपनिदेशकों को विषयवार नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाता है। इन्हें सहयोग प्रदान करने के लिए सहायक नोडल अधिकारी तथा अकादमिक सहयोग हेतु नाम के समक्ष अंकितानुसार अकादमिक संस्थाओं को दायित्वबद्ध किया जाता है:–

क्र. सं.	विषय	विषयवार नोडल अधिकारी	सहायक नोडल अधिकारी	अकादमिक सहयोग	कार्यशाला आयोजन की तिथियाँ
1.	अंग्रेजी	मण्डल उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, चूरू	जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–प्रथम, सीकर	अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान, I.A.S.E., बीकानेर	23 से 24 जनवरी–2018
2.	गणित	मण्डल उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, उदयपुर	जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–प्रथम, उदयपुर	विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (C.T.E.), उदयपुर	29 से 30 जनवरी–2018
3.	विज्ञान	मण्डल उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, अजमेर	जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–प्रथम, नागौर	राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, अजमेर	31 जनवरी से 01 फरवरी–18

विषयवार नियुक्त नोडल अधिकारियों द्वारा उक्त दायित्व मण्डल अधिकारी के दायित्वों के अतिरिक्त निभाया जाना है। वे इस हेतु विषयवार उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यालयों के सम्बन्धित विषय के शिक्षकों/विज्ञ शिक्षकों की राज्य स्तरीय कार्यशाला समक्ष अंकित तिथियों के अनुरूप आयोजित करेंगे। इन कार्यशालाओं में मण्डल स्तरीय कार्यशालाओं में MENTOR शिक्षकों द्वारा तैयार की गई परीक्षोपयोगी

सामग्री का सम्बन्धित शिक्षकों द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जाएगा। प्रस्तुत सामग्री की समीक्षा कार्यशाला में उपस्थित विषय विशेषज्ञों द्वारा की जाएगी। राज्य स्तरीय कार्यशाला में उपस्थित विषय विशेषज्ञों द्वारा गहन विश्लेषणोपरांत परीक्षोपयोगी अध्ययन सामग्री को अंतिम रूप दिया जाएगा, जो प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सके। यह अध्ययन सामग्री विषय विशेष हेतु बोर्ड द्वारा निर्देशित ब्ल्यू प्रिन्ट तथा बोर्ड के प्रश्न पत्रों के पैटर्न के आधार पर तैयार की जाएगी। इस सामग्री की सॉफ्ट व हार्ड प्रति तैयार की जाएगी। इस सामग्री को विभाग के जिला कार्यालयों के मार्फत राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में भिजवाया जाएगा।

ब. मण्डल स्तर–

- समस्त मंडल उपनिदेशक (माध्यमिक) कार्य योजना 'प्रयास–2018' की सुचारु क्रियान्विति हेतु क्षेत्राधिकार (मण्डल) के नोडल अधिकारी होंगे। ये अधिकारी अपने क्षेत्राधिकार में इस कार्य योजना के प्रभावी संचालन के लिए उत्तरदायी होंगे।
- मण्डलाधिकारी द्वारा अधीनस्थ जिलों से MENTOR शिक्षकों की सूची प्राप्त कर तीनों लक्षित विषयों की राज्य स्तरीय कार्यशालाओं से पूर्व मण्डल क्षेत्राधिकार में तीनों विषयों की पृथक्–पृथक् कार्यशालाएँ आयोजित की जाएगी, जिसमें सम्बन्धित MENTOR शिक्षकों एवं विषय विज्ञों द्वारा विषय के भिन्न–भिन्न TOPICS पर प्रदर्शन पाठ एवं अध्ययन सामग्री के अवलोकनोपरान्त चयनित MENTOR शिक्षकों (मय शैक्षिक सामग्री) को राज्य स्तरीय कार्यशाला में भाग लेने हेतु भिजवाए जाने की कार्यवाही सम्पादित की जाएगी।
- कार्य योजना की मण्डल क्षेत्राधिकार में सुनिश्चित क्रियान्विति हेतु बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने तक सप्ताहवार अग्रिम योजना बनाकर तदनुरूप परिवीक्षण करेंगे। इन परिवीक्षणों में न्यून परिणाम वाले विद्यालयों को प्राथमिकता प्रदान करते हुए अवलोकनोपरांत वांछित सम्बलन एवं सहयोग प्रदान किया जाना सुनिशिचित करेंगे। उक्त कार्य योजना को परिणामोन्मुखी बनाए जाने की सुनिशिचितता हेतु सम्पूर्ण मंडल के राजकीय विद्यालयों में इसके नियमित संचालन एवं प्रबोधन हेतु मण्डल कार्यालय में नियंत्रण कक्ष की स्थापना करेंगे, जिसके प्रभारी मण्डल कार्यालय में कार्यरत सहायक निदेशक (शैक्षिक प्रकोष्ठ) होंगे,जो क्षेत्राधिकार के जिलों में शैक्षिक सामग्री के निर्माण एवं वितरण हेतु पूर्णत: जिम्मेदार होंगे।

स. जिला स्तर–

जिला स्तर पर इस कार्य योजना के प्रभावी संचालन, प्रबोधन तथा प्रतिदिन आधार पर निर्मित कार्य योजना के क्रियान्वयन एवं सतत् पर्यवेक्षण का दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में कार्यरत अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक प्रकोष्ठ) का होगा। उक्त कार्य में ADPC (RMSA) द्वारा परिवीक्षण एवं प्रबोधन हेतु समुचित सहयोग प्रदान किया जाएगा। सम्बन्धित पदेन DPC (RMSA) एवं जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उक्त सम्बन्ध में दोनों अधीनस्थ अधिकारियों को दायित्वबद्ध किया जाना सुनिश्चित किया जाए।

जिला शिक्षा अधिकारी स्वयं विद्यालयों में संचालित कार्य योजना 'प्रयास–2018' की क्रियान्विति का अधिकाधिक अवलोकन करते हुए सम्बलन प्रदान करेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी अपने क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों में उक्त महत्त्वपूर्ण शैक्षिक कार्य योजना के सार्थक संचालन हेतु अनुकूल वातावरण विकसित करने के लिए समस्त संस्थाप्रधानों को प्रेरित करने का कार्य करेंगे तथा इस हेतु विद्यालय की सारभूत आवश्यकताओं एवं समस्याओं की यथासम्भव पूर्ति/निराकरण करने हेतु सम्बलन प्रदान करेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी सम्बन्धित लक्षित विषयों के नोडल अधिकारियों से शैक्षिक/अध्ययन सामग्री प्राप्त कर संलग्न समय–सारिणी के अनुरूप क्षेत्राधिकार के विद्यालयों को वितरित करने हेतु उत्तरदायी होंगे।

समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर के तत्वावधान में माध्यमिक परीक्षा–2018 हेतु बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु निर्मित अभिनव कार्य योजना के तहत दिनांक 17.01.2018 को सम्बन्धित मण्डल/जिला मुख्यालयों पर स्थित DLSR में आयोजित बैठक में पारस्परिक विमर्श पश्चात लिए गए निर्णयानुसार मण्डल स्तर पर तीनों लक्षित विषयों हेतु पृथक् – पृथक् आयोजित की जाने वाली कार्यशालाओं में अपने जिले से विषयवार MENTOR शिक्षकों तथा विषय विज्ञों को भिजवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।

कार्यशालाओं में अध्ययन सामग्री तैयार करवाते समय ध्यान रखने योग्य बिन्दु :–

- यह सामग्री प्रकरण वार तथा बोर्ड पाठ्यक्रम में प्रदत्त अंक भार के अनुरूप हो।
- सामग्री तैयार करते समय बोर्ड प्रश्नपत्र के ब्ल्यू प्रिंट को ध्यान में रखा जाए।
- यह सामग्री इस प्रकार से निर्मित की जाए, जिससे कमजोर लब्धि वाले विद्यार्थी अपने प्रदर्शन में सुधार कर सके तथा अच्छी और उत्कृष्ट लब्धि वाले विद्यार्थी भी अपनी लब्धि को उच्चतम स्तर तक ले जा सके।
- इस सामग्री में विषयवस्तु के साथ MENTOR शिक्षक द्वारा प्रयोग में लाई जा रही तकनीक का भी उल्लेख हो।
- इस सामग्री की भाषा सरल और बोधगम्य हो ताकि प्रत्येक स्तर का विद्यार्थी इसका उपयोग आसानी से कर सके।
- सामग्री में प्रश्नों के हल करने के उचित तरीकों का विवरण हो, जिससे विद्यार्थी की लब्धि में वृद्धि हो सके।
- MENTOR शिक्षकों द्वारा जटिल प्रत्ययों को याद रखने के लिए सुझाए गए शॉर्टकट तरीकों का भी उल्लेख हो, जिससे समस्त स्तर के विद्यार्थी इसे ग्राह्य कर अपनी लब्धि में वृद्धि कर सके।
- सामग्री में विषय से सम्बन्धित उन बातों का उल्लेख भी हो, जिनके सामान्य प्रयोग से विद्यार्थी अपनी लब्धि में वृद्धि कर सके।

द. विद्यालय स्तर–

संस्थाप्रधानों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यालय में अनुकूल और प्रेरक वातावरण का निर्माण कर विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्थान एवं परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु निर्मित कार्य योजना 'प्रयास–2018' के प्रभावी संचालन द्वारा अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने हेतु समस्त स्टाफ को

प्रेरित करने में निर्णायक भूमिका का निर्वहन करेंगे।

संस्थाप्रधान आगामी 26 जनवरी को विद्यालय में आयोज्य गणतंत्र दिवस समारोह में उपस्थित आगन्तुकों तथा अध्यापक-अभिभावक परिषद् (PTA) की आगामी 15 फरवरी को आयोज्य बैठक में अभिभावकों को इस कार्य योजना बाबत् विस्तृत जानकारी देंगे तथा कार्य योजना की क्रियान्विति अवधि में कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों की विद्यालय में शत-प्रतिशत उपस्थिति हेतु अभिभावकों को प्रेरित करेंगे। संबंधित संस्थाप्रधान का दायित्व होगा कि वे जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से प्राप्त विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन हेतु प्रदत्त विशिष्ट शैक्षिक सामग्री का उपयोग करते हुए समस्त विषयों के पाठ्यक्रम-दोहरान (Revision) करवाएँगे। संस्थाप्रधान प्रत्येक सप्ताह अध्ययन करवाए गए विषय हेतु साप्ताहिक टैस्ट लिए जाने की व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे।

4. कार्य योजना हेतु समय-सारिणी

क्र. सं.	सम्पादित की जाने वाली कार्यवाही का विवरण	निर्धारित तिथि
1.	संस्था प्रधान एवं स्टाफ द्वारा कक्षा 10 के समस्त विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि के सम्बन्ध में अभिभावकों को अवगत करवाना। बैठक में अभिभावकों को इस कार्य योजना बाबत् विस्तृत जानकारी दिया जाना तथा कार्य योजना की क्रियान्विति अवधि में कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों की विद्यालय में शत-प्रतिशत उपस्थिति हेतु अभिभावकों को प्रेरित करना।	पारस्परिक वार्त्ता द्वारा एवं 26.01.18 तथा 15.02.18 को आयोजित समारोह/बैठक के दौरान
2.	समस्त मण्डल उप निदेशकों द्वारा माध्यमिक परीक्षा में गणित, अंग्रेजी तथा विज्ञान विषयों में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाले विषयाध्यापकों (MENTOR TEACHER) एवं विषय विशेषज्ञों की कार्यशालाओं का आयोजन।	राज्य स्तरीय कार्यशाला के आयोजन से पूर्व
3.	अंग्रेजी विषय हेतु राज्य स्तरीय कार्यशाला का राउमावि., ढांढ़ण, सीकर में आयोजन।	23 से 24 जनवरी- 2018
4.	गणित विषय हेतु राज्य स्तरीय कार्यशाला का गुरु गोविन्द राउमावि., उदयपुर में आयोजन।	29 से 30 जनवरी- 2018
5.	विज्ञान विषय हेतु राज्य स्तरीय कार्यशाला का राउमावि., परबतसर, नागौर में आयोजन।	31 जनवरी से 01 फरवरी-2018
6.	विषयवार नियुक्त नोडल अधिकारी द्वारा सामग्री की सॉफ्ट प्रति Ms Word में तैयार करवाई जाकर (देवनागरी लिपि हेतु DevLys 010 फॉन्ट व अंग्रेजी लिपि हेतु Times New Roman फॉन्ट का प्रयोग करते हुए तैयार की जानी है) राज्य के समस्त मण्डल उपनिदेशक (माध्यमिक) तथा जिला शिक्षा अधिकारियों को तत्काल उपलब्ध करवाया जाना।	दिनांक: 24.01.18 से विषयवार कार्यशालाओं के समापन तक
7.	जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्राप्त अध्ययन/शैक्षिक सामग्री को क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों में वितरित करना।	दिनांक: 24.01.18 से सामग्री प्राप्ति तक
8.	विद्यालयों में कक्षा 10 के समस्त विद्यार्थियों के लिए आवश्यकतानुसार उपचारात्मक शिक्षण तथा गहन अध्यापन कार्यक्रम का नियमित संचालन। इस दौरान प्रयास-2018 के तहत प्राप्त सामग्री का व्यापक उपयोग किया जाए।	दिनांक: 25.01.18 से 25.02.18 तक
9.	बोर्ड पैटर्न पर प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजन। उक्त परीक्षा में विद्यार्थियों के प्रदर्शन एवं परिणाम के सम्बन्ध में प्रत्येक विद्यार्थी से व्यक्तिश: बातचीत कर उसके काठिन्य(Weak Points) से अवगत करवाना तथा इसके निवारणार्थ विशेष प्रयास करने हेतु प्रेरित करना।	दिनांक: 26.02.18 से 28.02.18
10.	बोर्ड परीक्षा हेतु तैयारी अवकाश के दौरान प्री-बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों के प्रदर्शन के मूल्यांकन पश्चात् विषयवार काठिन्य (Weak Points) के आधार पर विद्यार्थियों को विद्यालय में बुलाकर सुपरवाइज्ड स्टडी (संबंधित विषयाध्यापक द्वारा सम्मुख बैठा कर) करवाया जाना।	दिनांक: 03.03.18 से बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ (15.03.18) होने तक

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

आवश्यक सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। ● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अत: अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। ● कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।

-वरिष्ठ संपादक

माह : फरवरी, 2018	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.2.2018	गुरुवार	जयपुर	8	संस्कृत	परीक्षामाला	
2.2.2018	शुक्रवार	उदयपुर	10	हिन्दी	परीक्षामाला	
3.2.2018	शनिवार	जयपुर	10	विज्ञान	परीक्षामाला	
5.2.2018	सोमवार	उदयपुर	8	विज्ञान	परीक्षामाला	
6.2.2018	मंगलवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	परीक्षामाला	
7.2.2018	बुधवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम		आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती
8.2.2018 गुरुवार से 10.02.2018 शनिवार तक तृतीय परख (सभी कक्षाओं के लिए)						
12.2.2018	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		तीनों देशों के स्वामी-जय भोले
14.2.2018	बुधवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	परीक्षामाला	
15.2.2018	गुरुवार	जयपुर	10	गणित	परीक्षामाला	
16.2.2018	शुक्रवार	उदयपुर	8	गणित	परीक्षामाला	
17.2.2018	शनिवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	परीक्षामाला	
19.2.2018	सोमवार	उदयपुर	5	हिन्दी	परीक्षामाला	
20.2.2018	मंगलवार	जयपुर	5	गणित	परीक्षामाला	
21.2.2018	बुधवार	उदयपुर	5	अंग्रेजी	परीक्षामाला	
22.2.2018	गुरुवार	जयपुर	6	विज्ञान	16	प्रकाश एवं छाया
23.2.2018	शुक्रवार	उदयपुर	10	विज्ञान	19	जैव विविधता एवं इसका संरक्षण
24.2.2018	शनिवार	जयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	18	अलग-अलग हैं सबके काम
26.2.2018	सोमवार	उदयपुर	6	विज्ञान	14	विद्युत परिपथ
27.2.2018	मंगलवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	20	स्वच्छता एवं ठोस कचरा प्रबंधन
28.2.2018	बुधवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम		राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

पञ्चाङ्ग

फरवरी 2018 ● कार्य दिवस-23, रविवार-04, अवकाश-01, उत्सव-03 ● 8 से 10 फरवरी- तृतीय परख का आयोजन। **10 फरवरी**-स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव), स्कूल आधारित राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का आयोजन (सर्व शिक्षा अभियान) **13 फरवरी**-महा शिवरात्रि (अवकाश-उत्सव) **15 फरवरी**-राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का मॉप ऑप दिवस (10 फरवरी को विद्यालयों में अनुपस्थित रहे बच्चों को डीवर्मिंग की दवा दी जाएगी), समुदाय जागृति दिवस (अमावस्या) (सर्व शिक्षा अभियान) अभिभावक-शिक्षक बैठक (PTM) का आयोजन। **16 से 17 फरवरी**-सत्रान्त की संस्था प्रधान वाक्पीठ (प्रावि/उप्रावि/ मावि/उमावि) का आयोजन। **28 फरवरी**-राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव) **नोट :-1.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। **2.** तृतीय योगात्मक आकलन का आयोजन-05 से 10 फरवरी (CCE/SIQE संचालित विद्यालयों में) **माह फरवरी-2018 में सर्व शिक्षा अभियान से सम्बन्धित कार्यक्रम-●** शाला-सिद्धि कार्यशाला (राज्य कोर ग्रुप की बैठक)

फरवरी 2018

रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	
शुक्र	2	9	16	23	
शनि	3	10	17	24	

22 फरवरी : लार्ड बेडेन पॉवेल जन्म दिवस विशेष

स्काउटिंग : सेवा से राष्ट्र साधना

❒ विकास चन्द्र 'भारू'

स्काउटिंग आन्दोलन मानवीय गुणों का एक ऐसा संगठित मिश्रण है जो इस जीवन पथ के पथिक को उस राह से ले जाने में मददगार होता है जिसमें हमेशा संयम एवं संस्कार उसके हमसफर होते हैं। इस आन्दोलन की नींव ही किसी राष्ट्र के लिए सुयोग्य नागरिकों के निर्माण करने के उद्देश्य से रखी गई है। स्काउटिंग के ढाँचे का ताना-बाना ही कुछ इस प्रकार से बुना गया है कि इस राह से होकर गुजरने वाला प्रत्येक पथिक अपने साथ संयम, सेवाभाव, सद्भाव, साहचर्य, एवं कौशल को अपना सहचर पाता है।

आज विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती सुयोग्य नागरिक तैयार करने की है क्योंकि वर्तमान के इस भौतिकवादी दौर में अधिक से अधिक धन कमाने की लालसा ने मनुष्य को यन्त्रवत बना दिया है, इस कारण से मानवीय संस्कार मानव जाति से दूर होते चले जा रहें है, वह स्वार्थ एवं संकीर्ण सोच की मानसिकता में जकड़ा चला जा रहा है। अत: इन परिस्थितियों में इस आन्दोलन की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो चली है। वर्तमान के बदलते दौर में मानव ने अपने पास भौतिक सुख सुविधाओं के साजो-सामान के भंडार में वृद्धि कर स्वयं को इनका आदी बना लिया है। इस कारण से वह धीरे-धीरे प्रकृति एवं समाज से दूर होता चला जा रहा है। जिसके दुष्परिणाम असाध्य बीमारियों, मानसिक तनावों एवं मानवीय गुणों के ह्रास के रूप में विश्व एवं समाज के सामने परिलक्षित हो रहे हैं।

अथर्ववेद में एक स्थान पर कहा गया है कि :-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह ज्ञान प्राप्त कर परस्पर मिलजुल कर रहे। सभी उत्तम संस्कारवान हों। जिस तरह हमारे पुरखे अपने कर्त्तव्यों का पालन करते रहे हैं उसी प्रकार हम भी सदैव अपना कर्त्तव्य पूरा करते रहें।

स्काउटिंग आन्दोलन भी इसी भाव को लेकर उत्तरोत्तर गत एक सदी से भी अधिक समय से सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में पिरौने, संस्कारित करने एवं सुनागरिकों के निर्माण में अपनी महती भूमिका को निभाता चला आ रहा है। यह आन्दोलन बालकों के माध्यम से समाज में संस्कार, ज्ञान एवं कौशल का उजियारा फैलाने हेतु एक विश्वव्यापी मंच के रूप में चल रहा है तथा समस्त मानव जाति को एकता के सूत्र में पिरौने में महती भूमिका का निर्वहन कर रहा है। विश्व भ्रातृत्व ही इस आन्दोलन का मूल मंत्र है तथा अपनी इसी पवित्र भावना के कारण आज इस आन्दोलन को विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन बनने का गौरव प्राप्त है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

स्काउट शब्द से आशय है 'गुप्तचर।' इस शब्द का उपयोग सेना में जासूसी, भेदिये या खोजकर्त्ता आदि के लिए होता था। इनका कार्य विशेषत: युद्ध के समय किया जाता है जब ये भेष बदलकर विपक्षी खेमे में पहुँच जाते और उनकी व्यूहरचना की जानकारी अपनी सेना को भेजते रहते थे।

स्काउटिंग को सेना से जन साधारण तक पहुँचाने और विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन बनाने का श्रेय जाता है लॉर्ड बेडेन पॉवेल (बी.पी.) को। इनका पूरा नाम है राबर्ट स्टिफेन्सन स्मिथ बेडेन पॉवेल। बी.पी. का जन्म 22 फरवरी, सन् 1857 को लन्दन में हरबर्ट जार्ज बेडेन पॉवेल के घर हुआ था, जो स्वयं पेशे से प्रोफेसर थे। बी.पी. सात भाइयों में चौथे नम्बर की सन्तान थे। सन् 1860 में मात्र तीन वर्ष की आयु में पिता का निधन हो जाने के पश्चात इनका एवं परिवार का लालन पालन इनकी माता श्रीमती हेनरेटा ग्रेस स्मिथ के द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया। अपनी जीवनी में इसके सम्बन्ध में बी.पी. ने एक स्थान पर कहा है कि ''मेरी माता का प्रभाव मेरे जीवन में सफल होने का एकमात्र कारण है।'' सन् 1912 में इनका विवाह मिस आलेव सेन्ट क्लेयर सोम्स के साथ हुआ जिन्हें बाद में लेडी बेडेन पॉवेल के नाम से जाना गया। संयोग से इनका जन्म भी सन् 1889 में 22 फरवरी के दिन ही हुआ था। लेडी बेडेन पॉवेल ने ही आगे चलकर गाइडिंग को सम्भाला था।

बी.पी. ने लंदन में ही अपनी शिक्षा प्राप्त की थी। सफलतापूर्वक शिक्षा के पश्चात् सन् 1877 में मात्र 20 वर्ष की आयु में इन्हें इंग्लैण्ड की सेना में नियुक्ति मिली और सब लेफ्टिनेंट बनाकर भारत भेजा गया। भारत में रहते इन्होंने अनेक स्थानों पर प्रवास किया और यहाँ के सामाजिक एवं प्राकृतिक जीवन के अनुभव प्राप्त किए। ये अनुभव इनके सैन्य एवं स्काउट जीवन के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहे।

सन् 1900 में दक्षिणी अफ्रीका में अंग्रेजी सेना को बी.पी. के नेतृत्व में 217 दिन के 'बोर युद्ध' का सामना करना पड़ा। इस युद्ध मे अंग्रेजी सैनिकों की कमी को देखते हुए बेडेन पॉवेल ने एक बालसेना तैयार की जो उनके लिए सहयोगी एवं संदेश वाहक के रूप में काम करती थी। इस दौरान बी.पी. का परिचय बालकों में व्याप्त असीम शक्ति, अदम्य साहस और कार्यकौशल से हुआ। अपनी पुस्तक 'स्काउटिंग फॉर बॉयज' में इन्होंने एक स्थान पर लिखा है ''एक बार

घमासान युद्ध के बीच से आए हुए इन बालकों में से जब एक से मैंने कहा कि–गोलियों की इतनी तेज बौछार हो रही है कि किसी न किसी दिन तुम घायल भी हो सकते हो।'' इस पर बालक ने प्रत्युत्तर दिया कि–''श्रीमानजी, मैं इतनी तेज साइकिल चलाता हूँ कि वे मुझे पा ही न सकेगी।'' बालकों में छिपी इस प्रकार की अपार शक्ति के अन्य कई उदाहरण भी उन्होंने अपनी पुस्तकों में दिए हैं। युद्ध में अंग्रेज सेना विजयी हुई, जिसमें बालसेना का योगदान भी महत्त्वपूर्ण रहा। जब लम्बे चले युद्ध के बाद बी.पी. इन बाल सैनिकों को अवकाश देना चाह रहे थे तो उन्होंने अवकाश लेने से मना कर दिया और कहने लगे–''We want Scouting - We want Scouting.''

लॉर्ड बेडेन पॉवेल को इसी भावना के कारण ऐसे बालकों के लिए कार्यक्रम बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा और उन्होंने इनकी शक्ति एवं साहस को रचनात्मक रूप देने का निश्चय किया। सन् 1907 में 29 जुलाई से 9 अगस्त तक लन्दन के ब्राउन सी नामक टापू पर उन्होंने मात्र बीस बालकों के साथ स्काउटिंग का प्रथम शिविर आयोजित कर विश्व स्काउटिंग की नींव रखी।

भारत में भी सन् 1910 में स्काउटिंग की शुरूआत की गई परन्तु प्रारम्भ में केवल अंग्रेज एवं एंग्लो इण्डियन बच्चों को ही इसमें शामिल होने की अनुमति थी। सन् 1913 में पं. श्रीराम वाजपेयी ने शाहजहाँपुर में भारतीय बच्चों के लिए एक स्वतंत्र ग्रुप की शुरूआत की। इसके उपरान्त सन् 1916 में पूना में सर्वप्रथम गर्ल स्काउट (गाइड) दल खोला गया। डॉ. एनीबेसेन्ट ने सन् 1916 में ही मद्रास में 'इण्डियन ब्वॉय्ज स्काउट एसोसियशन' की नींव रखी। पं. हृदयनाथ कुँजरू और पं. श्रीराम वाजपेयी के सहयोग से सन् 1917 में पंडित मदन मोहन मालवीय ने इलाहबाद में 'अखिल भारतीय सेवा समिति ब्वॉय्ज एसोसियशन' की स्थापना की।

विभिन्न संगठनों में बिखरी भारतीय स्काउटिंग को एक करने के उद्देश्य से जनवरी 1921 में लार्ड बेडेन पॉवेल एवं लेडी बेडेन पॉवेल भारत आए। यहाँ पर उन्होंने विभिन्न रैलियों, सम्मेलनों एवं मद्रास तथा इलाहबाद की स्वागत रैलियों में शिरकत की तथा भारतीय स्काउटिंग की प्रगति को देखकर बेहद प्रभावित हुए। सन् 1930 में वायसराय के निमंत्रण पर लार्ड व लेडी बेडेन पॉवेल पुन: भारत आए। नई दिल्ली में 1 से 7 फरवरी 1930 तक वॉय स्काउट एसोसियशन द्वारा अखिल भारतीय जम्बूरी का आयोजन किया गया जो बेहद सफल रही। सन् 1938 में अन्तर्राष्ट्रीय ब्वॉय स्काउट ने भारत की ब्वॉय स्काउट एसोसियशन को सदस्यता प्रदान की।

स्वतंत्रता के पश्चात् देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद की प्रेरणा से सभी स्वतंत्र संगठनों ने एकसाथ मिलकर 7 नवम्बर 1950 को एक नये एसोसियशन को जन्म दिया जिसका नाम 'भारत स्काउट एण्ड गाइड्स एसोसियशन' रखा गया। परन्तु अपने स्वतंत्र अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की माँग को लेकर 'भारत गर्ल गाइड एसोसियशन' अब भी इससे अलग रहा। 15 अगस्त 1951 को सन्तोषजनक अश्वासन प्राप्त होने पर 'भारत गर्ल गाइड एसोसियशन' ने भी 'भारत स्काउट एण्ड गाइड्स एसोसियशन' में विलय को स्वीकार कर लिया।

इस प्रकार विभिन्न पड़ाव पार करता हुआ आज 'भारत स्काउट्स एवं गाइडस् ऐसोसियशन' ही भारत में स्काउट एवं गाइड का एकमात्र मान्य संगठन है जिसका राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। 'भारत स्काउट्स एवं गाइड्स ऐसोसियशन' का स्काउट विभाग 'वर्ल्ड स्काउट ब्यूरो' जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड) तथा गाइड विभाग 'वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ गर्ल गाइड्स तथा गर्ल स्काउट्स' लन्दन से सम्बद्ध है।

वर्तमान में विश्व के लगभग 217 देशों में पहुँच चुके इस आन्दोलन द्वारा बालकों के लिए स्काउटिंग की गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। इस संगठन से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता है कि वह इस प्रकार के वैश्विक संगठन का सदस्य है जिसकी गौरवशाली परम्परा रही है और वर्तमान में भी विश्व बन्धुत्व की भावना का वाहक बना हुआ है।

स्काउटिंग आन्दोलन की विशेषताएँ :–

- यह एक स्वैच्छिक संगठन है जो स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समाज की आवश्यकतानुसार उत्तरदायी नागरिकों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह संगठन पूर्ण रूप से गैर राजनैतिक है, जो हर धर्म, जाति एवं लिंग के बन्धनों से परे है।
- यह एक पूरक शिक्षा का कार्यक्रम है, जो कौशल विकास के माध्यम से सीमित संसाधनों की सहायता से उच्च स्तरीय जीवन जीने की कला प्रदान करती है।

- बालकों तथा युवाओं में चारित्रिक गुणों जैसे-विश्वास, निष्ठा, अनुशासन, भाईचारा, मितव्ययता, बन्धुत्व भावना आदि का विकास करती है।
- आउटडोर कैम्पिग के माध्यम से प्रकृति तथा मूक पशु-पक्षियों के साथ आत्मीय भाव जाग्रत करने में सहायक है।
- टोली विधि से नेतृत्व तथा सहयोग की भावना का विकास करने में सहायक है।
- देश प्रदेश की विभिन्न संस्कृतियों एवं विविधताओं को जानने व पहचानने का अवसर उपलब्ध करवाती है।
- गौरवशाली परम्परा का 217 देशों में 25 मिलियन (2.5 करोड़) से अधिक सदस्यों का वैश्विक संगठन है।

स्वस्थ एवं सुयोग्य नागरिकों के निर्माण में भूमिका :-

कहा गया है कि ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।'' स्काउटिंग की अवधारण में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है तथा प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रम रूपरेखा का निर्धारण इस प्रकार से किया गया है कि बालक हरदम चुस्त-दुरस्त एवं स्वस्थ रह सके। बेडेन पॉवेल ने शरीर के प्रत्येक अंग को ध्यान में रखकर बालकों के लिए एक व्यायाम प्रणाली का आविष्कार किया जिन्हें बी.पी. सिक्स (B.P. Six) के नाम से जाना जाता है। इन व्यायामों के अतिरिक्त छोटे-छोटे टूप खेलों एवं बाहरी गतिविधियों में बालकों को व्यस्त रखकर उनको स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जागरुक रखा जाता है।

स्काउटिंग में पैट्रोल सिस्टम (टोली प्रणाली) एक ऐसा महत्त्वपूर्ण लक्षण है जो इसे अन्य संगठनों से भिन्नता प्रदान करता है। इस प्रणाली में समूह को 6 से 8 तक की संख्या में टोलियों में बांट दिया जाता है तथा नेतृत्व एवं चारित्रिक प्रशिक्षण के लिए प्रतिदिन क्रमानुसार प्रत्येक बालक को पैट्रोल लीडर (टोली नायक) के रूप में नियुक्त कर उत्तरदायित्व डाल दिया जाता है। इस प्रकार टोलियों में भी आपसी प्रतियोगिताएँ एवं स्पर्धाओं का आयोजन किया जाता है जिसमें प्रत्येक बालक स्वयं को एक उत्तरदायी अंग के रूप में महसूस करता है एवं वह ग्रुप की मर्यादा और गौरव के निर्माण में योगदान करने हेतु प्रयासरत रहता है। इस विधि में पैट्रोल लीडर की मीटिंग और कोर्ट ऑफ ऑनर (मानसभा) का आयोजन प्रत्येक ग्रुप लीडर में लोकतांत्रिक भावना पैदा करता है जहाँ उसके द्वारा ग्रुप की ओर से समस्त गतिविधियों का ब्यौरा एक अन्य मंच पर साझा किया जाता है। इसके अलावा विभिन्न स्तरों पर आयोजित होने वाले शिविरों में बालक को स्कूल की अपेक्षा अधिक चारित्रिक गुणों को सीखने का अवसर प्राप्त होता है। 'Scouting is the Life Outing' कथन को सार्थक करते ऐसे शिविरों में स्वस्थ वातावरण, रात-दिन साथ रहना, वनकला, शिविर क्राफ्ट आदि बालकों में रोमांच एवं उत्सुकता उत्पन्न करती हैं जहाँ जीवन की सब रोचकताएँ उनके चारों ओर उपस्थित होती हैं। बालकों में शिविर अवधि में बिताया गया समय तथा सीखा गया कौशल एवं अनुभव उनके जीवन की कभी व्यय न होने वाली पूंजी के रूप में संचित हो जाती हैं। लॉर्ड बेडेन पॉवेल ने शिविर में प्राप्त अनुभवों के सम्बन्ध में एक स्थान पर कहा है कि ''इस प्रकार का एक सप्ताह का जीवन, मीटिंग के कमरे में छ: माह के सैद्धान्तिक प्रशिक्षण जो चाहे कितना भी मूल्यवान क्यों न हो, अधिक महत्त्व का है।'' इन सब के साथ-साथ स्काउटिंग के माध्यम से बालकों को विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले शिविरों के माध्यम से वहाँ की सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक तथ्यों से रूबरू होने के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

चरण/सोपान तथा अवसर :-

स्काउटिंग आन्दोलन से जुड़ने के लिए उम्र का कोई बन्धन नहीं है अर्थात् उम्र के किसी भी पड़ाव पर स्काउटिंग को ज्वाईन किया जा सकता है। यह आन्दोलन बालकों, नव-युवकों एवं वयस्कों को मानवीय गुणों के साथ-साथ सम्मान के भी अवसर उपलब्ध करवाता है। निर्धारित पाठ्यक्रम एवं कौशल को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर आन्दोलन से जुड़े युवाओं के पास राष्ट्रपति पुरस्कार तक को प्राप्त करने का अवसर रहता है। आन्दोलन से जुड़ने के लिए अलग-अलग आयु वर्ग के लिए निम्नानुसार अवसर होते हैं:-

- **पूर्व बाल्यावस्था में**-उम्र के पहले पड़ाव अर्थात् पूर्व बाल्यावस्था में बालक अपनी पूर्व प्राथमिक शिक्षा के साथ 3 से 5 वर्ष की आयु में टमटोला के रूप में इस संगठन से जुड़कर अपने को समूह एवं सामाजिक ढांचे में समायोजित करना, व्यवहार करना सीखता है।
- **बाल्यावस्था में**-इसके अगले पड़ाव अर्थात् बाल्यावस्था में बालक अपनी प्राथमिक शिक्षा के साथ 6 से 10 वर्ष की आयु में कब एवं बुलबल के रूप में इस आन्दोलन से जुड़कर अपने कोरे बाल मन-मस्तिष्क में मानवीय गुणों की अमिट छाप उतार सकता है।
- **किशोरावस्था में**-माध्यमिक शिक्षा के साथ-साथ एक बालक जब किशोरावस्था में प्रवेश कर रहा होता है और यदि वह 10 से 17 वर्ष की आयु में स्काउट गाइड के रूप में इस संगठन से जुड़ता है तो वह अपने व्यवहार में राष्ट्र निर्माण एवं मानवीय गुणों को अपेक्षाकृत बेहतर ढ़ग से अंगीकृत कर सकता है। ये गुण इस तूफान और आवेग की अवस्था में उसके भटकाव की सम्भावना को कम कर उसके अन्दर उत्पन्न हो रही ऊर्जा को रचनात्मक कार्यो एवं कौशल विकास में परिवर्तित करने में सहायता करते हैं।
- **युवावस्था में**-युवा अवस्था में प्रवेश के समय जब एक बालक स्कूली शिक्षा से निकलकर कॉलेज शिक्षा की ओर मुखातिब होता है तो एकबारगी वह अपने आप को पिंजरे से निकले पक्षी की तरह आजाद महसूस करता है एवं अतिशीघ्रता के साथ सम्पूर्ण नभ में विचरण करने को लालायित रहता है। 17 से 25 की उम्र के इस दौर में एक युवा रोवर रेंजर के रूप में स्काउट आन्दोलन से जुड़ता है तो उसकी घूमने-फिरने, मिलने-जुलने, देश-दुनिया को जानने समझने की प्रवृत्ति को संगठन के ढांचे एवं क्रियाविधियों के माध्यम से ऐसा मार्गदर्शन प्राप्त होता है कि वह सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ सेवा से राष्ट्र निर्माण को ही अपने जीवन के

लक्ष्य के रूप में तय कर लेता है।

- **वयस्क अवस्था में**–इन सब के अतिरिक्त 25 वर्ष से ऊपर के वयस्क व्यक्ति भी इस विश्वव्यापी संगठन से एक वयस्क लीडर, प्रशिक्षक या स्वैच्छिक कार्यकर्त्ता के रूप में जुड़कर चारित्रिक एवं मानवीय गुणों का विकास कर सकते हैं तथा इन गुणों को भावी पीढ़ी में हस्तान्तरित कर राष्ट्र सेवा के पुनीत कार्य का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।

विद्यालयों में स्काउटिंग क्यों ? :–

परिवार से निकलने के बाद विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ बालक का परिचय बाहर की दुनिया में उपलब्ध चुनौतियों एवं अवसरों से करवाया जाता है। विद्यालय का यह दायित्व होता है कि बालकों में सुयोग्य नागरिक गुणों का विकास करे तथा उनमें जीवनयापन हेतु ज्ञान एवं कौशल का विकास करे। एक स्वतंत्र अध्ययन के अनुसार अधिकतर व्यक्तियों की सफलता में उनके तथ्यात्मक एवं किताबी ज्ञान की अपेक्षा उनका व्यावहारिक, चारित्रिक पक्ष अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उस व्यक्ति का कार्यकौशल, सम्प्रेषण तथा निर्णय एवं नेतृत्व क्षमता की भूमिका उसकी सफलता में किताबी ज्ञान से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। अत: प्रत्येक विद्यालय का यह दायित्व है कि वह अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उन्हें अध्ययन विषयों के साथ-साथ सह-शैक्षिक गतिविधियों में भी नियमित रूप से अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का अवसर प्रदान करे। विद्यालय स्तर पर सह-शैक्षिक गतिविधियों के रूप में विविध प्रकार की गतिविधियाँ संचालित रहती हैं परन्तु स्काउटिंग-गाइडिंग इन सब में विशिष्ट स्थान रखती है जो अपने आप में लगभग सभी सह-शैक्षिक गतिविधियों की विशेषताओं को समेटे रहती है। स्काउटिंग बालकों में नागरिक गुणों जैसे सेवा, अनुशासन, शिष्टता, प्रकृति प्रेम, आत्मविश्वास, बन्धुत्वभाव आदि को विकसित करने में महत्ती भूमिका का निर्वहन करता है। स्काउटिंग के माध्यम से बालकों को विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले शिविरों एवं कार्यक्रमों में भाग लेने का मौका मिलता है जहाँ पर वे उस स्थान एवं अन्य स्थानों से आए हुए प्रतिभागियों की संस्कृति एवं विविधताओं से परिचित होते हैं। खेल-खेल से ही बालकों में नेतृत्व व सामाजिक गुणों का विकास हो जाता है जो उनके जीवन पथ पर हमेशा उनके हमसफर रहते हैं।

अत: प्रत्येक विद्यालय का यह दायित्व है कि वह अपने विद्यार्थियों को स्काउटिंग से जुड़ने का अवसर उपलब्ध कराए ताकि अधिक संस्कारवान नागरिकों का निर्माण सम्भव हो सके। विद्यालय स्तर तक बालक प्रत्येक तथ्यों को बिना किसी स्वार्थ के ग्रहण करता है अत: इस स्तर पर ग्रहण किए गए जीवन मूल्य एवं कौशल ताउम्र उसका मार्गदर्शन करते रहेंगे एवं हमेशा उसके कर्त्तव्यबोध का भान कराते रहेंगे। अतएव इस प्रकार के नागरिकों के सेवाभाव से ही सच्ची राष्ट्र साधना सम्भव हो सकेगी।

व्याख्याता
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
ऊपनी, बीकानेर
मो. 9414540337

मासिक गीत

भारत माँ को विश्व गुरु के....

लेते हैं संकल्प देश में, ज्ञान की ज्योति जलाएँगे।
भारत माँ को विश्व गुरु के, पद पर फिर पहुँचाएँगे।।
भारत माँ को विश्व गुरु के.....

जाग उठी है सुप्त चेतना, अन्धकार छँट जाना है।
नैतिक मूल्यों की मशाल को, जन जन तक पहुँचाना है।
हम अतीत के स्वाभिमान का, सोया भाव जगाएँगे।।
भारत माँ को विश्व गुरु के.....

निर्माणों की नई डगर का, शिक्षक ही संवाहक है।
ऐसे शिक्षक का समाज भी, मौन मूक गुणगाहक है।
संदीपन जब हम में होगा, कृष्ण तभी गढ़ पाएँगे।।
भारत माँ को विश्व गुरु के.....

हम वशिष्ठ के वंशज हमने, दुनिया भर को ज्ञान दिया।
रामदास की दिव्य दृष्टि ने, वीर शिवा पहचान लिया।
चणक पुत्र सी करो साधना, चन्द्रगुप्त मिल जाएँगे।।
भारत माँ को विश्व गुरु के.....

भारत भू के ज्ञान योग का, दुनिया में बजता डंका।
आज प्रशंसा करते वो ही, कल जो करते थे शंका।
मंगल क्या मंगल से आगे, राष्ट्र ध्वजा फहराएँगे।।
भारत माँ को विश्व गुरु के.....

साभार-**'एकं सत्' स्मारिका**
(प्रकाशक-अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ)

रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया

ग्राहक शिकायत हेतु राष्ट्रीय आवास बैंक का शिकायत निवारण तंत्र

❒ विशाल गोयल

राष्ट्रीय आवास बैंक की स्थापना आवास वित्त संस्थानों के संवर्धन एवं ऐसे संस्थानों को वित्तीय एवं अन्य सहायता प्रदान करने हेतु प्रधान एजेंसी के तौर पर कार्य करने हेतु राष्ट्रीय आवास बैंक अधिनियम, 1987 के अंतर्गत की गई है।

राष्ट्रीय आवास बैंक का शिकायत निवारण तंत्र राष्ट्रीय आवास बैंक के व्यथित पक्षों/आ.वि.कं के ग्राहकों को साधारण, तेज और लागत प्रभावी तंत्र प्रदान करता है। यह शिकायत निर्णय या निपटान पाने के लिए पीड़ित व्यक्ति के लिए उपलब्ध मौजूदा न्यायिक या अर्ध-न्यायिक मंचों का विकल्प नहीं है। इसलिए शिकायतकर्त्ता को किसी भी चरण में अर्थात् यहाँ तक कि उपर्युक्त प्रणाली की सहायता लेने से पूर्व, शिकायत लंबित रहने के दौरान या जब तक शिकायतकर्त्ता परिणाम से संतुष्ट नहीं होता, उपलब्ध मंच तक पहुँचने की छूट होती है।

- शिकायत पंजीकरण एवं सूचना डाटाबेस प्रणाली (ग्रिड्स) शिकायतकर्त्ता हेतु शिकायत का ऑनलाइन पंजीकरण और निगरानी की सुविधा प्रदान करता है।
- ग्रिड्स न केवल हमारे शिकायत निवारण तंत्र में पारदर्शिता लाता है बल्कि राष्ट्रीय आवास बैंक/आ.वि.कं. के द्वारा उत्तरों को ऑनलाइन अपडेट करने हेतु भी डिजाइन किया गया है।
- शिकायतकर्त्ता पंजीकरण एवं अनुवर्ती स्थिति निगरानी हेतु नाम, संपर्क ब्यौरा, आवेदन/जमा/खाता संख्या आदि जैसे अपेक्षित जानकारी प्रदान कर ग्रिड्स का उपयोग कर सकता है।

राष्ट्रीय आवास बैंक के वेबसाइट अर्थात् www.nhb.org.in में अपलोड शिकायत निवारण नीति के अनुसार, शिकायतकर्त्ताओं को शिकायत निवारण हेतु पहली बार में संबंधित आवास वित्त कंपनी राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा दिए गए पंजीकरण प्रमाण-पत्र, प्राप्त आवास

राष्ट्रीय आवास बैंक

वित्त कंपनियों की सूची राष्ट्रीय आवास बैंक की वेबसाइट पर उपलब्ध है, से संपर्क करने की सलाह दी जाती है। यदि उन्हें 30 दिनों के भीतर आ.वि.कं. से जवाब प्राप्त नहीं होता या वे आ.वि.कं. के जवाब से असंतुष्ट होते हैं तो उसके बाद उन्हें निम्नलिखित लिंक पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर शिकायत निवारण प्रकोष्ठ से संपर्क करने की सलाह दी गई है: https://grids.nhbonline.org.in

या

निर्दिष्ट प्रारूप में शिकायत दर्ज कर जो कि निम्नलिखित लिंक (http://nhb.org.in/citizencharter/NHB%20Grievance%20Redressal%20Policy.pdf) पर उपलब्ध है, नीचे दिए पते पर राष्ट्रीय आवास बैंक के प्रधान कार्यालय में भेजें:- राष्ट्रीय आवास बैंक कोर 5ए, इंडिया हैबिटैट सेंटर, तीसरी से पांचवीं मंजिल, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

ग्रिड्स से संबंधित अन्य विशेषताएँ:

- शिकायत की सूची दिनों में निपटान के आधार पर सामान्य या बोल्ड फोंट के साथ तीन विभिन्न रंगों में दर्शाए जाते हैं:
  ग्रीन नॉर्मल-0 दिन
  ग्रीन बोल्ड -1 से 15 दिन
  रेड नॉर्मल - 16 से 30 दिन
  रेड बोल्ड - 31 से 60 दिन
  ब्लैक नॉर्मल -61 से 90 दिन
  ब्लैक बोल्ड - 91 दिन या अधिक
- शिकायत ब्यौरे के साथ लिंक में शामिल किसी भी सूची में शिकायत संख्या दर्शाया जाती है।
- ग्रिड्स में पंजीकृत शिकायत को केवल राष्ट्रीय आवास बैंक ही बंद कर सकता है।

ग्रिड्स शिकायत पंजीकरण प्रक्रिया का स्नैपशॉट

1. यह स्क्रीन ग्रिड्स यूआरएल. क्लिक करने के बाद आता है

2. शिकायत लिंक क्लिक करने के बाद

अतिरिक्त ब्यौरे के लिए कृपया हमारे वेबसाइट www.nhb.org.in पर जाएँ।

उप महाप्रबंधक
राष्ट्रीय आवास बैंक
कोर5ए, इंडिया हैबिटैट सेंटर,
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
+91-9717691285

EPISODE-I

बोर्ड परीक्षा

कक्षा-XII अंग्रेजी विषय तैयारी

❒ रमेशचन्द्र दाधीच

SECTION-A- READING- UNSEEN PASSAGE FOR COMPREHENSION FACTUAL, DISCURSIVE, LITERARY

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के पाठ्यक्रमानुसार अंग्रेजी विषय का प्रश्न पत्र कुल 80 अंक का होता है। जिसमें Reading section के अन्तर्गत unseen passage कुल 9 अंक का रखा गया है। जो सम्पूर्ण प्रश्न पत्र का 11.25 प्रतिशत है। तथा 3:15 घण्टे में से 20 मिनट इस प्रश्न हेतु निर्धारित है। अच्छे अंकों की प्राप्ति हेतु यह प्रश्न बहुत ही सरल एवं महत्त्वपूर्ण है। इस प्रश्न के अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए लेखक के 28 वर्षो का अनुभव आधारित सुझाव निम्नानुसार है।

A. few hints for Attempting and Scoring maximum marks.

1. Read the given passage carefully to understand. (Twice or Thrice)
2. If you find difficulty in understanding the meaning of difficult words, try to know with the help of central idea of sentence and complete sentence.
3. Try to understand the requirement of the given questions.
4. Give the answer in the same tense with person and number.
5. Give the complete answer. Not in Yes or No or Phrase.
6. Try to use simple and own words with simple and short sentence.
7. Vocabulary related questions (7,8,9) are- synonyms, Antonyms, and one word. (plural-plural, adjective-adjective, adverb-adverb etc)

B. How to give proper answer of the Questions-

Two Types of Question- Begin with-

(a) Wh words
wh words+H.V.+Sub.+verb+ object?

(b) Auxiliaries (Helping verb or modals)
H.V.+Sub.+M.V.+Object ?
Answer:-
Yes, complete affirmative sentence
No, Complete negative sentence

Wh Word	Meaning	Answer
Who	कौन/किसने किन्होंने	Related person-sub.
Whom/whose	person person,idea, thing	Related person-object
What	क्या/कौनसा	Thing, idea process
Which	कौनसा/कौनसी	being,thing idea,
Where	कहाँ	place and information
When	कब	Time and information
Why	क्यों	Reason (Because)
How	कैसे	Process
How Much	कितना	Quantity
How many	कितने	Number
How long	कब तक	Time period time limit
How far	कितनी दूर	distance and information
How old	कितना बड़ा/ पुराना	Age- related information

Important hints

If question-in -Answer
Do - I form
Does - I+ s or es
Did - II
In negative sentence.
do, does, did with not +I
(Do+ I = I), Did+I=II

For Example- Given Passage

The test of a great book is whether we want to read it only once or nore than once. Any really great book we want to read the second time even more than we wanted to read it the first time; and every additional time that we read it we find new meanings and new beauties in it. A book that a person of education and good taste does not care to read more than once is very probably not worth much. But we cannot consider the judgment of a single individual infallible. The opinion that makes a book great must be the opinion of many. For even the greatest critics are apt to have certain dullness. Carlyle, for example, could not endure Browning; Byron could not endure some of the greatest of English poets. A man must be many-sided to utter a trustworthy estimate of many books. We may doubt the judgment of the single critic at times. But there is no doubt possible in regard to the judgement of generations. Even if we cannot at once perceive anything good in a book which has been admired and praised for hundreds of years, we many be sure that by trying, by studying it carefully, we shall at least be able to feel the reason of this of this admiration and praise. The best of all libraries for a poor man would be a library entirely composed of such great works only, books which have passed the test of time. This then would be the most important guide for us int the choice of readings. We should read only the books we want to read more than once, nor should we buy any others, unless we have some special reason for so investing money. The second fact demanding attention is the general character of value that lies hidden within all such great books. They never become old; their youth is immortal. A great book is not apt to be comprehended by a young person at the first reading, except in a superficial way. Only the surface, the narrative is absorbed and enjoyed No young man can possibly see at first reading the qualities of a great book. Remember that it has taken humanity in many cases hundreds of years to find out all that there is in such a book But according to a man's experience of life, the text will unfold new meanings to him. The book that delighted us at eighteen, if it be a good book, will delight us much more at twenty-five and it will prove like a new book to us at thirty years of age. At forty we shall re-read it, wondering why we never saw how beautiful it was before.

At fifty or sixty years of age the same facts will repeat themselves. A great book grows exactly in proportion to the growth of the reader's mind.

Questions

(i) What is the quality of a great book?
(ii) In which case a judgement about a book is beyond doubt?
(iii) What kind of understanding of a great book in a young person is likely to have at the first reading of that book?
(iv) Whose work did Carlyle find difficult to appreciate?
(v) What would a poor man's library contain?
(vi) What does a person of forty feel when he re-reads some good books?

Find out a word from the passage which means :

(vii) not capable of making mistakes
(viii) to suffer something unpleasant or difficult in a patient way.
(ix) the ability to make sensible decision.

Answer

(i) The quality of a great book is that whenever it is read we find new meanings and new beauties in it. It is read again and again.
(ii) We may doubt the judgemeut of the single critic at times but the judgemeut of generation of the readers. regarding the book is a judgement beyond doubt.
(iii) The narrative is absorbed and enjoyed at the first reading of that book by a young per son, He may not see at first reading the qualities of a great book.
(iv) Carlyle found the work of Browning difficult to appreaciate
(v) Poor man's library would contain those books which have passed the test of time, are the best guide.
(vi) At forty when he-re-reads it. the wonders why he never saw how beautiful it was before
(vii) Infallible
(viii) Endure
(ix) judgements

EPISODE-II

READING SECTION- NOTE -MAKING AND SUMMARY WRITING

बिन्दु एवं सारांश लेखन

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार उपर्युक्त के लिए 6 अंक निर्धारित किये गये है। जिसमें 4 अंक Note making व 2 अंक Summary and title writing के लिए विभाजित किये गये हैं।

(A) NOTE-MAKING:- It is an art of writing down piece of information in a very short and systematic way, to understand and recall the matter completety विषय वस्तु को समझने व पुनः याद करने की व्यवस्थित, सरल एवं संक्षिप्त लेखन की कला ही नोट निर्माण है।

प्रभावी Note making WRITING A TECHNIQUE

1. READ THE GIVEN PASSAGE CAREFUIIY, AVOIDING IMPERTINENT MATERIAL UNDERLINE THE IMPORTANT POINTS, AND WORDS.
2. CONCENTRATE ON PERTINENT INFORMATION- DIVIDE INTO HEADINGS/ SUB HEADINGS- or MAIN SECTION/ SUBSECTIONS
3. MAIN SECTIONS- ARE IN- ROMAN- I, II, III, IV
   SUB SECTIONS- (i), (ii), (iii) or (a), (b), (c) sub-sub sec
   OR
   MAIN SECTIONS ARE IN- ARABIC NUMBERS WITH DECIMAL
   1,2,3.....etc
   SUB SECTIONS- 1.1, 1.2, 1.3,.....etc
   SUB SUB SECTIONS 1.1.1, 1.1.2, 1.1.3, 1.2.1.2, 1.2.3..... etc
4. NO USE OF PHRASES SENTENCES- WITHOUT GIVING- IMPORTANCE TO GRAMMAR (TENSE, SPEECH, VOICES)
5. USE ABBREVIATED FORMS OF LONG WORDS (COMMON OR STANDARD SY MBOLS)
   OR
   self constructed short forms.
   (i) USING CAPITAL LETTERS OF WORDS - USA, BSER, RPSC, NCERT,
   (ii) USING INITIAL AND THE LAST LETTERS OF THE WORDS-
   orgarisation (org.), Doctor (Dr.) shall not- shan't, will not-won't
   (iii) USING SOME INITIAL LETTERS OF THE WORDS - Edu-education, ref- reference,
6. NOTES SHOULD BE BRIEF, WELL ARRANGED AND SYSTEMATIC
7. EACH AND EVERY IMPORTANCE INFORMATION KEPT ON IN RECORD.
8. EASILY UNDERSTANDABLE TO SELF AND EVERYONE.
9. EASY TO RECALL AT THE TIME OF REQUIREMENT.

(B SUMMARY OR ABSTRACTION

It is the gist of main theme of the passage expressed in as few words as possible यह गद्यांश का यथासंभव शब्दों में व्यक्त विषय वस्तु का संक्षिप्तीकरण है:-

Steps for summary

(1) Read the given passage carefully twice and thrice. understand and extract, the important ideas by underlining them.
(2) Note down the ideas and arrange them in proper sequence
(3) Omit the words of the original passage, illustrations, simple comparisons and examples etc. use one word substitution, connectives and indirect narration.
(4) prepare a coherent and logicaly connected final draft in your own language, with simple words and short sentences
(5) Keeping in mind that important point is not left out.
(6) It is should be app. $^1/_3$ of the given passage.

PASSAGE

Modern lite is sophisticated and complex. Simple living and high thinking is a thing of the past. Complex living and low thinking has replaced this motto. Most of the people are artificial and sophisticated. They have one thing in their heart and another on their lips. Majority of the people in the cities are deceitful. Face is no more the index of mind. Only expert psychologists can study the character of man from the outlook of a person. The world of make belief and show business. Acting and mannerism are the rule of the day. The new generation is

clear and smart. It is beyond recognition. Very few people are dependable in respect of their character and integrity.

In this world of complexity and artificiality, manners are all important. You cannot move in society unless you know about good manners and possess them. Even if you may not have good meals, you have to maintain certain minimum standards of dress and make-up. Manners. have become a part and parcel of life. Without proper manners you are not welcome anywhere. However honest may be your intention and however innocent your behaviour, unless you can put up tactful show of manners, you will not earn respect of your fellow beings.

For good manners you must maintain a good personality. A clean dress. a clean body, well brushed hair, style of dress in keeping with the times, a good power of speech and conversation, a certain patience in giving ears to the other party are necessary qualifications of a person professing to know manners. These qualifications are important in all pervading in modern times. Simplicity, innocence, honesty and similar traits a simpleton of any intelligent person in modern society.

Questions

(a) On the basis of your reading of the above passage make notes on it, using heading and subheading.

(b) Write a summary of the passage and suggest a suitable title.

Answer

(a) Notes : MODERN LIFE AND PERSONALITY

(A) CHANGES IN MODERN LIFE
(i) Sophisticated, complex
(ii) Artificial gesture
(iii) Low thinking

(B) MOST PEOPLE
(i) Deceitful
(ii)Make belief and show business
(iii) Few people virtuous

(C) MANNERS IN MODERN SOCIETY
(i) A part and parcel of life
(ii) Necessity of honesty

(D) MODERN SOCIETY LOST
(i) Simplicity
(ii) Innocence
(iii) Simple living
(iv) Intelligent to simpletion

(b) Summary:

TITLE- MODERN LIFE AND PERSONALITY

Modern life is sophisticated, most of modern people are deceitful , artificial and complex good mannerism is necessary in modern society. There is not welcome and respect without proper manners. Honesty is also helpful to earn respect simplicity, innocence, and other traits have lost their values in modern society a man of these traits without good personalily is simpleton.

प्राध्यापक
राजकीय जैन गुरुकुल उ.मा.वि.ब्यावर
मो. 9413843202

बालपन के संस्कारों का महत्त्व : आजकल इतिहास को पुनः लिखने का प्रयास कुछ विद्वानों द्वारा हो रहा है। भारत देश लाखों वर्ष पुराना है। हमारा इतिहास गौरवशाली रहा है। लगभग एक हजार साल के कालखण्ड़ को पराजय का बताया जाता है, वह गुलामी का नहीं, अपितु सतत् संघर्ष का कालखण्ड है। इतिहास को इस दृष्टि से पढ़ाना चाहिए, जिससे नई पीढ़ी के मन में देश के प्रति गौरव का भाव जाग्रत हो, यदि उन्हें पराजय और गुलामी जैसी गलत बातें ही पढ़ाई जाएगी, तो उनके मन में हीन-भाव पैदा होगा। बालपन से ही बच्चे के मन में सही संस्कार डालने के प्रयास किये जाने चाहिए। एक कथा ध्यान में आती है-

''एक राजा के दरबार में पक्षी बेचने वाला व्यापारी आया। उसके पास देश-विदेश के बहुमूल्य पक्षी थे। उनमें से दो तोते बहुत ही बुद्धिमान थे। व्यापारी ने बताया कि ये दोनों तोते जो भी सुनते है, उसे शीघ्र ही याद कर लेते हैं। राजा ने दोनों तोते खरीद लिए। राजा ने एक तोता अपने पुरोहित को तथा दूसरा तोता अपने द्वारपाल को दे दिया। समय निकलता गया। कुछ समय बाद राजा को उन दोनों तोतों की याद आई। उसने उन्हें मँगवाया तो बहुत आश्चर्य हुआ। एक तोता सुन्दर श्लोक और हरिनाम बोल रहा था जबकि दूसरा गंदी गालियाँ बक रहा था। राजा ने पहले तोते से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि मैं पुरोहित जी के घर पर रहा। वे अपने पास आने वालों को अच्छे श्लोक और भगवान की कथा सुनाते थे, इस कारण मैं भी वही सब सीख गया। मेरे साथी को आपने द्वारपाल को दिया था। वह आने वालों से सदा गाली देकर बात करता था इसलिए वही सब उसको याद हो गया। यह दोष मेरे साथी का नहीं है अपितु द्वारपाल का है जिसके पास उसे रखा गया।''

कथा से स्पष्ट है कि संस्कारों का बहुत महत्त्व है। जो बात बचपन में मन-मस्तिष्क में बैठा दी जाए, वह लम्बे समय तक याद रहती है। अतः बच्चों का विद्यारंभ अच्छे संस्कारों से करना चाहिए। शरीर का विकास आहार और व्यायाम से होता है। मन का विकास विद्या के माध्यम से होता है। बालक के जन्म के समय जिस प्रकार उत्सव मनाया जाता है उसी प्रकार बालक के विद्याध्ययन के अवसर पर भी उत्सव मनाया जाना चाहिए। यह उत्सव मनाने के लिए विद्या की देवी माँ सरस्वती का पूजन करते हुए गुरु-पूजन किया जाता है इसके बाद अक्षरारंभ कराया जाता है। जिस तरह गौ अपने बछड़े को दूध पिलाती है, उसी तरह गुरु भी अपने शिष्य को विद्या-अमृत पिलाते है। गुरु के प्रति श्रद्धा-सद्भावना रखकर उनका वात्सल्य प्राप्त करते हुए जो सीखा जाता है, वह जीवन में लाभदायक सिद्ध होता है।

माता जीजाबाई और समर्थ गुरु रामदास द्वारा प्रदान संस्कारों ने छत्रपति शिवाजी, माता जयवन्ता बाई के संस्कारों द्वारा मेवाड़ की शान महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह के संस्कारों ने एक नहीं चार पुत्र अजीत सिंह, जुझार सिंह, फतेहसिंह और जोरावर सिंह जैसे शेर पैदा किये जो देश और धर्म की रक्षा के लिए बलिदान हो गए। बच्चे को प्रदान संस्कारों में माता-पिता और गुरु के साथ-साथ, घर, समाज एवं विद्यालय का वातावरण भी बहुत अधिक महत्त्व रखता है। घर, समाज एवं विद्यालय का वातावरण गंदा होगा, प्रदूषित होगा तो बालक के शरीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक और बौद्धिक विकास भी नकारात्मक होगा। (तोते की कथा) वर्तमान में जिस तरह से समाज का पाश्चात्यकरण हो रहा है ऐसे संक्रमण काल में बच्चों को सही संस्कार और परिवेश प्रदान करना हम सभी का कर्त्तव्य है। किताबी ज्ञान के साथ महापुरुषों के प्रेरणादायी जीवन प्रसंगों का समावेश बालक के चारित्रिक उत्थान के लिए अति आवश्यक है।

राजेश कुमार गोयल, व्याख्याता रा.उ.मा.वि.दुर्गापुरा जयपुर **मो. 9414363006**

Exam Article

HOW TO IDENTIFY TENSES FROM VERB PHRASES

❒ J.C. Paliwal

It is an accepted fact that the beginners should learn the mother tongue first and then they should switch over to any other language. English is a foreign language and our beginners find it difficult because they don't have enough vocabulary and the knowledge of basic patterns.

It is generally observed that without understanding tenses, students find it difficult to go further. For most of the students, tense is the most difficult topic and hence making of sentences is a challenge before them. If we look at the verb phrases, they are self explanatory.

The first form of the verb --- Present Simple Tense
The first form of the verb + e/es---Present Simple Tense
The second form of the verb --- Past Simple Tense
Do/does+The first form of verbs---Present Simple Tense
Did The first form of verbs --- Past Simple Tense
Verb + ing indicates → Continuous Tense
V3/been indicates → Perfect Tense
Shall/will indicates → Future Tense

1. Play – I form – Present Simple
2. Played -- II form -- Past Simple
3. Plays -- I form + s/es – Present Simple
4. Did not play -- Past Simple
5. Is/am/are - - play**ing**

Present/Past/future → Continuous → Present Continuous Tense

6. Has/have written

Present/past/future → V_3 → Perfect → Present Perfect Tense

7. Has been runn**ing**

Present/past/future → V_3 (be) → Continuous

→ Perfect → Present Perfect Continuous Tense

8. Was/were speak**ing**

Present/**past**/future → Continuous → Past Continuous Tense

9. Had broken

Present/**past**/future → V_3

→ Perfect → Past Perfect Tense

10. Had been watch**ing**

Present/**past**/future → V_3 (be) → Continuous

→ Perfect → Past Perfect Continuous Tense

11. Will/shall go

Present/past/**future** → V_1

→ Simple → Future Simple Tense

12. Shall/will be mak**ing**

Present/past/**future** → Continuous → Future Continuous Tense

13. Shall/will have forgiven

Present/past/**future** → V_3

→ Perfect → future Perfect tense

14. Shall/will Have been repair**ing**

Present/past/**future** → V_3 → Continuous

→ Perfect → Future Perfect Continuous Tense

DEO & Principal, DIET
Chittorgarh
(Rajasthan)

नवाचार

शिक्षा को रंगों से रुचिपूर्ण बनाती है-शिक्षिका रेहाना चिश्ती

❒ दिनेश विजयवर्गीय

वर्षा ऋतु में हरी-भरी प्रकृति और आसमान से झाँकता सतरंगी इन्द्रधनुष का मनमोहिनी आकर्षण सहज ही सबका मन मोह लेते हैं। रंगों की दुनिया में जीने वाले आर्टिस्ट कैनवास पर जब रंगों से चित्रों का सृजन करते हैं तो कला प्रेमियों के मन को लुभाने लगते हैं। रंगों का आकर्षण ही व्यक्ति के मन को सुख-शांति प्रदान कर उसे आनन्दित करता रहता है। रंगों के महत्त्व के कारण ही छोटे बच्चों को सहज रूप से पुस्तकीय ज्ञान से जोड़ने के लिए उन्हें रंग-बिरंगे आकर्षण से सजाया जाता है।

शिक्षा की आनन्दमय प्राप्ति के लिए बच्चों की दुनिया में रंगों के आकर्षण के महत्त्व को समझ कर शिक्षिका रेहाना चिश्ती ने अपनी कलाकृतियों से बच्चों की कॉपियाँ, पुस्तकों, हाजिरी रजिस्टर एवं स्कूल की दीवारों को सजाया है और बच्चों के लिए मनोरंजन व प्रसन्नता वाला वातावरण बनाकर शिक्षा प्राप्ति के लक्ष्य को सरलता से जोड़ने का प्रयास किया है। रेहाना ब्लेक बोर्ड पर भी विषय व पर्व अनुरूप चित्रों का सृजन कर अध्यापन कराती है।

बून्दी जिले के हिण्डोली तहसील के गाँव धनावा के उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन कराने वाली शिक्षिका रेहाना चिश्ती ने समय की आवश्यकता व मनोरंजन के साथ बच्चों की पढ़ाई के महत्त्व को समझा। वह यह बेहतर समझती है कि किसी भी स्कूल की सुन्दरता एवं साफ-सफाई से भरे शांत वातावरण में एक विशेष अपनापन से भरा आकर्षण होता है। सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है। अपनी प्रतिभा एवं नवाचारों के माध्यम से शिक्षण करा अपनी पहचान बनाने वाली रेहाना चिश्ती को पिछले दिनों जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय ऐजुकेशनल फेस्टिवल समारोह में राज्यपाल द्वारा सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ। उनके निर्देशन में स्कूल की एक छात्रा को पूर्व में भी स्वच्छ विद्यालय प्रतियोगिता में राज्य स्तरीय सम्मान मिला। सुदामा सेवा संस्थान बून्दी की ओर से महात्मा गाँधी जयंती पर शिक्षण में

उनकी समर्पित भूमिका के लिए सम्मानित किया गया।

रेहाना ने अपनी कलाकृतियों के माध्यम से एस.आई.क्यू.ई. एवं सी.सी.ई. की चित्रमय समय सारिणी भी बनाई जिसे न केवल बून्दी जिले के बल्कि अन्य जिलों की स्कूलों में भी पसन्द किया जा रहा है। प्रशासनिक कार्यों व जनजागरण के लिए भी बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, स्वच्छता मिशन, अध्यापक-

अभिभावक सम्बन्ध व मीना मंच पर्यावरण दिवस, योग दिवस, नशा मुक्ति व हाथ धुलाई दिवस के अवसर पर बनाई गई रेहाना की रंगों से सरोबार कलाकृतियों को प्रबुद्धजनों की प्रशंसा मिली है।

अपनी सृजनात्मकता और कलात्मक कार्य के लिए पहिचान बना चुकी रेहाना को पिछले दिनों एबीएल. किट सरलीकरण कार्यशाला में भाग लेने हेतु जयपुर भी बुलाया गया है। वह बून्दी मीना मंच की राज्य संदर्भ व्यक्ति के रूप में अपना उत्तरदायित्व वहन कर रही है।

नवम्बर में आयोजित बून्दी उत्सव में रेहाना ने अपने सहयोगियों के साथ जैत सागर रोड, सर्किट हाऊस एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की चारदीवारी पर कलात्मक कलाकृतियाँ बनाकर शिक्षा संदेश दिये। लोगों ने मटमैली वीरान दीवारों को रंगों की दुनिया में सजाकर जो आदर्श प्रस्तुत किया है उसकी दिली प्रशंसा की है।

शिक्षिका रेहाना चिश्ती यह अच्छे से जानती है कि उनका नवाचार के साथ अध्यापन करवाना न सिर्फ बच्चों की शिक्षा के लिये बेहतर उपयोगी है, अपितु सहज भाव से स्वीकार्य भी है। रंगों की दुनिया जहाँ हमारे थके हारे मन को तरोताजा एवं प्रफुल्ल बनाए रखती है, वहीं वातावरण में सकारात्मकता भी बनाये रखती है। रेहाना का सोच है कि जीवन के हर क्षेत्र में खुशी भरे माहौल में ही तो सफलता के पायदान पर चढ़ा जा सकता है।

216, मार्ग-4, रजत कॉलोनी
बून्दी-323001 (राज.)
मो: 9413128514

रपट

शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय

मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2017

❒ मकान सिंह चौहान

शिक्षा विभागीय राज्यस्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह 2017 का भव्य शुभारंभ।

दिनांक-16 दिसंबर 2017, समय-प्रातः 11.00 बजे। स्थान-वेटरनरी ऑडिटोरियम हॉल, राजूवास, बीकानेर।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीकानेर पश्चिम के विधायक माननीय श्रीमान डॉ. गोपाल कृष्ण जोशी। कार्यक्रम की अध्यक्षता में सुशोभित रहे श्रीमान नथमल डिडेल निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। सम्मान समारोह के विशिष्ट अतिथि रहे अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री परमेश्वर लाल, अतिरिक्त निदेशक प्राशि श्री असलम मेहर, वित्तीय सलाहकार माशि श्री ब्रहमदत्त शर्मा, वित्तीय सलाहकार प्राशि श्री राजेन्द्र सिंह डूडी, उपनिदेशक(माशि) श्री विजय शंकर आचार्य।

हर साल शिक्षा निदेशालय के स्थापना दिवस पर आयोजित किया जाने वाला सम्मान का यह ओजस समारोह शिक्षा विभाग के राज्य भर के कार्यालयों, स्कूलों में कार्यरत उन कार्मिकों को सम्मानित करता है जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन व जुनून से अपने पदीय दायित्वों के निर्वहन में विगत वर्षो में श्रेष्ठता के नए मानक स्थापित कर विभाग को नए आयाम दिए हैं।

माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर मुख्य अतिथि श्रीमान डॉ. गोपाल कृष्ण जोशी द्वारा समारोह का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात् राजकीय सौभागमल बोथरा उ.मा.वि. की छात्राओं द्वारा अतिथियों के सम्मान में स्वागत गान गाया गया। छोटी काशी के नाम से विख्यात बीकानेर में संस्थित निदेशालय के कार्मिकों द्वारा अतिथियों का सम्मान राजस्थानी परम्परा के अनुरूप साफा एवं माल्यार्पण द्वारा किया गया।

राज्यस्तरीय इस सम्मान समारोह में विभाग की ओर से स्वागत भाषण नई पीढ़ी की युवा कार्मिक श्रीमती गीतांजली वर्मा वरिष्ठ सहायक रा. सौ. बोथरा उ. मा. वि, गंगाशहर द्वारा दिया गया एवं पधारे हुए सभी अतिथियों व राज्य भर से सम्मानित होने वाले साथी कार्मिकों को बधाई, उपस्थित अतिथियों, आगन्तुकों का आभार एवं अभिनंदन करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

राज्यस्तरीय सम्मान समारोह में इस बार 41 कार्मिकों को उनकी श्रेष्ठतम सेवाओं के लिए राज्य भर से चयनित किया गया। राजस्थान राज्य के सबसे बड़े विभाग, शिक्षा विभाग की माला के ये मोती बारी-बारी से उपस्थित अतिथियों के कर कमलों से सम्मानित किए गए।

राज्यस्तर पर सम्मान के लिए चयनित कार्मिकों की सूची-

1. **श्री वंश प्रदीप सिंह,** वरिष्ठ सहायक
   कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
2. **श्री नरेश कुमार नवाल,** कनिष्ठ सहायक,
   कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा अजमेर मण्डल, अजमेर।
3. **श्री मनोज कुमार वैष्णव,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
   कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा उदयपुर मण्डल, उदयपुर।
4. **श्री श्याम लाल पालीवाल,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
   कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा उदयपुर मण्डल, उदयपुर।
5. **श्री मोहन लाल शर्मा,** वरिष्ठ सहायक,
   कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा, बूंदी।
6. **श्री लक्ष्मीलाल स्वर्णकार,** अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी,
   कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, चित्तौड़गढ़।
7. **श्री प्रताप सिंह राजपूत,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
   कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा भरतपुर मण्डल, भरतपुर।
8. **श्री सत्यनारायण मीणा,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, थाना तहसील हिण्डोली, बूंदी।
9. **श्री सुरेश चन्द मीणा,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
   कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा कोटा मण्डल, कोटा।
10. **श्री विष्णु प्रकाश शर्मा,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
    कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा, झालावाड़।
11. **श्री बृजेन्द्र बिहारी शर्मा,** वरिष्ठ सहायक,
    राजकीय आदर्श उ.मा. विद्यालय, कमालपुरा (वैर) भरतपुर।
12. **श्री अरुण कुमार शर्मा,** वरिष्ठ सहायक,
    कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, कोटा।
13. **श्रीमती अमरा देवी,** सहायक कर्मचारी,
    कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
14. **श्री राजमल प्रजापत,** वरिष्ठ सहायक,
    कार्यालय ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी,
    पंचायत समिति निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़।
15. **श्री सत्यनारायण राठौड़,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
    कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, बांसवाड़ा।
16. **श्री आनन्द कुमार साध,** वरिष्ठ सहायक,
    कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर।
17. **श्री देवकीनंदन गुप्ता,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
    राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, अकलेरा, झालावाड़।
18. **श्री सुरेश कुमार मुंगड़िया,** वरिष्ठ सहायक,
    राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पारसोला, प्रतापगढ़।
19. **श्री मदनलाल नाई,** सहायक कर्मचारी,
    राजकीय बा.उ.मा. विद्यालय, चाचा नेहरु नोखा, (बीकानेर)।
20. **श्री प्रकाश चन्द्र व्यास,** वरिष्ठ सहायक,
    राजकीय बा.उ.मा. विद्यालय, मेड़ता सिटी, नागौर।
21. **श्री रामसिंह राजपुरोहित,** प्रशासनिक अधिकारी,
    कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, पाली।
22. **श्री अनिरुद्ध गौतम,** वरिष्ठ सहायक,
    कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, सवाईमाधोपुर।
23. **श्री हरीराम मीणा,** अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी,
    कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
24. **श्री विनोद मेहता,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
    कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा जोधपुर मण्डल, जोधपुर।

25. **श्री राम फूल गुर्जर,** वरिष्ठ सहायक,
रा.आ.उ.मा. विद्यालय माधोराजपुरा, तहसील फागी, जयपुर।
26. **श्री प्रकाश शर्मा,** वरिष्ठ सहायक,
कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, चूरू मण्डल, चूरू।
27. **श्री छगनलाल प्रजापत,** वरिष्ठ सहायक,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, सिरोही।
28. **श्री सुन्दर लाल डांगी,** प्रयोगशाला सेवक,
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर।
29. **श्री धन सिंह भाटी,** कनिष्ठ सहायक,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक प्रथम, नागौर।
30. **श्री बदाराम,** सहायक कर्मचारी,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, सिरोही।
31. **श्री सत्यनारायण सोनी,** वरिष्ठ सहायक,
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पचपहाड़, झालावाड़।
32. **श्री अमृत अग्रवाल,** वरिष्ठ सहायक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रामनगर, अजमेर।
33. **श्री विरेन्द्र कुमार,** सहायक कर्मचारी,
कार्यालय उप निदेशक माध्यमिक अजमेर मण्डल, अजमेर।
34. **श्री कृष्णलाल वधवा,** सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
राज. आदर्श उ.मा. विद्यालय गणेशगढ़, श्री गंगानगर।
35. **श्री रूपाराम मीणा,** प्रशासनिक अधिकारी,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, सिरोही।
36. **श्री पूनम सिंह चौहान,** सहायक कर्मचारी,
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
37. **श्री अनवरउद्दीन शेख,** वरिष्ठ सहायक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धलकिया, बांसवाड़ा।
38. **श्री कान्तिलाल साद,** अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी,
कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, डूंगरपुर।
39. **श्री भवानी शंकर कुमावत,** वरिष्ठ सहायक,
कार्यालय ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा सांभरलेक, जयपुर।
40. **श्री प्रकाश चन्द्र मोदी,** वरिष्ठ सहायक,
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
41. **श्री ओम प्रकाश मेहरा,** सहायक कर्मचारी,
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

अपनी तरह के बिरले एवं भव्य स्तर के इस सम्मान समारोह में श्रेष्ठ कार्मिकों को सम्मानित करने का मंच क्रम चयन इस प्रकार रखा गया कि मंचस्थ अतिथि क्रमशः माल्यार्पण, साफा, प्रतीक चिह्न प्रशस्ति पत्र, शॉल, साहित्य (शिविरा विशेषांक) एवं श्रीफल सम्मानित होने वाले कार्मिक को भेंट करते हैं, तालियों की करतल ध्वनि से वेटरनरी का सभागार गुंजायमान होता है।

विशिष्ट एवं श्रेष्ठ कार्मिकों के सम्मान के इस अवसर पर मुख्य अतिथि बीकानेर पश्चिम के विधायक माननीय **डॉ. गोपालकृष्ण जोशी** द्वारा अपने उद्बोधन में उक्त कार्मिकों का अभिनंदन करते हुए उन्हें शिक्षा विभाग का गौरव बताया गया। उन्होंने कहा कि वे खुद गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं कि उन्हें राज्य भर से आए हुए श्रेष्ठ कार्मिकों को सम्मानित करने का मौका मिला। उन्होंने इस अवसर पर यह सुझाव दिया कि सम्मानित होने वाले कार्मिकों को विभाग द्वारा कुछ नकद राशि भी दी जानी चाहिए। अर्थ प्रोत्साहन से और अधिक कार्मिकों को श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। यह राशि 5,100 से 11,000 की हो सकती है। उन्होंने इस भव्य आयोजन के लिए निदेशक महोदय व उनकी टीम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

उक्त सुझाव व इस अवसर को गरिमा प्रदान करने के लिए माननीय विधायक जी का आयोजन समिति द्वारा, धन्यवाद ज्ञापित किया गया एवं अध्यक्षीय उद्बोधन के लिए श्रीमान नथमल डिडेल निदेशक मा.शि. से आग्रह किया गया।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्रीमान **नथमल डिडेल,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा सम्मानित होने वाले कार्मिकों को बहुत बहुत बधाई देते हुए उन्हें विभाग का ब्राण्ड एम्बेसडर बताया गया। उन्होंने याद दिलाया कि जब हम किसी विभाग में कार्य करते हैं तो हमारे प्रत्येक कार्य से विभाग की पहिचान व छवि जुड़ी होती है, कार्यालय में बाहर से आने वाले आगन्तुक हमारे कार्य से ही विभाग की कार्य संस्कृति का आकलन करते हैं व विभाग के बारे में अपनी राय बनाते हैं। उन्होंने सम्मानित होने वाले राज्यभर के कार्मिकों का आह्वान किया कि वे अपने-अपने पदस्थापन वाले स्थान में इतना अच्छा कार्य करें कि निदेशालय स्तर पर समस्याएँ कम से कम आएं स्थानीय स्तर पर ही समस्याओं के समाधान उपलब्ध हों। आपका कार्य पूरे राज्य में शिक्षा विभाग के कार्मिकों में मिसाल बने और आपकी प्रेरणा पाकर वे कार्य व अपने पदीय दायित्वों के प्रति अधिक सजग, श्रेष्ठ व उर्जावान बनें। उन्होंने आयोजन में सम्मिलित कार्मिकों की भी प्रशंसा करते हुए उनके आयोजन को सराहनीय व श्रेष्ठ बताया।

अंत में बीकानेर की परम्परा व विभाग की गरिमा के अनुरूप निदेशालय के कार्मिकों द्वारा मंचस्थ आमंत्रित अतिथियों को अतिथि प्रतीक चिह्न भेंट स्वरूप प्रदान किए गए एवं समारोह के औपचारिक समापन की घोषणा के साथ सभी ने एक दूसरे को बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए इन विशिष्ट पलों को अपनी स्मृति में संजोया। प्रतिवर्ष की भाँति सम्मानित कार्मिकों व उनके स्वजनों, आगन्तुक अतिथियों तथा विभाग के कार्मिकों के लिए स्वरुचि भोज की व्यवस्था माध्यमिक शिक्षा निदेशालय परिसर में की गई। सभी ने स्वरुचि भोज का आनन्द लिया।

सम्मान समारोह में प्रभावी एवं कलात्मक एंकरिंग राज्यभर में विशिष्ट पहिचान रखने वाले कर्मचारी नेता श्री अविनाश व्यास सहायक प्रशासनिक अधिकारी, श्री सुरेश व्यास प्रशासनिक अधिकारी एवं श्री मदन मोदी वरिष्ठ सहायक द्वारा बारी-बारी से की गई।

इसी के साथ वर्ष 2017 का सम्मान व श्रेष्ठता का एक और पृष्ठ शिक्षा विभाग के गौरवपूर्ण इतिहास की किताब में जुड़ गया। आने वाले वर्षों में सम्मान व श्रेष्ठता का यह दमकता, भव्य आयोजन और भी विशाल व ओजसपूर्ण रूप में अपनी माला में नए मोतियों के साथ प्रस्तुत होगा और नई पीढ़ी के युवा साथियों को पदीय दायित्वों के निर्वहन के श्रेष्ठ मानक स्थापित करने को हमेशा प्रेरित करता रहेगा, ऐसी आशा व कामना के साथ।

वरिष्ठ सहायक,
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर
मो. 9413172727

पुस्तक समीक्षा

शब्द कभी बांझ नहीं होते

कवि : फारूक आफरीदी **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, जयपुर **संस्करण :** 2017 **पृष्ठ :** 112 **मूल्य :** ₹ 120

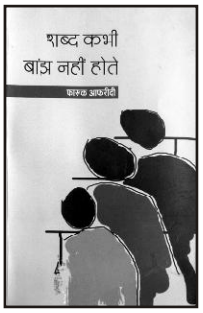

व्यंग्य विधा के राजस्थान से प्रमुख हस्ताक्षर फारूक आफरीदी का प्रथम कविता संग्रह 'शब्द कभी बांझ नहीं होते' उनके कवि रूप को प्रतिस्थापित करता है। यह शीर्षक कवि की शब्द के प्रति आशा-आस्था और शब्द की ऊर्वरा-शक्ति को उजागर करता है। संग्रह में इस शीर्षक की कविता को अंत में रखा गया है, जिसकी पंक्तियाँ हैं- 'शब्दों की कोख/ संवेदना से भरती है/ जैसे भरती है नदी/ और उफनती बहती है/ समुद्र की ओर' (पृष्ठ-111) कवि का मानना है कि अनुभूति के आवेग से कविताएँ रची जाती हैं। कवि के लिए शब्द और संवेदना का संबंध ही रचना का उत्स है। रचना में वह अपनी जीवनानुभूतियाँ को प्रस्तुत करते हुए जीवन-दृष्टि से रू-ब-रू होने के अवसर देता है। ऐसे में अनेक स्थल पाठकों को सकारात्मक बोध तक ले जाते हैं।

गद्यकारों की कविताओं में बहुधा गद्य कथात्मक रूप से हावी रहता है। फारूक आफरीदी भी इसके अपवाद नहीं है। कहना होगा कि 'शब्द कभी बांझ नहीं होते' की कविताएँ उनके व्यंग्य-लेखन के समानांतर उनके अनुभवों-अनुभूतियों का संवेदनात्मक कोलाज है। हम यहाँ उनके घर-संसार में माँ, पत्नी, बच्चों, मित्र-मंडली और पूरे सामाजिक पर्यावरण के साथ देश की बदलती परिस्थितियों को भी देख-समझ सकते हैं। कवि के सुख-दुख, आशा-निराशा, हर्ष-विषाद हमें अपने-से लगते हैं। संभवतः इसका प्रमुख कारण कवि का जीवन के प्रति अथाह प्रेम है और वह इसे अपने कोण से देखने का पक्षधर है। संग्रह की पहली कविता 'मेरा हल्फिया बयान' में कवि उद्घोषणा करता है- 'बड़ी से बड़ी सजा दो/ हँस कर झेल लूँगा/ लेकिन/ छोड़ूँगा नहीं प्रेम करना।' (पृष्ठ-14) कवि ने जैसे प्रेम के पक्ष में अपना बयान देकर, सारी कायनात को देखने-सोचने और समझने की एक दिशा बना ली है। प्रेम से रिक्त होते इस संसार में वह सवाल करता है कि 'सृष्टि का कोई जीव तो बताओ/ जो प्रेम नहीं करता हो?' (पृष्ठ-14) एक अन्य कविता 'कबीर अगर तुम न हुए होते' को भी यहाँ देखा जाना उचित होगा- 'कबीर अगर तुम न हुए होते/ धागे प्रेम के कितने टूटे होते/ रंग कितने बिखरे होते/ ढाई आखर अपने पर रोते।' (पृष्ठ-35)

अविश्वास के रहते जीवन और जगत में प्रेम का स्थान संकुचित होता जा रहा है। संग्रह की कविताएँ प्रेम की पुनर्स्थापना के साथ अपना एक विमर्श देती है। हमारे संस्कार और संस्कृति से पोषित गाँवों का स्मरण यहाँ स्वभाविक ही है। बदलते जीवन में ध्वस्त होते मानव मूल्यों को इन कविताओं में उभारा गया है। कवि कविताओं में लोक की जीत को घोषित करते हुए आदमी की पहिचान आदमी को सौंपना चाहता है। आज जब आदमी के भेष में आदमी की पहिचान नहीं हो रही है ऐसे में इन कविताओं का महत्त्व बढ़ जाता है। कवि भीमा गडरिया जैसों की व्यथा-कथा जानता है। वह छोटे से लेकर बड़े आदमी तक में परिवर्तन की बयार देखता है। उसे कार्य और व्यवहार की प्रतिकूलता 'ईमान' कविता लिखने को प्रेरित करती है- 'छीन कर ईमान/ कहा था उसने-/भला कोई साथ लिए फिरता है/इस तरह।' (पृष्ठ-17) ऐसे में विकल्प के रूप में अब भी कवि को शब्द की सत्ता पर अटूट आस्था और विश्वास है। वह लिखता है- 'मित्रों!/यह मत कहो-/कविता अब क्रांति नहीं ला सकती/ क्रांति के बीजों/ और अवरोधों से/ उपजती है वह।' (पृष्ठ-21)

कवि हमें कविताओं में अनेक बिम्बों और प्रतीकों द्वारा जीवन-दृष्टि का बोध कराता है। समय सापेक्ष बदलती परिस्थितियों में वह विवेकवान होने का संदेश आरोपित नहीं करता। यह संदेश उसके स्वयं के कार्य, व्यवहार और परिस्थितियों के स्वीकार-अस्वीकार के भावों में निहित है। अनेक स्थलों पर उसके निर्णय हमारे दायित्व-बोध को पोषित करते हैं। राजस्थानी संस्कृति की शूरवीरता का विख्यात दृश्य नवीन शब्दावली में कविता 'पति से' में देखा जा सकता है-

'हरावल दस्ते में हो तुम/
और हारते हुए से!/ यह तो क्षम्य नहीं
चिंता चूड़ियों की/ करो मत
लड़ो तुम जुझार बनकर
हारना मुझे/ कतई मंजूर नहीं।' (पृष्ठ-51)

कविताओं की भाषा सहज, सरल और प्रवाहयुक्त है। कवि लूनी नदी और पेड़ों से बतियाता है तो वह समय से भी सीधा संवाद करना जानता है- 'सुनो समय!/ तुम्हें रोकता-टोकता नहीं/ बस इतना भर चाहता हूँ तुमसे/ बच जाएँ संवेदनाएँ' कवि संवेदनाओं से प्रेरित-पोषित होता है और कविताओं से अपने पाठकों को संवेदित करता है। कविता 'मैं और वह' में इन्हीं संवेदनाओं के कारण वह जीवन के पक्ष में अपना निर्णय लेते हुए कला-संगीत में जीवन का उद्देश्य मानता है। 'मुझे गुस्सा पीना आता/ उसे गुस्से में खून/ उसे प्रिय लगता/ दनदनाती और आग उगलती बंदूकें/ चीत्कारों पर वह झूम उठता/ इधर मैं था/ एकदम दूसरी तरफ/ दूसरे गुर्दे की तरह/काँप-काँप उठता/ छिटक-छिटक जाता/ पड़ौसी होने का/ धर्म भी कहाँ निभा पाता।' (पृष्ठ-62) इन कविताओं में मित्र-धर्म भी अपने स्वच्छ और नैतिक रूप में प्रस्तुत हुआ है, उसमें इतना अवकाश रखा गया है कि कहा जा सके- 'मैंने सुना और चुना/ फिर दिखाया उसे रास्ता/ बाहर जाने का/ फिर कभी न आने का।' (पृष्ठ-65)

कविताओं में कवि के सपनों का संसार है जिसको सूर्योदय का इंतज़ार है। कवि लिखता है- 'मेरे सपनों का सूरज/ अभी उगा नहीं है/ पर, दिखने लगी है/ उसकी लालिमा/ फिर फूटेंगी किरणें/ मिट जाएगा अंधकार/ सजने लगेगा फिर से/ भरोसे का संसार।' (पृष्ठ-72) इसी भरोसे से कवि समय का साक्षी बनकर एक सुंदर संसार की कल्पना को बचाए रखने सफल हुआ है। कवि अपनी जमात को संदेश देते हुए कहता है- 'कवि सुन!/ समय का सच लिख/ समय का सुइया देख रहा है/ गिद्ध दृष्टि से तुझे/ झूठ और पाखंड रचेगा अगर/बख्सा नहीं जाएगा तू/ रख रही है हिसाब-किताब नई पीढ़ी भी' यह सजगता और सतर्कता ही शब्द पर आस्था

और विश्वास का प्रतिमान है। कवि का विश्वास है कि निश्चय ही नया सवेरा आएगा क्योंकि शब्द कभी बांझ नहीं होते।

कविताओं में गद्य की कथात्मकता के साथ ही नाद को साधने का प्रयास अनेक स्थलों पर देखा जा सकता है। संग्रह की कविताओं में कवि फारूक आफरीदी का कवि-मन अपनी अभिव्यक्ति से एक वितान रचता है। इन कविताओं की अनुगूँज और उपस्थिति लंबे समय तक बनी रहेगी।

समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
सी-107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी,
बीकानेर-334003
मो: 9461375668

जल और समाज

लेखक : डॉ. ब्रजरतन जोशी **प्रकाशक :** कविता प्रकाशन तेलीवाड़ा, बीकानेर **प्रथम संस्करण** : 2005 **परिवर्धित संस्करण** : 2017 **मूल्य :** ₹ 350 **पृष्ठ संख्या:** 144

बीकानेर के जल-स्रोतों के अध्ययन से संबंधित यह पुस्तक जल संग्रहण व समाज के योगदान को केन्द्र में रखकर पूर्व प्रकाशित प्रमुख पुस्तकों में वर्ष 1993 में प्रकाशित अनुपम मिश्र कृत ''आज भी खरे हैं तालाब'' एवं वर्ष 1997 में सुनीता नारायण व अनिल अग्रवाल कृत ''डाइंग विज़डम'' की शृंखला में एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। जहाँ पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र द्वारा भारत में विभिन्न जातियों द्वारा वर्षा जल संग्रहण व सिंचाई हेतु तालाबों के परम्परागत प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है वहीं ''डाइंग विज़डम'' पुस्तक में भारत के 15 पर्यावरणीय अँचलों में जल संग्रहण के प्रयासों में आधुनिक तकनीक के समावेश से जल संरक्षण करने एवं भविष्य के लिए जल सुरक्षा को महत्त्वपूर्ण बताया गया है यद्यपि इन पुस्तकों में जल संग्रहण में भारत, विशेषकर राजस्थान का उल्लेख है परन्तु उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में जल संग्रहण हेतु समाज के योगदान को उसके अनेक पहलुओं से देखने का प्रयास 'जल एवं समाज' पुस्तक के प्रणेता डॉ. ब्रजरतन जोशी ने ही किया है। डॉ. जोशी द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों व जनश्रुतियों की गहराई में उतरते हुए ताल-तलाइयों के निर्माण व उनके अर्थशास्त्र को दर्शाने का प्रयास किया है। यह पुस्तक प्रेरित और प्रभावित शोध के अंतर को रेखांकित करती है क्योंकि लेखक जगह-जगह से प्राप्त परम्परागत ज्ञान को ग्रहण करते हुए उससे प्रभावित न होते हुए प्रेरित होकर उसी ज्ञान परम्परा का विस्तार-विकास कैसे हो इसकी अच्छी बानगी प्रस्तुत करते हैं। सम्भवतः इसलिए अनुपम मिश्र ने लेखक के योगदान को रेखांकित करते हुए लिखा है ''पुस्तक श्रद्धा से किये शोध का परिणाम है आंकड़ों का ढेर नहीं।'' पुस्तक में तालाबों के निर्माण के लिए विभिन्न जातियों के प्रयासों, मान्यताओं, मनोकामनाओं व आस्थाओं को बखूबी उकेरा गया है एवं जल स्रोतों को उनके निर्माण काल से लेकर वर्तमान तक विभिन्न आख्यानों के माध्यम से पिरोने का प्रयास किया गया है।

लेखक ने पुस्तक में उल्लिखित तथ्यों की प्रामाणिक पुष्टि के लिए तत्कालीन शिलालेखों, 19वीं सदी की मोडी लिपि बहियों, गजेटियर, तवारिख, गजल का कुशल प्रयोग किया है। इससे यह स्थापित होता है कि शोधार्थी लेखक ने एक प्रामाणिक इतिहास दृष्टि का वरण एवं चयन करते हुए पुरातात्विक, अभिलेखीय और मौखिक इतिहास जैसी विभिन्न विधियों का सौम्य प्रयोग किया है। जहाँ समय के प्रभाव से स्रोत खत्म हो गए वहाँ व्यावहारिक निष्ठा का परिचय देते हुए लेखक ने जनश्रुतियों के माध्यम से अपने लेखन में सहेजा है। इसी कड़ी में डॉ. जोशी संभवतः पहले जल अध्येता हैं जिन्होंने जिला कार्यालय के प्रशासनिक पत्रों को एक ऐतिहासिक दस्तावेजी प्रमाण रूप में प्रयुक्त किया है।

समाज के अन्यान्य अनेक विस्थापनों पर प्रकाश डालते हुए पुस्तक में जातियों के पलायन व पुनः बसावट से जल स्रोतों के निर्माण, विभिन्न मेलों, त्योहारों में यात्रियों की प्यास बुझाने के साथ-साथ स्थानीय जनता में गोताखोरी की नई पीढ़ी के लिए प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में जल स्रोतों के योगदान का बखूबी उल्लेख किया गया है। व्यासों की बगेची, कसाइयों की तलाई, चूनगरान तालाब के एक ही आगोर क्षेत्र के माध्यम से पुस्तक जल स्रोतों के सामाजिक सौहार्द्र वृद्धि में निभाए जाने वाले रूप को भी दर्शाती है। तालाब हेतु भूमि का चयन, खुदाई हेतु उपर्युक्त समय, मिट्टी व तल परीक्षण, तालाब की पाल एवं नेष्टा का निर्माण, स्वच्छ जल का आगोर से आगार में एकत्र होना आदि तालाब निर्माण में प्रयुक्त होने वाले आवश्यक अवयवों को बेहद वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास किया गया है।

पुस्तक का तृतीय अध्याय स्थापत्य की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण है। किलों, स्मारकों, मकबरों, धार्मिक स्थलों के स्थापत्य निर्माण की दृष्टि से पूर्व में काफी पुस्तकें प्रकाशित हैं परन्तु जल स्रोतों के स्थापत्य एवं सौंदर्य की दृष्टि से सटीक विवेचना संभवतः इस पुस्तक में हुई है। ऐसे शोधपरक लेखन के लिए लेखक का न केवल क्षेत्र विशेष से जुड़ा होना अनिवार्य है बल्कि पीढ़ियों से प्राप्त ज्ञान एवं अनुभव को भी अपने लेखन में समाहित करना होता है। तालाबों के विभिन्न प्रकार के घाटों एवं जल स्रोतों की स्थापत्य कलाओं का वर्णन इस पुस्तक को ऊपर वर्णित पुस्तकों से अलग पहिचान दिलाता है।

पुस्तक अपने शीर्षक के अनुरूप जल के प्रति समाज की सोच में आए युगानुकूल परिवर्तन को गंभीरतापूर्वक रेखांकित करती है। ''यह समाज के दिमाग में आई घटिया सोच का परिणाम है कि एक समय जो पुण्य कर्म था वही आज.... अनुपयोगी कर्म हो गया है।'' आगोर की सुरक्षा हेतु प्रहरी, विभिन्न वनस्पतियों की उपलब्धता, समाज द्वारा नवदंपती को ताल-तलाई में जात के लिए भेजना आदि समाज के संयुक्त सहकारी दृष्टिकोण को बखूबी दर्शाया गया है।

अंतिम अध्याय ''चौंकाने वाले तथ्यों के साथ'' में उन कारणों पर प्रकाश डाला गया है कि किस प्रकार एक शहर, जो एक समय ''तालाबों की नगरी'' था ताल-तलाइयों का लोप होकर आबादी में परिवर्तित हो गया। पुस्तक बढ़ते नगरीकरण की वक्रदृष्टि व भू-माफियों की कारगुजारियों पर भी प्रहार करती है।

अंतिम पृष्ठों पर लेखक द्वारा 19वीं सदी के बीकानेर गजल एवं प्रयोग में लाई गई स्रोत सामग्री का ब्यौरा दिया गया है जो सुधी पाठकों को यहाँ-वहाँ की भटकन से बचाने के लिए मददगार है। लेखक ने ताल-तलाइयों को

बीकानेर के नक्शे पर दर्शाया है व अपनी भाषा को सरल एवं आम बोलचाल की परिधि में रखते हुए कुछ अंग्रेजी शब्दों ''हार्ड एंड फास्ट, टेंडर'' का देवनागरी रूपान्तरण भी दिया है। पुस्तक में प्रचलित मुहावरें ''सावण बीकानेर, तांबे का तला'' की भी खुलकर विवेचना की गई है।

पुस्तक का कवर, प्रिंटिंग व गेटअप सराहनीय है। डॉ. जोशी की यह पुस्तक एक गहन शोध का परिणाम है जो न केवल इतिहास, स्थापत्य, साहित्य, नृतत्वशास्त्र, जनसांख्यिकी विषय के सुधी पाठकों के लिए उपयोगी है अपितु जल के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा रखने वाले हर व्यक्ति के लिए सहेजने योग्य कृति है।

जल स्रोतों के प्रति उत्पन्न ''क्या, क्यूं, कैसे'' को रेखांकित करती एवं लोक मानस में व्याप्त जानकारियों से परिपूर्ण यह पुस्तक सभी शहरों के पुराने जल स्रोतों पर इसी तरह के शोध कार्य के लिए अन्य लेखकों को भी प्रेरित करती है। पुस्तक में जो तस्वीरें दी गई हैं उन्हें रंगीन पृष्ठभूमि में रखते हुए इसके अन्य भाषाओं में भी अनुवाद के साथ यदि संस्करण छापे जाएंगे तो अधिक लाभकारी होगा, ऐसी अपेक्षा है।

समीक्षक : **डॉ. नितिन गोयल**
सचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर
मो. 8946939314

सुनो मुक्तिबोध एवं अन्य कविताएँ

लेखक : नवनीत पाण्डे **प्रकाशक :** अनंग प्रकाशन, दिल्ली **संस्करण** : 2017 **पृष्ठ संख्या** : 119 **मूल्य** : ₹ 195

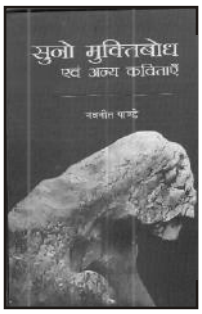

सुनो मुक्तिबोध और अन्य कविताएँ नवनीत पांडे का हिन्दी में प्रकाशित चौथा कविता संग्रह है। तीस वर्षों से साहित्य साधना करते पांडे के इस कविता संग्रह को पढ़कर कहा जा सकता है कि यह संग्रह आम आदमी की पीड़ा के प्रति उनकी सजगता और वैचारिक प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है। इस संग्रह में 83 कविताएँ संग्रहित हैं। जिसमें से पहली पाँच कविताओं को पढ़ कर अनुमान किया जा सकता है कि कवि को कविता की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हो रही है। इन पाँच कविताओं में कवि अपने प्रिय कवि के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनकी तत्कालीन उपेक्षा को रखता है। यहाँ उल्लेखनीय है कि मुक्तिबोध की मृत्यु के पश्चात आयोजित श्रद्धांजलि सभा में अज्ञेय का एक वक्तव्य पढ़ कर सुनाया गया जिसका एक अंश इस प्रकार है कि ''मुक्तिबोध आत्मान्वेषण के कवि थे, पर यह आत्मान्वेषण अपनी किसी विशिष्टता की खोज नहीं था, यह अपने उस रूप की खोज था जो कवि को पूरे समाज से मानव मात्र से, मिला दे। कोई सोच सकता है कि कवि को आत्मान्वेषी कहना अवमानना करना है, पर मैं इसे कठिनतर यात्रा समझता हूँ और कवि मुक्तिबोध का विशेष सम्मान इसलिए करता हूँ कि वह आजीवन इस कठिन साधना में लगे रहे अपने भीतर पैठना, पर पैठ कर उसे बाहर लाना जो अपना नहीं, सबका है। यह किसी के लिए भी कठिन कार्य है; मुक्तिबोध की परिस्थितियों में और भी कठिन था, पर वह निष्ठापूर्वक उसमें लगे रहे।'' (सन्दर्भः नया ज्ञानोदय, नवम्बर 2017, पृष्ठ-9) खैर, यहाँ इस सन्दर्भ को देने का अर्थ ये ही है कि मुक्तिबोध कवि के प्रिय कवि के साथ अपने समय के महत्त्वपूर्ण और तार सप्तक के कवि भी है। खैर, किसी रचनाकार का नाम उसकी रचनाओं के साथ ज़िन्दा रहता है। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती की मुक्तिबोध की रचनाएँ कालजयी हैं।

इस संग्रह की कविताओं में नवनीत जी आम आदमी से रूबरू होते हुए, उसकी चिंताओं को अपनी कलम के माध्यम से उजागर करने के प्रयास करते हुए अपनी कविता 'मैंने कब कहा' में कुछ यूं व्यक्त होते हैं ''मैंने कब कहा/कविता लिखता हूँ/मैं तो सिर्फ/तुम्हारी दुनिया में/ कैसे-कैसे जीता हूँ/कैसे-कैसे मरता हूँ/लिखता हूँ।'' कवि का यह लिखना 'रहिमन पानी' कविता में भी जारी रहता है और कह उठता है कि ''मेरी कलम भरी है/श्रम के माथे टपकते/पसीने की स्याही/जो लिखती है/धरती की छाती पर/मुर्झाए चेहरों की/छांह तलाश रही/उदास आँखों की उम्मीदें।'' अपनी कविताओं में वे आम आदमी के व्यवस्था जनित दर्द को सीधे-सपाट उकेरते हैं। उनका ये दर्द बुजुर्गों की आज की स्थिति को देखते हुए 'मैं बाई नहीं हूँ' में व्यक्त होता है तो 'कौन-कौन संभालेगा' और 'द्रोपदी कहाँ जाए' जैसी कविताओं में स्त्री के दर्द को रखता हुआ विद्रोह करता नजर आता है। इस संग्रह की कविताओं में आम-आदमी के दर्द और उसकी चिंताओं के साथ उसकी विवशताओं को 'घर,घर नहीं है' में देखा जा सकता है। इस संग्रह की कविताओं में कवि अपने अनुभवजनित संसार से अपनी जनपक्षधरता को मुखर करता है।

संग्रह की कविताओं में व्यवस्था से विरोध के स्वर प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देते हैं। 'राजा को नहीं पता', 'क्या है राजा के चित', 'कौन तोड़ेगा राजा का मौन', 'राज ने तय कर लिए थे पाठ्यक्रम', 'राजा को शिकार का बहुत शौक है' और 'राजा के आरोप' जैसी कविताओं में सीधे-सपाट शब्दों में अनुभव किया जा सकता है। इस संग्रह की कविताओं में लेखक की सामाजिक सरोकारों के प्रति मुखरता 'सब धूड़ है'.... 'चाह नहीं', 'हम बुद्धिजीवी और हमारे सच' जैसी कविताओं में देखी जा सकती है।

इस संग्रह की दो कविताएँ इधर-उधर का प्रेम तथा अगर तुमने तोड़ा न होता! जीवन का आत्मसंघर्ष प्रकट होता है। इधर-उधर के प्रेम में ये आत्मसंघर्ष कुछ यूं प्रकट होता है बहुत ढूँढ़ा/उलट-पलट रख दिया/ मन का कोना-कोना/ फिर भी नहीं ही मिली/ वे प्रेम कविताएँ/ जो लिखी गई थी/ कभी किसी के प्रेम में। इसी तरह 'अगर तुमने तोड़ा न होता!' कविता में आदमी का प्रेम में टूटना, बिखरना मुखर हो जाता है और कह उठता है कि खिला रहता/बिखेरता रहता/अपनी सीमाओं में/जैसी भी है अपनी खुश्बू/ अगर तुमने तोड़ा न होता। प्रेम को विस्मृत करते समय में तमाम प्रतिबद्धताओं के बावजूद कवि प्रेम को जिलाए रखने की उस हूंस को प्रकट करता है जो किसी के लिए भी आवश्यक प्रतीत होती है।

तमाम कविताओं से गुजरते हुए यह महसूसा जा सकता है कि इन कविताओं में सीधी-सपाट बयानी एक सहजता गढ़ती है। कवि अपने आस-पास की स्थूल समस्याओं का अवलोकन करता है। ऐसा प्रतीत होता है मानवीय पहलुओं की गहराई से कवि द्वारा सायास दूरी बनाई गई है और वह अपनी प्रतिबद्धताओं के प्रति अत्यन्त आग्रहशील होकर आम आदमी के लिए कविता कहना चाह

शेष पृष्ठ 48 पर

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-वरिष्ठ संपादक

भादवीगुड़ा की शाला में भामाशाह सोनी ने ट्यूबवेल व प्याऊ बनवाया

उदयपुर। रा.मा.वि. भादवीगुड़ा में वर्षों से पीने के पानी की समस्या को उदयपुर के भामाशाह श्री जगन्नाथ सोनी एवं श्रीमती धापूबाई सोनी ने अपने पुत्र स्व. श्री शंकरलाल सोनी एवं पुत्रवधू स्व. श्रीमती मीनाक्षी सोनी की स्मृति में एक ट्यूबवेल मोटर सहित पनघट व प्याऊ निर्माण करवाकर शाला को भेंट कर हमेशा के लिए समाप्त की।

दिनांक 10.12.2017 को शाला प्रांगण में आयोजित भामाशाह सम्मान समारोह के अन्तर्गत ट्यूबवेल पूजन व उद्घाटन किया गया जिसमें ग्राम सरपंच, उपसरपंच, उपप्रधान तथा गणमान्य नागरिक भी शाला परिवार के साथ उपस्थित रहकर साक्षी रहे। संस्थाप्रधान श्रीमती उर्मिला जैन ने भामाशाह श्री एवं श्रीमती सोनी को पगड़ी एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मान करते हुए आभार प्रकट किया। इस अवसर पर भामाशाह परिवार के सदस्य श्री ललित सोनी ने पूरे गाँव मय विद्यालय हेतु महाप्रसादी का आयोजन किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का प्रभावी संचालन श्री ललित श्रीमाली ने किया।

राजकीय ओसवाल जैन उ.मा.वि. अजमेर में शाला गणवेश व स्वेटर वितरण

अजमेर। राजकीय ओसवाल जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर में रोटरी क्लब जयपुर एवं महिला (लेडिज) क्लब अजमेर के सहयोग से 134 विद्यालयी ड्रेस छात्रों को वितरित की गई। जैन समाज ने इस अवसर पर नन्हे-मुन्हों को पानी की 50 बोतलें दी। 'बाल दीप समूह' की सदस्या श्रीमती हेमा गहलोत, श्रीमती नीलू गुप्ता, श्रीमती सोनिया कोहली, श्रीमती अनिला कांकाणी द्वारा 132 स्वेटर छात्र-छात्राओं को वितरित किए। साथ ही समस्त शाला स्टाफ द्वारा मुख्यमंत्री शिक्षा सहायता फण्ड में 38,000/- (अखरे रुपये अड़तीस हजार) की राशि प्रदान की गई।

संस्थाप्रधान श्री आनन्द कुमार शर्मा ने स्वयं 450 छात्रों को टाई प्रदान करते हुए भामाशाह संस्थाओं एवं अध्यापिकों का विद्यालयी गणवेश, पानी की बोतल व स्वेटर वितरण को अनुकरणीय बताते हुए आभार जताया। साथ ही बताया कि संयुक्त प्रयासों से 'रमसा' द्वारा शाला हेतु 9 (नौ) कमरों की स्वीकृति प्रदान की गई है। पूर्व में स्वीकृत हॉल, टॉयलेट व विज्ञान कक्ष तैयार होकर विद्यार्थियों द्वारा उपयोग लिए जा रहे हैं।

एन.एस.एस. के स्वयंसेवकों ने ली सामूहिक बिजली बचत की शपथ

हनुमानगढ़। राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय गोलुवाला में राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) की स्थानीय इकाई के तत्वावधान में 'बिजली बचत की महत्ता' विषय पर शाला प्रांगण में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

'रासेयो' के कार्यक्रम प्रभारी डॉ. दयाराम ने मुख्य वक्तव्य के लिए बिजली विभाग के सहायक अभियन्ता श्री नेमीचन्द वर्मा को आमन्त्रित किया। श्री वर्मा ने बिजली की बचत हेतु शाला के विद्यार्थियों को सारगर्भित व बहु उपयोगी जानकारी देते हुए एल.ई.डी. उपकरणों के उपयोग का सुझाव दिया। साथ ही विद्यार्थियों को बिजली बचत करने तथा चोरी रोकने की शपथ भी सामूहिक रूप से दिलवाई। कनिष्ठ अभियन्ता श्री सुदर्शन यादव, सहा. राजस्व अधिकारी श्री नरेन्द्र लोट, श्री रमेश सोनी ने विचार रखे। संस्थाप्रधान श्री सुखदेव सिंह, प्रभारी श्री गोपालराम ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के अलावा सर्वश्री राजवीर सिंह, सुरेश कुमार, सौरभ गर्ग, लखविन्द्र सिंह, धनंजय आदि उपस्थित रहे।

देशनोक के अतुलदान का शोध राष्ट्रीय स्तर पर चयन

बीकानेर-राजकीय करणी उ.मा.वि., देशनोक के प्रधानाचार्य श्री कौशल किशोर पंवार के अनुसार शाला के छात्र अतुलदान चारण ने 25वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस 2017 की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में अपने शोधकार्य का प्रस्तुतीकरण किया। यह प्रतियोगिता अहमदाबाद (गुजरात) में 27.12.17 से 31.12.17 तक आयोजित हुई। अतुलदान के शोध को सराहा गया। स्टेट कॉर्डिनेटर के अनुसार कुल 30 प्रतियोगियों में से एक मात्र बीकानेर जिले से श्री अतुलदान का राष्ट्रीय स्तर पर चयन हुआ।

आडसर विद्यालय में भामाशाह द्वारा स्वेटर वितरण कार्यक्रम

बीकोनर- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आडसर (लूणकरणसर) बीकानेर में विद्यालय स्टाफ व लूनकरणसर के भामाशाह श्री सुरेन्द्र कुमार खाती के सहयोग से प्राप्त 80 स्वेटरों का वितरण शाला के विद्यार्थियों को समारोह अन्तर्गत शाला प्रांगण में किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री रामजीलाल घोड़ेला ने सहयोगी स्टाफ व भामाशाह का धन्यवाद ज्ञापित कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में व्याख्याता श्रीमती किरण बाला, सर्वश्री

नंदलाल प्रजापत, शिवकुमार, अजय पारीक, रामलाल नाथ, गणेशाराम ने विचार व्यक्त किए। एस.एम.सी. अध्यक्ष मेघनाथ सिद्ध भी कार्यक्रम के साक्षी रहे।

राजकीय बांठिया विद्यालय में स्वेटर वितरण कार्यक्रम

बीकानेर– हमीरमल बांठिया रा.बा.उ.मा.वि. गंगाशहर, बीकानेर की कक्षा 6 से 10वीं तक की 150 छात्राओं को महावीर इन्टरनेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से स्वेटर वितरण शाला प्रांगण में समारोहपूर्वक किया गया। संस्थाप्रधान श्रीमती शशि वर्मा ने बताया कि इसमें सर्वश्री सुमतिलाल बांठिया, नरेन्द्र कुमार सुराला, संतोष कुमार, विजय चन्द, शिखा, इन्द्रचन्द सेठिया आदि उपस्थित थे। विद्यालय में विज्ञान प्रयोगशाला के लिए सर्वश्री जयचन्द लाल डागा, नरेन्द्र कुमार सुराणा, विजयचन्द बांठिया ने आर्थिक सहयोग की घोषणा की।

राजकीय आ.उ.मा.वि. सांखू फोर्ट को मिला ब्लाक रिसोर्स स्कूल का दर्जा

चूरू– सादुलपुर (राजगढ़) तहसील के गाँव सांखू फोर्ट की राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्राथमिक कक्षाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु विद्यालय को (बी.आर.एस.) ब्लॉक रिसोर्स स्कूल घोषित किया गया है। प्रधानाचार्य श्री सुमेर सिंह सांगवान ने बताया कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, चूरू द्वारा जारी प्रशस्ति प्रमाण-पत्र शाला की प्राथमिक कक्षाओं का शिक्षण एस.आई.क्यू.ई. के मापदण्डानुसार तरीके से सभी सुविधाओं से युक्त गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास हेतु करवाए जा रहे प्रभावी शिक्षण हेतु प्राप्त हुआ। विद्यालय के संस्थाप्रधान ने सभी साथी अध्यापकों एवं एस.एम.सी. सदस्यों को अवगत कराते हुए सभी का आभार जताते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। शाला परिवार ने इस पर खुशी प्रकट की।

राजकीय उ.मा.वि. इंगानप., बीकानेर को भेंट की अलमारी व वूलन स्वेटर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय इन्दिरा गांधी नहर परियोजना बीकानेर में बोर्ड के पेपर सुरक्षित रखने हेतु एक गोदरेज की अलमारी भी भेंट की गई तथा शाला गणवेश के 200 (दौ सौ) विद्यार्थियों को ऊनी स्वेटर महावीर इन्टरनेशनल द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थाप्रधान श्री दीपक खत्री द्वारा भामाशाहों का सम्मान किया गया।

प्रताप बस्ती स्कूल में बाँटे महावीर इन्टरनेशनल ने स्वेटर

बीकानेर– राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय प्रताप बस्ती, बीकानेर में महावीर इन्टरनेशनल, बीकानेर नगर केन्द्र की शाखा द्वारा कक्षा एक से आठ तक के कुल 110 छात्र-छात्राओं को शाला पोषाक के वूलन स्वेटर वितरण श्री बनवारी लाल खण्डेलवाल एवं श्री सूरजमल राठी के सौजन्य से किया गया। मुख्य अतिथि श्री जसवंत खत्री, एस.ई. सार्वजनिक निर्माण विभाग बीकानेर ने इस अवसर पर भगवान महावीर द्वारा दी गई शिक्षा-सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य एवं ब्रह्मचर्य को अपने जीवन में उतारने के लिए बच्चों को प्रेरित किया। राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर के प्रभागाध्यक्ष डॉ. एस.सी.मेहता ने कहा कि आर्थिक रूप से पिछड़े हुए बच्चों को शिक्षा में सहयोग का यह अनोखा कार्यक्रम हैं। समारोह की अध्यक्षता केन्द्र अध्यक्ष श्री पूरण चन्द राखेचा ने की। पूर्व अध्यक्ष एडवोकेट श्री महेन्द्र जैन ने संस्था के बारे में जानकारी दी। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री इन्दर चन्द सेठिया ने समिति के बारे में बताया। कार्यक्रम के अन्त में भामाशाह श्री बनवारी लाल खण्डेलवाल एवं श्री सूरज मल राठी को शाला व संस्था द्वारा संयुक्त रूप से भामाशाह सम्मान से सम्मानित किया गया।

विद्यालय में सूर्य नमस्कार प्रतियोगिता आयोजित

बीकानेर–राजकीय उत्कृष्ट बालिका उ.प्रा.वि. श्री डूंगरगढ़ में सूर्या फाउण्डेशन द्वारा आदर्श गाँव योजनान्तर्गत सूर्य नमस्कार प्रतियोगिता का आयोजन 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' के भाजपा जिला संयोजक श्री सूनील तावनियां, श्री श्रीकांत शर्मा, श्री प्रशांत चक्रवर्ती सहित गाँव के सम्मानित ग्रामीणों की साक्षी में किया गया। सूर्या फाउण्डेशन के श्री मांगीलाल नाई ने बताया कि सूर्य नमस्कार प्रतियोगिता में कुल 125 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। जिसमें श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 13 विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र व मैडल देकर सम्मानित किया गया।

राजकीय बा.मा.वि. सुथारों का बास नोखा में बांटे कोटनुमा स्वेटर

बीकानेर–राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय सुथारों का बास, नोखा बीकानेर में अध्ययन करने वाली जरूरतमंद बालिकाओं को नोखा के भामाशाह ने 71 (इकहत्तर) कोटनुमा स्वेटर उपलब्ध करवाकर अनुकरणीय कार्य किया। उन्होंने कहा कि न मेरा नाम लेना है न मैं स्वयं वितरण के लिए आऊँगा। ऐसे गुप्त दानी वीर, सेवाभावी का विद्यालय परिवार कोटि-कोटि धन्यवाद ज्ञापित करता है। उक्त स्वेटर कक्षा 6 से 8 तक की बालिकाओं को 13.01.2018 को शिक्षा अधिकारी श्री ओमप्रकाश पूनिया, श्री राजेन्द्र सिंह परिहार, श्रीमती गीता विश्नोई, श्री प्रेम दान चारण व श्री नारायण जोशी, शिक्षक नेता श्री ओम प्रकाश विश्नोई की उपस्थिति में वितरित की गई। ऐसे भामाशाहों की अपेक्षाएँ हमेशा शाला परिवार को रहेगी...

राजकीय आ.उ.मा. विद्यालय बडेरण (लूणकरणसर) को भामाशाह ने सौंपी भूखण्ड की गिफ्ट डीड

बीकानेर–बडेरण के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण विस्तार के लिए रतनीसर (लूणकरणसर) निवासी श्री ठाकर राम गोदारा ने विद्यालय से सटे 5000 वर्गगज का अपना भूखण्ड दान दिया। 15 जनवरी को भामाशाह श्री ठाकरराम गोदारा व उनके पुत्र शिक्षक श्री बलवीर गोदारा ने महाजन (लूणकरणसर) उप तहसील कार्यालय में नायब तहसीलदार श्री जगदीप मित्तल, पूर्व सरपंच श्री सेवाराम बेनीवाल व एस.एम.सी. अध्यक्ष श्री मदनलाल नाई की उपस्थिति में शाला प्रधानाचार्य श्री ओंकारनाथ योगी को विद्यालय के नाम भूखण्ड की गिफ्ट डीड सौंपी। सभी उपस्थित जनों ने भामाशाह श्री ठाकरराम गोदारा व उनके शिक्षक पुत्र श्री बलवीर गोदारा का इस पुनीत कार्य हेतु आभार प्रकट किया।

संकलनः प्रकाशन सहायक

शाला प्रांगण विशेष

विशिष्ट भामाशाह

धणा गाँव (पाली) के भामाशाह ने 4 करोड़ की लागत से बनाया राजकीय विद्यालय का भवन

❐ टीकम मीना

राजस्थान के पाली जिले में गोडवाड़ अंचल में स्थित एक छोटा सा गाँव धणा, जो अति साधारण गाँव है लेकिन नववर्ष के पहले दिन अचानक ही यह सुर्खियों में आ गया। जिसका कारण था उस गाँव के भामाशाह और उनका अपने गाँव के प्रति असीम लगााव।

साधारण से गाँव के एक साधारण परिवार में जन्मे बालक, जिसकी प्रारम्भिक शिक्षा कभी इसी गाँव के सरकारी विद्यालय में पूर्ण हुई थी, जिनका विद्यार्थी जीवन बहुत ही संघर्ष और अभावों में बीता था। अपने माता-पिता और गुरुजनों से प्राप्त आशीष और संस्कारों से पोषित होते हुए उस बालक ने जीवन पथ पर कठोर परिश्रम और संघर्ष का रास्ता अपनाया। अल्पायु में ही अपने पैतृक गाँव को छोड़कर दूर परदेश में अपना व्यापार प्रारम्भ किया। कड़ी मेहनत और परिश्रम के बल पर कुछ ही समय में पुणे शहर (महाराष्ट्र) के बड़े और धनाढ्य व्यापारी के रूप में अपनी पहचान स्थापित की।

यह जीवन संघर्ष था उस बालक का जिसे आज न केवल पुणे में अपितु संपूर्ण मारवाड़ गोडवाड़ अंचल में लोग आदर से सेठ भागचन्द सोनिगरा के नाम से जानते हैं। भागचन्द जी सोनिगरा के हृदय में अब भी अपने विद्यार्थी जीवन की टीस मौजूद थी। सेठ जी अपने गाँव के गरीब बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में कोई बाधा न आने देना चाहते थे। वे अपने गाँव के बालक बालिकाओं के लिए हमेशा कुछ करना चाहते थे।

इसी बीच गाँव के नव क्रमोन्नत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धणा (पाली) में मेरा प्रधानाचार्य पद पर पदस्थापन हुआ। मुझे अपने स्टाफ से सेठ जी की भावना के बारे में मालूम हुआ। मैंने उनसे मिलने का निर्णय किया और गाँव में उनके पैतृक निवास पर पहुँचा। संयोग से वे एक सामाजिक कार्यक्रम में गाँव आए हुए थे। पहली मुलाकात में ही मैं उनके सरल, मृदुल और विनम्र स्वभाव से प्रभावित हुआ। उन्होंने गाँव के गरीब निर्धन बालकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने की अपनी भावना व्यक्त की।

मैंने भी आदर्श विद्यालय से जुड़ी जरूरतों के बारे में उन्हें विस्तार से बताया। साथ ही आश्वस्त किया कि मैं और मेरा सम्पूर्ण स्टाफ शैक्षिक वातावरण को आदर्श बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। इसके बाद समय समय पर मैं विद्यालय की जरूरतों को लेकर मिलता रहा और वे दिल खोलकर हमारी हर जरूरत को पूरा करते रहे।

एक बार मैं जब उनसे मिला तो कहने लगे-''मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में जिन मुश्किलों का सामना किया है, मैं नहीं चाहता कि मेरे गाँव के ये बालक उन मुश्किलों का सामना करें।'' तभी मैंने कहा-''सेठ जी इनके जीवन में तो बहुत सारी मुश्किलें हैं।'' सेठजी ने तुरन्त कहा-''प्रधानाचार्य जी एक आदर्श शिक्षा के लिए बच्चों की जो-जो जरूरतें हैं आप मुझे बताइए .....मेरे धन के भण्डार शिक्षा के लिए हमेशा खुले हैं।''....मैं निशब्द था। लोकार्पण कार्यक्रम वाले दिन भी जब मंच से मुझ से पूछा गया कि- ''प्रधानाचार्य जी कुछ और भी माँगना है विद्यालय हेतु सेठ जी से'' तो मैंने कहा ''शायद मैं राजस्थान का एक मात्र ऐसा संस्थाप्रधान हूँ जिसके पास माँगने को कुछ नहीं रहा। धन्य हैं ऐसे गुरुवर, जिनके अध्ययन व आशीष से ऐसे सद्विचार आपके मन बुद्धि में उत्पन्न हुए। धन्य हैं ऐसे माता-पिता, जिन्होंने ऐसे पुण्य संस्कार आपको दिए। धन्य हैं ऐसी धरा, जिस पर आपका जन्म हुआ।''

1 जनवरी, 2018 को समस्त धणा ग्रामवासियों, शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं शिक्षा अधिकारियों की मौजूदगी में आचार्य श्री एवं पाली सांसद व केन्द्रीय मंत्री श्री पी.पी. चौधरी के कर कमलों द्वारा नवीन विद्यालय भवन का लोकार्पण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में उपनिदेशक (मा.) पाली श्री सीसराम, उपखण्ड अधिकारी श्री विनोद मल्होत्रा, अति.जि.शि.अ. श्री के.के. राजपुरोहित व श्री मुकेश मीना उपस्थित थे।

नवनिर्मित विद्यालय भवन की कुल लागत लगभग 4 करोड़ रुपये है। यह उन सभी भौतिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण है, जो एक उत्कृष्ट विद्यालय में आवश्यक है।

प्रमुख विशेषताएँ:-

- विद्यालय में सुसज्जित प्रधानाचार्य कक्ष, कार्यालय कक्ष, स्टाफ कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, कम्प्यूटर कक्ष, विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष एवं 12 कक्षा-कक्षों को मिलाकर कुल 18 कक्ष बनाए गए हैं।
- प्रत्येक कक्षा-कक्ष में चार पंखे, दो ट्यूबलाईट, एक ग्रीनबोर्ड और एक अलमारी की सुविधा दी गई है।
- भवन के दोनों ओर स्टाफ के लिए बेहतरीन अत्याधुनिक शौचालय की सुविधा उपलब्ध करवायी गई है।
- विद्यालय परिसर में ही छात्र-छात्राओं के

लिए अलग-अलग शौचालय (7+7) की सुविधा उपलब्ध करवायी गई है।

- विद्यालय भवन के मध्य में एक भव्य सभागार मय ग्रीन रूम (60×120 फीट) की सुविधा उपलब्ध करवायी गई है।
- लगभग 700 मी. लम्बी एवं 5 फिट ऊँची चारदीवारी एवं भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण भी भामाशाह द्वारा कराया गया है।
- प्रवेश द्वार से भवन तक डामर रोड तथा मध्य में उपजाऊ मिट्टी डलवा कर बगीचा तैयार करवाया जा रहा है।
- विद्यालय परिसर में ही एक बोरिंग कुएं की सुविधा उपलब्ध करवायी गई है।
- मिड-डे-मील के लिए अलग से रसोई घर एवं बच्चों के बैठकर खाने हेतु अलग से एक हॉल का निर्माण भी भामाशाह द्वारा कराया गया है।
- प्रत्येक कक्षा-कक्ष के लिये 50-50 टेबल कुर्सी सेट भी भामाशाह द्वारा उपलब्ध करवाए गए हैं।
- विद्यालय में कम्प्यूटर प्रयोगशाला के लिए 10 कम्प्यूटर भी भामाशाह द्वारा उपलब्ध करवाए गए हैं।
- विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ के लिए शीतल जल हेतु वाटर कूलर की सुविधा भी उपलब्ध करवायी गई है।
- विद्यालय परिसर में कुल 32 सीसीटीवी. कैमरे भवन सुरक्षा के लिये लगाए गए हैं।
- विद्यालय के सभी 302 अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं विद्यालय स्टाफ के लिए एक जोड़ी गणवेश और जूते भी भामाशाह द्वारा उपलब्ध करवाए गए हैं।

जीवन की सफलता और सार्थकता, दो अलग अलग पहलु हैं।

सफलता प्रत्येक मनुष्य के जीवन का लक्ष्य तो होती है किन्तु जीवन का अन्तिम उद्देश्य भी तो है। सेठ भागचन्द सोनिगरा जी व उनके परिवार ने अपने जीवन में सफलता के साथ-साथ सार्थकता को भी प्राप्त कर दिखाया है। उन्होंने अपने इस पुनीत कार्य से उन गरीब माता-पिता की आँखों में चमक ला दी है जो धन के अभाव में अपने बच्चों को सुविधायुक्त विद्यालयों में पढ़ा नहीं पा रहे थे। इनके नन्हे-मुन्ने बच्चों के चेहरों पर खिलउठी मुस्कान साक्षात् ईश्वर की प्रसन्नता को दर्शाती है। इस लोककल्याणी पुण्यदान के लिये सेठजी को संस्थाप्रधान होने के नाते कोटि-कोटि आभार और शिक्षक होने के नाते शत्-शत् नमन। ईश्वर से प्रार्थना है इनके सुख और वैभव को बनाए रखे। स्वस्थ, सफल और दीर्घायु जीवन की मंगल कामना के साथ।

प्रधानाचार्य,
सोनिगरा राज.आ.उ.मा.वि.
धणा, पं.स. सुमेरपुर, पाली
मो:8764175737

(पृष्ठ 44 का शेषांश)

रहा है। कठोर अनुभव और सच्चाइयों से लबरेज इस संग्रह की कविताओं में सीधी-सपाट बयानी कोई संगीत नहीं रचती किन्तु इनकी सहजता एक गुण बनकर उभरती है।

नवनीत पांडे अपने समय के महत्त्वपूर्ण कवि हैं इनकी कविताओं में निहित प्रश्नाकुलता और व्यंग्य जैसी खूबियां हैं जो सीधे अपनी बात को रखती हैं। प्रश्न यह है कि क्या इन खूबियों के होते हुए भी इन कविताओं को पढ़कर पाठक चिन्तन की खाई में गोता लगा सकेगा? ये अनुत्तरित सा रह जाता है। मानवीय सरोकारों के चितेरे के रूप में पहिचाने जाने वाले कवि नवनीत पांडे अपने वैचारिक आधारों से नग्न यथार्थ को सामने लाते हैं। उनके प्रिय कवि मुक्तिबोध ने 'काव्यः एक सांस्कृतिक प्रक्रिया' नामक निबन्ध में लिखा कि ''कवि हृदय आज के जगत के मूल द्वंद्वों का अध्ययन करें अर्थात् अपनी सम्पूर्ण चेतना द्वारा आज की वास्तविकता की तह में घुसें और ऐसी विश्वदृष्टि का विकास करें, जिससे व्यापक जीवन जगत की व्याख्या हो सके।'' इस प्रकार कविता में यथार्थ को किस रूप में प्रकट किया जाए कि वह उसका संवेदनात्मक आवेग और कलात्मक अभिव्यक्ति को बरकरार रख सके। कविता के माध्यम से कवि अपने अनुभवों द्वारा जीवन उद्देश्यों को काव्य रूप देकर संप्रेषणीय आधार प्रदान करता है और यह संप्रेषण काव्यगत सृजनात्मक काव्य शक्ति और भाषायी शक्ति द्वारा उसे कलात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। ऐसे में इनके पर्याप्त मिश्रण के बगैर कविता भाषणबाजी या नारेबाजी लगने लगे तो जोखिम हो सकता है। इस संग्रह की कुछ कविताओं में इस प्रकार की लाउडनेस देखी जा सकती है। खैर जो भी हो इस संग्रह की आकर्षक कवर व सुन्दर छपाई बरबस आकर्षित करती है। अन्त में निष्कर्ष रूप में यह कहना गलत नहीं होगा कि आम आदमी के आख्यान को रचता ये काव्य संग्रह स्वागतयोग्य है।

समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**
राधास्वामी सत्संग भवन के सामने,
गली नं.-2, अम्बेडकर कॉलोनी,
पुरानी शिवबाड़ी रोड, बीकानेर
मो. 9414031050

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

भारतीय मूल का अर्णव आइंस्टीन से अधिक बुद्धिमान है

कौन व्यक्ति कितना बुद्धिमान है यह जानने के लिये उस व्यक्ति का आई.क्यू (इंटेलिजेंस कोशेंट) मापा जाता है। लिखित-मौखिक परीक्षणों के माध्यम से आई.क्यू.या बुद्धि-सूचकांक ज्ञात होता है। बुद्धिमान व्यक्ति का बुद्धि सूचकांक 125 के आस-पास होता है। अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति का यह सूचकांक 140 होता है। महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन का 160 पाया गया था। वर्तमान के एक आश्चर्य स्टीफन हाकिंग्स का बूद्धि सूचकांक भी इतना ही है। हाल ही में इंग्लैण्ड में रह रहे ग्यारह साल के अर्णव शर्मा का बूद्धि सूचकांक 162 मापा गया है। इंग्लैण्ड के समाचार पत्र 'द इंडिपेण्डेण्ट' (30 जून) के अनुसार अर्णव ने बुद्धि सूचकांक परीक्षण के कठिन प्रश्नों को चुटकियों में हल कर दिया था। यदि ऐसे परीक्षण प्राचीन काल में हुए होते तो आद्य शंकराचार्य, पाणिनि जैसे महानायकों का बुद्धि सूचकांक निश्चित ही दो सौ से अधिक आया होता। साभार : पाथेयकण 1अगस्त, 2017

वैज्ञानिकों ने माना कि मिट्टी में खेलना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है

एक अमरीकी शोधकर्त्ता वैज्ञानिक जैक गिलबर्ट ने कहा है कि मिट्टी में खेलने से बालकों का स्वास्थ्य ठीक रहता है। माइक्रोबायलोजी के विद्वान गिलबर्ट का मानना है कि मिट्टी के शरीर पर लगने से रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा शारीरिक विकास अच्छा होता है। भारत की प्राचीन परम्पराएँ धीरे-धीरे वैज्ञानिकों को समझ में आने लगी हैं। हमारे देश में तो मिट्टी को स्वास्थ्य-रक्षक प्राचीन काल से ही माना गया है। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में केवल मिट्टी से ही कई रोगों का इलाज किया जाता है। हमारे सबसे लोकप्रिय खेल कबड्डी और कुश्ती हैं। दोनों ही मिट्टी में खेले जाते हैं और खेलते समय पूरा शरीर मिट्टी से सन जाता है। कुश्ती के लिए अखाड़े में जिस मिट्टी का उपयोग होता है वह तो विशेष विधि से तैयार की जाती है। वह मिट्टी मनुष्य शरीर के लिये अमृत के समान होती है। हमारे सभी परम्परागत खेल मातृभूमि की पवित्र माटी में ही होते हैं इसीलिये मातृभूमि की धूलि लोग अपने मस्तक पर लगाते हैं। वैज्ञानिकों को इस 'धूलि' का महत्त्व अब समझ में आया है। यह दुखद है, कि पश्चिम के प्रभाव में अब कुश्ती और कबड्डी भी कृत्रिम गद्दों पर होने लगी है। साभार : पाथेयकण 1 अगस्त, 2017

गंगाशहर की देशना मिन्नी बनी विश्व चैम्पियन

बीकानेर। गंगाशहर निवासी 12 वर्षीय लड़की देशना मिन्नी ने मलेशिया में हुए 22वें अन्तरराष्ट्रीय मैंटल अबेक्स मुकाबले में विश्व चैम्पियन बनने का खिताब प्राप्त करके देश का नाम रोशन किया है। इस मुकाबले में 75 देशों के 6000 से अधिक बच्चों ने भाग लिया था जिसमें गणित के मुश्किल सवालों को जल्दी हल करके अपना हुनर दिखाते हुए देशना ने विश्व चैम्पियन होने का खिताब जीता है। देशना अभी होशियारपुर में ब्रेन ऐज्यूकेशन स्कूल में विद्यार्जन कर रही है। इस उपलब्धि पर संस्कृत ब्रेन ऐज्युकेशन स्कूल की प्रिंसिपल सुमन नैयर ने बताया कि देशना 12 वर्ष की है तथा छठवीं कक्षा में पढ़ने वाली है। पिछले वर्ष उसके पास अबेक्स सीखने के लिए आई थी। उन्होंने बताया कि इस मुकाबले में पंजाब के 12 तथा होशियारपुर जिले के 3 बच्चों ने भाग लिया था जिसमें देशना ने पहला तथा और बच्चों ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि इस उपलब्धि का श्रेय टीचिंग स्टाफ की मेहनत, माता नीतू, पिता रमेश मिन्नी द्वारा दी प्रेरणा को जाता है। देशना के माता-पिता ने बताया कि उनकी बच्ची पर उनको गर्व है। उसके नाना पानमल छाजेड़ व तेरापंथ सभा गंगाशहर के कोषाध्यक्ष भैरूदान सेठिया ने इसे गंगाशहर का गौरव बतलाया है। साभार : कामयाब कलम 19 दिसम्बर, 2017

प्रकृति का संगीत थकान और तनाव दूर करे

प्रकृति का संगीत भागदौड़ से उपजे तनाव और थकान को दूर करने में कारगर हो सकता है। एक नए अध्ययन से पता चला है कि नदी के बहते जल की कलकल, पेड़ के पत्तों की सरसराहट या चिड़ियों की चहचह जैसी कोमल कुदरती आवाजें हमारे मस्तिष्क और शारीरिक प्रणालियों को भौतिक रूप से बदलकर हमें शाँति और आराम प्रदान करने में सहायक होती हैं।

डिफाल्ट मोड नेटवर्क: शोधकर्त्ताओं ने पाया कि वातावरण में मौजूद आवाजों के अनुसार मस्तिष्क के डिफाल्ट मोड नेटवर्क (डीएमएन.) की गतिविधि अलग-अलग होती है। कुदरती आवाजों के अनुसार डीएमएन. की गतिविधि का रूप बदल जाता है। डीएमएन. का मतलब मस्तिष्क के उन हिस्सों के सम्मिलित रूप से है जो आराम करने के समय सक्रिय रहते हैं।

स्थिति के अनुरूप प्रभाव: शोधकर्त्ताओं ने यह भी पाया कि प्रतिभागियों ने जब कृत्रिम आवाजों के मुकाबले कुदरती आवाजें अधिक सुनीं तब उनके मस्तिष्क में शरीर को आराम देने से जुड़ी तंत्रिका प्रणाली की गतिविधियों में बढ़ोतरी हुई। इससे प्रतिभागियों में तनाव, थकान या अवसाद जैसी स्थितियों के लक्षण उभरते नहीं दिखे। लोगों की तंत्रिका प्रणाली पर कुदरती आवाजों का संभावित सकारात्मक असर की तीव्रता इससे तय होती है कि उनमें थकान, तनाव या अवसाद किस चरण में है। जो प्रतिभागी प्रयोग शुरू होने से पहले काफी अधिक तनाव में थे, उन्होंने कुदरती आवाजें सुनने के बाद आराम महसूस किया। जबकि जिनमें तनाव या थकान काफी कम था, या जो पहले से सामान्य अवस्था में थे, कुदरती आवाजें सुनने के बाद उनकी स्थिति में कुछ खास बदलाव नहीं दिखा। साभार : हिन्दूस्तान 3 अप्रेल, 2017

सूर्य भी जुड़वा तारे के रूप में अस्तित्व में आया था

करीब साढ़े चार अरब वर्ष पूर्व हमारा सूर्य अकेले अस्तित्व में नहीं आया था बल्कि उसका जन्म जुड़वा तारे के रूप में हुआ था। कुछ वैज्ञानिकों ने यह दावा किया है, जिनके मुताबिक, ब्रह्मांड में जन्म लेने वाला हर तारा एक-दूसरे तारे के साथ अस्तित्व में आता है। हमारे सबसे निकटतम पड़ोसी तारे 'अल्फा संटौरी' समेत कई तारे साथी तारों के साथ अस्तित्व में आए हैं। खगोलविद लंबे समय से इस सवाल का जवाब ढूंढ रहे हैं। खगोलविद लंबे समय से हमारे सूर्य के साथी तारे 'नेमेसिस' की तलाश करते रहे हैं लेकिन ऐसा करने में वे विफल रहे हैं। अमेरिका के 'यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया बर्कले' ने एक विशाल आणविक बादल का रेडियो सर्वेक्षण किया। यह बादल पर्सियल तारामंडल में हाल में बने तारों से भरा हुआ है।

साभार : राष्ट्रीय सहारा 22 जून, 2017

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

बूंदी

रा.उ.मा.वि. इन्द्रगढ़ को श्री सीताराम मीणा से पाँच दीवार घड़ी लागत 700 रुपये, सुश्री सितारा खानम् से एक छत पंखा विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.उ.मा.वि. भीया** को ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष श्री भैरूलाल मीणा द्वारा 30 मेज व 30 स्टूल लागत 30,000 रुपये की राशि का फर्नीचर स्थानीय विद्यालय को बनाकर सप्रेम भेंट, श्रीमती सुमन शर्मा(अध्यापिका) से 5,000 रुपये नकद, श्रीमती कृष्णा इन्दोरिया (अध्यापिका) से 2,100 रुपये नकद, श्री महावीर मीणा से 1,000 रुपये नकद प्राप्त। **रा.आ.उ.मा. वि. चितावा तह. केशवरायपाटन** में श्री बाबू लाल मीना बोहरा द्वारा माँ सरस्वती एवं गणेश मन्दिर के निर्माण हेतु 7,500 रुपये नकद, विद्यालय स्टाफ सदस्यों द्वारा बालक-बालिकाओं को मिठाई हेतु 3,000 रुपये नकद, तथा 8,000 रुपये की लागत से 12 कुर्सियाँ (गद्दीदार) विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री जसवन्त सिंह से 7,500 रुपये नकद, सर्व श्री रामगोपाल मीणा, बाबू लाल मीणा, कलविन्दर सिंह, नाथुलाल मीणा, मदनलाल मीणा, रामकरण मीणा, बंशीलाल मीणा प्रत्येक से 1,100-1,100 रुपये की राशि से विद्यालय का रंग-रोगन करवाया गया।

भरतपुर

रा.आ.उ.मा.वि. खानुआँ को सर्व श्री भूपसिंह कुशवाह (व्याख्याता), सोहन सिंह कुशवाह (पूर्व सरपंच), अजीज खाँ, प्रत्येक से 2-2 पंखा तथा प्रत्येक की लागत 3,000 रुपये, सर्व श्री शेर सिंह कुशवाह, देवी सिंह कुशवाह (से.नि.अध्यापक), डॉ. अली खाँ, मोहन सिंह कुशवाह, गोपाल सिंह कुशवाह, अनवर खाँन, विजय राम, कमरूद्दीन खाँन, मनोहरी लाल, अहमद हुसैन प्रत्येक से एक-एक पंखा तथा प्रत्येक की लागत 1,500 रुपये, सर्व श्री सोहन लाल गर्ग, अपसाना (सरपंच) प्रत्येक से दो-दो ग्रीन बोर्ड तथा प्रत्येक की लागत 4,000 रुपये, श्री नितिन गर्ग से ग्रीन बोर्ड एक, एक फर्श लागत 3,100 रुपये, श्री राम खिलाड़ी जाटव से दो फर्श लागत 1,500 रुपये श्री ओम प्रकाश, श्री सीताराम से एक-एक ग्रीन बोर्ड तथा प्रत्येक की लागत 2,000 रुपये, श्री विजय सिंह से दो फर्श लागत 2,000 रुपये, श्री मुकेश, श्री ऋषि कुमार से 3 फर्श लागत 3,000 रुपये, सर्व श्री भगवान सिंह, बतूला से एक फर्श तथा लागत 1,500 रुपये, श्री विनोद कुमार गर्ग, श्री कमलेश कुमार से 6 बैंच व 3 बड़ी मेजें लागत 30,000 रुपये, सर्व श्री उदयभान, दरब सिंह, टोडर सिंह, विजय सिंह, प्रेम सिंह, बेदरिया, अलीखान प्रत्येक से एक-एक फर्श तथा प्रत्येक की लागत 1,100 रुपये, सर्व श्री देवी सिंह, कैलाशी शर्मा, प्यारेसिंह, प्रत्येक से एक-एक फर्श तथा प्रत्येक की लागत 1,000 रुपये, श्री मुकेश सिंह व बुद्धी खाँ से एक फर्श लागत 1,000 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि. शक्करपुर (रूपवास)** में जनसहयोग से विद्यालय गेट का निर्माण, छात्र शौचालय की मरम्मत हेतु निम्न प्रकार से सहयोग प्राप्त हुआ सर्व श्री उदयवीर सिंह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-वरिष्ठ संपादक**

हमारे भामाशाह

राजावत, ओम प्रकाश प्रजापत, विशम्भर सिंह, मूली सिंह राजावत, भरतसिंह, प्रेम सिंह राजावत, छितरिया लाल, बाबूलाल, रामावतार, गिर्राज सिंह, मानसिंह राजपूत, प्रत्येक से 1,100-1,100 रुपये नकद प्राप्त हुए। श्री केदार प्रसाद शर्मा से नकद 16,000 रुपये, श्री मुकेश चन्द्र शर्मा से 5,100 रुपये, सर्व श्री चन्दन सिंह, मान सिंह शर्मा, पप्पू सिंह, शिव सिंह राजावत, प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये नकद प्राप्त हुए, श्री विभीषण से विद्यालय विकास हेतु 2,000 रुपये नकद, सर्व श्री चन्दन सिंह (व.अ.) केदार प्रसाद शर्मा प्रत्येक से 2,100 रुपये नकद विद्यालय विकास हेतू प्राप्त हुए, सर्व श्री उदय वीर, डॉ. मान सिंह, पप्पू सिंह परमार, रामबाबू, मुकेश चन्द शर्मा से विद्यालय विकास हेतु प्रत्येक से 1,100 1,100 रुपये प्राप्त हुए। **रा.आ.उ.मा.वि. बारौली(वैर)** को श्री सुरेश चन्द जैन से एक वाटर कूलर सप्रेम भेंट जिसकी लागत 30,000 रुपये तथा गरीब बच्चों को गर्म जर्सियाँ वितरित की जिसकी लागत 10,000 रुपये। **रा.आ.उ. मा.वि. खैमरा कलाँ (सेवर)** को श्री सत्येन्द्र कमान्डो (राजस्थान पुलिस) से डेल कम्पनी का डेस्क टॉप कम्प्यूटर विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 31,000 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि. खेस्ती (नगर)** को माता वैष्णो देवी ट्रस्ट अलवर द्वारा कक्षा एक से आठ तक छात्र-छात्राओं को 275 जर्सियों का वितरण, जिसकी लागत 55,000 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि. ढाना (रूपवास)** को श्री बच्चू सिंह (शा.शिक्षक) से दो अलमारी लागत 10,500 रुपये, श्री लक्ष्मण सिंह (अध्यापक) से एक पंखा (ओरिएन्ट) लागत 1,400 रुपये। **रा.उ.मा.वि. भटावली** को समस्त ग्राम वासियो के सहयोग से 72 स्टूल एवं 72 टेबल विद्यालय को दान स्वरूप भेंट जिसकी लागत 50,000 रुपये। **रा.बा.उ.मा.वि. सीकरी** को श्री मनोहर लाल अरोड़ा पटपडगंज दिल्ली वालो से 20 स्टील मेज व 20 स्टूल, 15 जोड़ी ड्रेस प्राप्त तथा श्री रिंकू शर्मा से 03 पंखे, श्री डिम्पल गक्खड़ से 02 पंखे प्राप्त हुए।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि. उलेला तहसील जहाजपुर में श्रीमती सोहन देवी धर्मपत्नी स्व.श्री कन्हैयालाल गर्ग एवं श्री भैरू शंकर गर्ग सुपुत्र श्री कन्हैयालाल गर्ग (आर.ए.एस., सदस्य राजस्व मण्डल राज. अजमेर) द्वारा 4,50,000 रुपये की लागत से कक्षा-कक्ष (26.2×20 फीट) बरामदा (26.6 फीट × 8.6 फीट) का निर्माण करवाया गया। **रा.आ.उ.मा.वि. रूपाहेली कलां (तह. हुरड़ा)** में श्री रामपाल सोनी द्वारा 2,00,000 रुपये की लागत से प्रार्थना सभा परिसर पर टीन शेड का निर्माण करवाया, गया श्री अशोक द्वारा 51,000 रुपये की लागत से पेयजल टंकी का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि. बड़ा महुआ** को श्री विमल कुमार डांगी से एक वाटर कूलर विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 27,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. लूलांस (तह. शाहपुरा)** में ग्रामवासियों द्वारा 4,50,000 रुपये लागत से कक्षा-कक्ष का निर्माण करवाया गया। **रा.बा.मा.वि., बोरखेड़ा, पं.स. हुरड़ा** को श्री गजमल जाट से एक लेपटाप विद्यालय को सप्रेम भेंट।

राजसमन्द

रा.आ.उ.मा.वि, वरदड़ा पं.स. कुम्भलगढ़ को श्री चमना राम से 8 कुर्सी लागत 13,500 रुपये, श्री रतन सिंह से 50 स्टूल व 50 टेबिल लागत 60,000 रुपये, श्री तुलसी राम गमेती से 25 स्टूल 25 टेबिल, श्री नानसिंह से 25 स्टूल व 25 टेबिल लागत 30,000 रुपये, श्री बब्बर सिंह से 25 स्टूल व 25 टेबिल लागत 30,000 रुपये।

शेष अगले अंक में.....

संकलन- प्रकाशन सहायक

शिविरा पत्रिका (मासिक) : फरवरी 2018 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : जयपाल सिंह राठी, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

राज्यस्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह 2017

शिक्षा निदेशालय स्थापना दिवस 16 दिसम्बर

तिलकार्चन

दीप प्रज्वलन

गणमान्य अतिथि, सम्मानित कर्मचारी एवं परिजन

गरिमामयमंच, लोकार्पण

उद्‌बोधन

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) • फरवरी, 2018 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2018 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

राज्यस्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह 2017 में सम्मानित कर्मचारी

स्थान : वेटरनरी ऑडिटोरियम हॉल, राजूवास, बीकानेर **दिनांक : 16 दिसम्बर, 2017** **समय : प्रातः 11.00 बजे**